बाल गोपाल

बाल गोपाल

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BAL GOPAL
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-09-4
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2014)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा- सगर राति दीप जरय'क
बाल साहित्य केन्द्रित गोष्ठी-
मेंहथ (झंझारपुर) केँ
समरपित

अनुक्रम

रिजल्ट

पहिल जनवरीकेँ रबि दिन रहने दोसर दिन स्कूलो खुजत आ बड़ा दिनक छुट्टीसँ पहिने भेल परीक्षाक रिजल्टो निकलत। ओना, शिक्षक अभिभावक आ विद्यार्थीक बीच नव बर्खक उपहारक समय रहने खुशीक वातावरण पसरले अछि। केना नै पसरौ! दुर्गापूजा अबैसँ पहिने जे खुशी मनमे उमकैत ओ तँ सप्तमी पूजा धरि रहबे करैत। ठाँउ करब, फूल-पातसँ पूजा करब, काँच माटिक दियारीसँ साँझ देब, स्तुति करब इत्यादि.., मुदा डिम्हा पड़ला पछाइत जे उत्सवक मेला शुरू होइए तेकर पछाइते ने खगल-भरल हाथक वोध होइए।

गामेक हाइ स्कूलक नअम कक्षामे गोबर गणेश सेहो पढ़ैत। ओकरो रिजल्ट निकलत। जहिना आन-आन विद्यार्थीकेँ खुशी तहिना ओकरो। एक तँ परीक्षा देला पछाइत बड़ा दिनक छुट्टीक उछाही तैपर आगू बढ़ैक अवसरो, किए ने रहतै। ओना, छुट्टीक उछाही सभ छुट्टीमे होइ छै मुदा से बड़ा दिनक छुट्टीमे नहियेँ रहै, मुदा किछुओ तँ जरूर रहइ। सालमे केतेको छुट्टी विद्यालयमे होइए, जइमे किछु स्थाइयो आ अस्थाइयो होइ छइ। ओना, बाबन-तिरपनटा रबि अपन अठबारे हिस्सा लइये लेने अछि, मुदा तँए कि आन-आनक कोनो सीमा-सरहद नै छइ? छइहे। किछु पाबैन-तिहारक नामे अछि, किछु मौसमक नामे अछि तँ किछु समैयक नामे। खाएर जे अछि, मुदा जहिना घटनकेँ बढ़न कहल जाइ छै तहिना छोट दिनकेँ पैघ दिन अर्थात् बड़ादिन कहि आराम करैक अवसरो देले जाइ छइ!

केतबो धड़फड़ केलक गोबर गणेश तैयो साढ़े दस बाजिये गेलइ।

एक तँ स्कूलो जेबामे किछु बिलम भइये गेलै, तैपर रिजल्टक खुशीक हकार ने बँटबे रहए, तँए विद्यालय जाइसँ पहिने हकार सेहो बँटैक छइहे...।

विदा होइसँ पहिने बाबा लग जा बाजल-

"बाबा, आइ रिजल्ट निकलत।"

पोताक खुशीक हकार पाबि श्यामचरणक मनमे सेहो खुशी उपकलैन मुदा बजला किछु ने। केना खुशनामाक असीरवाद पहिनहि देथिन, बरहबट्टु थोड़े छैथ जे दीक्षा पहिने आ शिक्षा पछाइत देथिन...।

गोबर गणेशोकेँ विद्यालयक फलक आशा तँए बाबाक असीरवादक प्रतिक्षा छोड़ि विदा भऽ गेल।

माथक सुरूज पच्छिम-भर लटकए लगला, अखन धरि गोबर गणेश किए ने आएल? पढ़ौनी दिन थोड़े छिऐ जे बेसी समय लगतै, रिजल्टक दिन छी। जे पास करत हँसैत घूमत आ जे फेल करत ओ अपनो कानत आ परिवारोकेँ कनौत। समटल मन बाबाक आरो समटा गेलैन। जेबेकाल पोता कहि गेल 'रिजल्ट निकलत।'

चौकीपर सँ उठि रस्तापर जा श्यामचरण विद्यालय दिस हिया कऽ तकलैन। जेते दूर नजैर गेलैन तैबीच केतौ पोताकेँ अबैत नै देखलैन। घुमि कऽ दरबज्जापर आबि विचारए लगला। केना फल पौल पोताक अगवानी छोड़ि अपने दोसर काजमे लागब। औझुके अगवानी ने वागवानी बनौत। अपना आँखिये पोताकेँ देखब आ अपना काने ओकर फलोकेँ सुनब छोड़ि कऽ जाएब नीक नहि। बैसते मनमे नीकक आशा नाचए लगलैन। जहिना गाम-घरक बीच नव-नव अविष्कार सुनि लोकक मन नचबो करैए आ गीतो गबैए जे आब की जनकजीक तीन-बितिया हरक काज हएत, बड़का-बड़का हरजोता सभ आबि रहल अछि। एके दिनमे साठि बर्खक जिनगीकेँ तीस बरख बना देत। दू दिन तँ सौंसे जिनगीक भेल...।

गोबर गणेशपर सँ नजैर हटिते बाबाक मनमे जेना शुभे-शुभक सपना उठए लगलैन। बिसैर गेला चारि सालसँ फेल होइत आएल गोबर

गणेशकेँ। मुदा बिसरैक पाछू काजक फलो होइ छइ। कियो काजक फल गनि फल बुझैए आ कियो फलेकेँ फल बुझैए। श्यामचरणक मनकेँ गोबर गणेशक काज अधला विचारक बाटपर ठाढ़ भऽ आगू अबै ने दन्हि, जइसँ बाबाक मनमे सौनक हरियरीए बुझि पड़ैन। ओना, पैछला सालक हरियरी बाढ़िमे तेना भऽ कऽ धुआएल जे लोक सौन-भादो बिसैर जुलाई-अगस्त बुझए लागल, सेहो मनमे रहबे करैन। मुदा लगले मन बिनबिनेलैन। बिनबिनाइते चौकीपर सँ उठि रस्तापर पहुँच स्कूलक बाट हिया कऽ हियेला...।

पोताकेँ केतौ नै देखि मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले उठलैन जे किछु दूर आगू बढ़ि देखिऐ, जँ कहीं संगी-साथी संग रिजल्टक खुशीमे वौड़ा गेल हुअए। मनो गवाही देलकैन। सएह भेल, भरिसक केतौ वौड़ा गेल अछि। जँ से नै रहितै तँ कोन बेटा-बेटी लाखो बेर सप्पत खा कऽ नै बाजल हएत जे माए-बापक सेवा हमर धर्मे नै कर्तव्यो छी। एकटा झूठ बजने लोक कोट-कचहरीक खूनी केससँ बँचि जाइए आ जैठाम हजारो-लाखोक बात छइ। मुदा बेसीकाल मन ऐठाम नै अँटकलैन। आगू बढ़िते मोन पड़लैन- जखन गोबरधन गिरिधारी गोबरधन पहाड़ उठा इन्द्रक धारकेँ रोकि देलक तखन हमर गोबर गणेश ने किए करत। मनमे उठिते जेना सौनक कजरारिक छटा छट-छटा गेलैन। डेगे-डेग किछु डेग जखन आगू बढ़ि नजैर उठौलैन तखन बुझि पड़लैन जे पोता आबि रहल अछि...।

गोबर गणेशपर नजैर पड़िते बाबा हाँइ-हाँइ पाछू घुमि, आपसी घर दिस विदा भेला। अपन सिंगदुआरिमे पोताक अगवानी करबक खुशी मनकेँ भरि देलकैन। मुदा जहिना प्रतिक्षाक घड़ी असथिरसँ नै चलि उकड़ू चालिये चलए लगैए, श्यामचरणोक मनमे तहिना उठलैन। चारि बर्खसँ गोबर गणेश फेल करैत आएल अछि मुदा अपन मन कहै छै जेना जिनगीमे एकोबेर ने फेल केलौं हेन। जँ से रहितै तँ कोढ़िया बरद जकाँ पालो देखिते कान झाँकि दइत। सेहो तँ नहियेँ बुझि पड़ैए। मुदा से भेल केना अछि ई तँ ओकरेसँ भाँज लगत। कियो रचनाकार मरि कऽ नै मृत्युक चर्च करै छैथ, ‘मृतपड़ाय’ जिनगी देखि मृत्युक चरचा करै छैथ...।

बाबा फेर कनगुरिया आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगला। टटका पढ़लाहा ने टटका प्रश्नक उत्तर टटके लिखि देत मुदा से तँ गोबर गणेशमे नै अछि। रिआएल-खिआएल पाइ थोड़े कारोबारमे औत। जँ कनियोँ-कनियोँ बिसरैत गेल हएत तैयो एक सालक पढ़ाइ तीन सालमे बिसैरिये गेल हएत। जँ बेसियाएल रहितै तँ चारि गुणा बेसिया जाइत किने। तखन तँ दोसरे सालमे बेसी पबिते पास केने रहितए, सेहो तँ नहियेँ केलक...।

श्यामचरणक मन घोर-मट्ठा हुअ लगलैन। गोबर गणेश अबिते बाबाकेँ गोड़ लागि बाजल-

"बाबा, रिजल्ट निकलल।"

गोबर गणेशक बात सुनि श्यामचरणक मनमे उठलैन, की निकलल? 'पास केलक आकि फेल' से कहाँ बुझि पेलिऐ? नजैर उठा हिया कऽ गोबर गणेशक मुँहपर देलैन। मुँहक रूखि मलिन नहि। मुदा केना कऽ पुछबै जे बौआ पास केलेँ आकि फेल। 'पास-फेल' तँ लोक जिनगीक क्रियामे करैए। जे बच्चेसँ प्रवाहित हुअ लगै छै आ हंसवाहिनी मतियो चलए लगै छै...।

आँखिपर आँखि चढ़ल देखि गोबर गणेश बुझि गेल जे बाबाक मनमे किछु प्रश्न छैन। हलसैत बाजल-

"अहूबेर नमेमे रहब।"

पोताक बात सुनि श्यामचरणक मनमे उठलैन, चारि सालसँ फेल करैत आएल अछि मुदा मनमे मिसियो भरि गम नै छइ! सियाहीक कोनो रेख नै देखि पबै छी! असमंजसमे बाबाकेँ पड़ल देखि गोबर गणेश बुझि गेल जे भरिसक बाबा बिसैर गेला। सएह मोन पाड़ैले कहि रहला अछि। किछु ठेकना कऽ मोन पाड़ि बाजल-

"पहिले साल जे फेल केने रही से बिसैर गेलिऐ जे किए केने रही?"

पोताक प्रश्न सुनि श्यामचरण असमंजसमे पड़ि गेला जे केना 'हँ' कहबै आ केना 'नै' कहबै। हँ जँ कहबै तखन जँ कहीं आगूक बात पुछि दिअए आ जँ नै कहबै तँ बुझलो बात नै बुझब कहि झुट्ठा भऽ जाएब। चुपे

रहला। परिवार की कोनो कोट-कचहरी छिऐ जे बाता-बाती हएत, परिवार तँ परिवार छिऐ। जहिना बाबाकेँ बिनु पुछनौं किछु कहैक अधिकार पोतापर होइत तहिना ने पोतोकेँ बाबापर। अपने फुरने गोबर गणेश बाजल-

"पहिल साल जे शिक्षक पढ़ौने रहैथ, हुनकर बदलियो भऽ गेलैन आ विषैयो बदैल गेल।"

'पढ़ौनी' आ 'पढ़ौनिहार' सुनि किछु पुछैक मन श्यामचरणकेँ भेलैन, मुदा अपने फुरने गोबर गणेश फेर बाजल-

"पहिल साल जे शिक्षक विषय पढ़ौलैन ओ जेना तर पड़ि गेल।"

गोबर गणेशक बात सुनि श्यामचरण ओझरा गेला। डोराक पोला जकाँ ओर-छोर नै बुझि पाबि जेना बिच्चेमे ओझरी लगि गेलैन। ओझरी लगिते एकटा ओर देखैथ तँ दोसर हेरा जाइन आ बीहयबैत जखन दोसर भेटैन तँ भेटलाहा हेरा जाइन। टीकमे लगल चिड़चिड़ी जकाँ भऽ गेलैन। एक तँ आँखिक पछुऐतमे टीक रहने सोझहा-सोझही अपनो नै देखि पबैथ दोसर दुनू हाथक आँगुर सेहो ओझड़ाइए जाइन...।

पछाइत मनमे उठलैन, गोबर गणेश कियो आन छी जे कोनो बात पुछैमे सङ्कोच हएत। पुछलखिन-

"बौआ, नै बुझि पेलौं जे केना पढ़ौनियोँ आ पढ़ौनिहारो बदैल गेलह। जँ पहिल साल बदलिये गेलह तैयो दोसर-तेसर-चारिम साल तँ बँचलह किने?"

बाबाक प्रश्न सुनि, साँपक बीख झाड़निहार मनतरिया जकाँ गोबर गणेश धुरझाड़ बाजल-

"जहिना पहिल साल बदलल तहिना दोसरो साल बदलल।"

'दोसर साल' सुनिते श्यामचरण बिच्चेमे टोकि देलखिन-

"एना नै बाजह जे जहिना पहिल बदलल तहिना दोसरो-तेसरो-चारिमो साल बदलल। फुटा-फुटा कहऽ जे पहिल साल की बदललह आ

दोसर-तेसर-चारिम साल की?”

बाबाक प्रश्न सुनि, जहिना कियो इन्टरभ्यूमे रस्ताक पढ़ल- बुझल बात सुनि प्रश्नक पुछरी पकैड़ धड़-धड़ा कऽ उत्तर दिअ लगैत तहिना गोबर गणेश बाजल- “पहिलुक साल पढ़लौं जे केना कियो गाछपर चढ़ि आम तोड़ैए आ केना माटिक पहियाक गाड़ी बना माटि उघैए।”

ओना, श्यामचरणकेँ पोताक उत्तर सुनल बुझि पड़लैन, मुदा किछु बेसी दिनक सुनल बुझि बेसी बिसराइए गेल रहैन। किछु अपनो मनपर भार दथि आ किछु खोधि-खाधि गोबरो गणेशक मुहसँ सुनए चाहैथ...। गोबर गणेश बुझि गेल जे बाबाकेँ रस भेट रहल छैन। मनमे उठलै जे परिवारमे बुढ़-बच्चाक बीच सम्बन्ध बनत तँ बीचला अनेरे सोझराएल रहत।

एक दिस टीकासनक बाबा तँ दोसर दिस गंगा पार करैक नाह पोता। मुस्की दैत गोबर गणेश कहलकैन-

“दलानक खुट्टीपर जे ललका कपड़ामे रामायण बान्हि कऽ रखने छी ओ पुरना गेल। पहिल बर्खक कोर्समे रहए।”

गोबर गणेशक अजगुत जवाब सुनि श्यामचरणक मनमे भेलैन जे बुधिये ने तँ घुसैक गेलइ। मुदा लगले फेर भेलैन जे केमहर घूसकल से केना बुझब। एहेन प्रश्न पुछबो केना करबै। जँ कहीं आगू-मुहेँ घुसैक गेल हेतै तखन अगियाएल बात बाजत। तेतबे नहि, जँ कहीं अगवानीक चालि धेलक तँ अनेरे अनसोहाँतो लागत। से नहि तँ चुचकारी दऽ अपने मुहसँ बजाएब नीक हएत...।

पुछलखिन- “बौआ, तूँ झब-झब बाजि जाइ छह, कनी असथिरसँ बाजह। आब कि अपन ओ आँखि-कान रहल जे श्रवणकुमारक पानिक आवाज सुनि तीर चलाएब।”

बाबाक प्रश्न सुनि गोबर गणेशक मन मघैया खेतक खेसारी, सेरसो जकाँ गद-गदा गेल। बाजल- “बाबा, रस्ता-पेरा एहेन सबाल-जवाबक जगह नै छी। कखनो कुत्ता-बिलाइ धियान तोड़त तँ कखनो बान्हपर

खेलाइत धिया-पुता। ओकरा मनाहियोँ तँ नै करबै। जेकरा तीनियेँ बीतक घर-घराड़ी छै ओकर धिया-पुता रस्ता-बाटपर नै खेलतै तँ खेलत केतए। से नहि तँ चलू दरबज्जापर, असथिरसँ कहब।”

पोताक बात सुनि श्यामचरण बजला-

“जेतए बसी वएह सुन्दर देश भेल। जे पैतपाल करए वएह राजा भेल। ईहो जगह कि अधला अछि, दुआरे-दरबज्जाक ने मुहथैर छी। अपन घर-दुआर छी, अकासमे चिड़ै-चुनमुनी उड़बे करत, कुत्ता-बिलाइ, माल-जाल चलबे-एबे-जेबे करत तइसँ कि गप-सप्पमे बाधा पड़त।”

बाबाक विचार गोबर गणेशकेँ नीक लगलै। मनमे एलै गाए-गोरूक मिलान ठेहुनो पानि दुहान...।

बाजल-

“बाबा, रखलाहा पोथीमे कथी राखल अछि से बिसैर गेलिऐ।”

पोताक बात सुनि श्यामचरण कनी पाछू घुसकैत बजला-

“सोलहन्नी केना बिसैर जाएब, मुदा किछु झल जकाँ तँ भइये गेल अछि।”

‘झल’ सुनि झलझलाइत गोबर गणेश बाजल-

“चारू जुगक चर्चा अछि।”

‘चारू जुग’ सुनि श्यामचरणक मन सकपकेलैन। सकपकाइते बजला-

“बौआ, चारि जुगक चर्चा ने पोथी-पुराणमे अछि, जुग तँ केतेको आएल-गेल आ अबैत-जाइत रहत। जुगोक कि ठेकान अछि, जखन दूटा चिन्हारकेँ भेँट होइ छै तखनो कहै छै जुगो पछाइत भेँट भेलौं। आब तोहीं कहऽ जे एक जुगकेँ के कहए जे केते भऽ जाइए..!”

बाबाक विचार गोबर गणेशकेँ जँचल। बाजल किछु ने मुदा डोरीमे बान्हल कोनो वस्तु जकाँ मुड़ी डोलबए लगल।

बाबा बुझि गेला जे भरिसक आरो बात सुनए चाहैए। कहलखिन-

"जहिना चिन्हारक बात कहलियह तहिना बारह बर्खकेँ सेहो जुग कहल जाइ छइ।"

बाबाक विचारकेँ उड़ैत देखि गोबर गणेश बाजल-

"बाबा, कोन जुग-जमानाक बात उठा देलिऐ। आब ने ओ जुग रहल आ ने जमाना। अखन जे जुग अछि तहीसँ ने अपना सबहक जिनगी चलत। अनेरे मगजमारी केने मनो छिड़ियाएत।"

जे बुझि गोबर गणेश बाजल हुअए मुदा श्यामचरणकेँ भेलैन जे भरिसक जे कहलिऐ ओ हृदयकेँ बेधलकै हेन। नीक हएत जे आरो किछु कहि विचारक रस्ता बदलब...।

बजला-

"बौआ, जखन एते बाजिये गेलौं तखन कनियेँ आरो रहल अछि, ओकरो सठाइए लेब नीक हएत। चारि जुग जे भेल सतयुग, त्रेता, द्वापर आ कलयुग से कि कोनो एक्के रंग भेल। जेकरा जेते फबलै से तेते दफाइन लेलक।"

गोबर गणेश दफानैक माने नै बुझलक। बाजल-

"की दफाइन लेलक?"

पोताक जिज्ञासा सुनि श्यामचरण बजला-

"देखहक जँ चारू जुगमे समैयक बँटबारा भेल तँ एक रंगक ने होइत, से कहाँ अछि। चारू चारि रंग अछि। खाएर जे हौ मुदा एकटा आरो बात कहि दइ छिअ। सतयुगक हरिश्चन्द्र बड़ दानी छला। राजा छला, मुदा दान देबाकाल बिसैर गेला जे हम राजा छी, राजक भार ऊपरमे अछि, अपना फुरने जँ एक्के गोरेकेँ सभटा दऽ देबै तँ करोड़क-करोड़ लोक-ले कथी रहतै।"

दिन भरिक जुड़ाएल मन गोबर गणेशक, पेटक बात उफैन-उफैन बहराए चाहै, मुदा बाबाक विरामक पाछुए ने किछु बाजत। रोकलो तँ नै जा सकैए। मनमे उठलै, जहिना कोनो फुलक गाछ आकि कोनो लत्ती

गिरहे-गिरह मुड़ियो-फुलो आ बतियो दइए तहिना जखने बजता आकि बिच्चेमे टोकि मुड़ियारी देबैन। अनेरे अक्छा कऽ चुप भऽ जेता...। बाजल-

“बाबा, अहाँ चारि जुगक चर्चा करै छिऐ, मास्टर साहैब कहलैन जे पाँचम जुग छी। एकटा केतए हेरा गेल?”

‘हेराएल’ सुनि श्यामचरण ठमकला। ठमैकते गोबर गणेश बुझि गेल जे भरिसक बजैले किछु कहै छैथ। सुनैक प्रतिक्षु जकाँ मुँह लगै छैन...। बाजल-

“बाबा, जहिना अदौमे आमक फड़ खाइ छल तहिना अखनो खाइ छी। नीक भोज्य पदार्थ छिऐहे। मुदा प्रश्न तँ एकटा उठबे करत किने जे नमहर गाछक फल छी, जँ अपने टुटि कऽ खसैक बात सोचबै तँ छोटका भलेँ खसलोपर दरहे रहैए मुदा नमहर, कोमल केना रहत। तखन ओकरा केना उपयोग कएल जाएत?”

गोबर गणेशक बात श्यामचरणकेँ जँचलैन। बजला- “एकर उपए तँ यएह ने हएत जे जँ छोट गाछ रहत तँ निच्चोसँ ठाढ़ भऽ हाथसँ तोड़ि लेब, मुदा नमहरमे तँ लग्गी-बत्तीसँ तोड़ल जाएत या गोला-ढेपासँ तोड़ल जाएत। मुदा ई तँ तर्क भेल। आजुक समयमे भलेँ गमलोमे आम फड़ए, मुदा नमहर गाछक फल छी, एकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए। जल्दी-जल्दी अपन बात कहऽ। चाहो पीबैक मन होइए।”

चाहक नाओं सुनिते जेना गोबर गणेशक पशे बदैल गेल। बाजल-

“बाबा, गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइ छै, ओ तँ सदिकाल उड़िते रहैए आ उड़िते रहत। मुदा ओकरा जखन विचार बना विचारि कऽ नै विचरण करबै तखन धारक मुँह केना बनतै। अखन एतबे रहए दियौ। रिजल्टक दिन छी, अहाँ अँटका लेलौं। दादी-माए सभ अँगनामे टाटक भुरकी दने तकैए। भने चाहो बनबा लेब आ कुशलो-छेम सुना देबइ।”

गोबर गणेशक विचार श्यामचरणकेँ जँचलैन। मनमे उठलैन जे भरिसक हमहूँ सभ अतिक्रमण करै छी। से नहि तँ दुनू गोरेक दिशा दू किए भऽ जाइए? परिवारक भीतर जँ वैचारिक समरूपता रहत तँ मतभेद किए

हएत। सभ तँ बालो-बच्चा आ परिवारोकेँ नीक्के चाहै छिऐ।

आँगन पहुँच दादीकेँ गोड़ लागि गोबर गणेश पाशा बदलैत बाजल-

“दादी, पास केलिऐ। तेते ने बैटरीबला पंखा, बत्ती, छोटका बड़का कम्प्यूटर, आरो कि कहाँ आबि गेल अछि जे घरे बैसल इंजीनियर-डॉक्टर बनि जेबौ।”

पोताक विचार सुनि दादी एते अह्लादित भऽ गेली जे लाख सम्हारला पछाइतो मुहसँ खसिये पड़लैन-

“रौ गोबरा, सभ दिन तूँ गोबरे रहमेँ।”

दादीक बात गोबर गणेश नै बुझि पौलक। अपनापर सुनैक शङ्का भेलइ। ‘सुनैक शङ्का’ ई जे गोबराएल कहलक आकि गोबर गणेश। सभ तँ गोबर गणेश कहैए? फेर भेलै- भऽ सकै छै बिनु दाँतक बुढ़ मुँह किछु बजाइये गेल होइ। केहेन-केहेन बीखधरक तँ बीख बिनु दाँते निकैलते ने छै, दादी तँ सहजे बुढ़ दादीए भेली। बाजल किछु ने खाली चाहक गिलास नेने बाबा लग पहुँच, हाथमे पकड़बैत कहलकैन-

“बाबा, अहाँ खुशी भेलौं किने?”

“बौआ, जँ तूँ खुशी तँ हमहूँ खुशी।”



तिथि: 16 जनवरी 2014, शब्द संख्या: 2343

सुमति

तीन माससँ किछु बेसीए दिनपर हरिनाथ भाय भेटला। ओना, उमेरमे भरिसक चारि-पाँच मास छोटे हेता मुदा तेहेन लछन-करम छैन जे छोटक कोन बात जे जेठोजन सभ ‘भाय’ कहै छैन, हमहूँ सएह कहै छिऐन। नै भेँट होइक कारण ई नै अछि जे परिवारक ओझरीमे हरिनाथ भाय ओझरा गेल छैथ आकि बेमरियाहे भऽ गेल छैथ। आन भैयारी जकाँ सेहो नहियेँ छैन जे बपौती हिस्सा-बखरा लेल कन्हामे झोरा लटका सरकारी दुआरि धेने रहता।

भेल ई छैन जे परिवारक दाब कम भेने नव-नव काजो आ विचारो तेना कऽ पकैड़ लेलकैन जे पैछला सभ किछु तरिऐ लगलैन अछि, जइसँ घुमबो-फीड़ब कम भऽ गेलैन अछि। कम भेने भेँट-घाँट कमब सोभाविके अछि। दोसर ईहो जे जहिना नव-विचार विचरण-ले समय मगैए तहिना नव काजो तँ मांगिते अछि।

दोहरी मांग भेने रूटिंगो बदलबे करत। सएह भेलैन। सह भेटते मनमे उठल जे आने जकाँ तँ ओहो भैयारीक बीच छैथे, तँए रामा-कठोला हेबे करतैन। मुदा मुँहक सुरखी से नै कहै छैन। आशाक ओसाएल ओसक बून जकाँ टप-टप करै छैन। ओना, एहनो तँ होइते अछि जे अपन मनक बेथा-कथा अनका लग बजनहि की! तँए अनेरे मुहोँ लटकाएब नीक नहियेँ होइए। मुदा से हरिनाथ भायकेँ नै रहैन। जेना रसे-रसे बेसियाएले जाइत रहैन। एहेन स्थितिमे अगुरवार किछु बाजब उचित नै बुझि पुछलयैन-

“हरी भाय, बहुत दिनपर भेटलौं अछि। की माया-जालमे बेसी ओझरा गेल छी?”

जहिना हल्लुक फूलमे फल्लुक फड़ फड़ैए तहिना ओहो निर्विकार

उत्तर देलैन- "घर आँगनमे तेते नवका-नवका अतिथि-अभियागत सभ आबए लगला अछि जे एक्को-घड़ी छुट्टीए ने होइए जे केतौ टहलबो-बुलबो करब। तँए बेसी दिनपर देखलह।"

हरिनाथ भाइक चिक्कारी बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं। मुदा दोहरा कऽ पुछबो केना करितिऐन। अखन तँ भेँटक ऊपरके सीढ़ीपर छी, चाहे ओ भूमिका होइ आकि कुशल-छेम। कोनो गम्भीर बात तँ राजसी ठाठ-बाठमे चलैए, आगू-पाछू सर-सिपाही रहै छइ। मुदा ईहो तँ मनकेँ हौंरबे करत जे जखन कुशले-छेम नै बुझि पेलौं तखन ऐगला केना बुझि पाएब। करहर सौरखीक गाछ होइ आकि मखानक गाछ बिनु पात पकड़ने केना ओकर गाछ पकैड़ सकै छी। जँ गाछे नै पकड़ाएत तँ पानिक निच्चाँ कीचक जड़ि केना पकड़ाएत, जँ जड़िये नै पकड़ाएत तखन बिच्ची उखाड़ि केना सकै छी। जँ बिच्चीए नै उखड़त तँ अनेरे ओइ दिस ताकिये कऽ की लाभ? पोखैर-डाबरमे तँ पड़ले छइ।

तीन-चारि मासक बीच हरिनाथ भाय भेटला, एते दिनमे सालक मौसमो बदैल जाइए। मुदा गप-सप्पमे तेहेन घुच्ची बनि गेल जे खसैकेँ के कहए जे पैरक कनगुरिया आँगुरक सिर तक छिटका देत...।

मन मोड़ि कहलयैन-

"भाय, बारह मासक सालमे तीनटा मौसम बदैल जाइए मुदा एते दिनक पछाइतो अहाँक मुँहक चुहचुही नै चिहकल?"

जेना निर्विकार हरिनाथ भाय रहैथ तहिना बजला-

"मुँहक चुहचुही किए बदलत, अपन जे दायित्व बुझै छी तइ पाछू लगल छी। जहाँ धरि सम्भव भऽ सकतै, हेतइ। तइले अनेरे चिन्तासँ चीत भऽ चितामे चलि जाइ सेहो केहेन हएत। जँ कोनो काज अछि तँ से केना हएत, ओकर चिन्तन-मनन करैत चिन्तक बनि परिवारमे ठाढ़ हएब, तखने ने चिन्तामुक्त परिवार बनत। से बिना केने थोड़े हएत।"

ओना, हरिनाथ भाइक विचार सुनि केतेको बात मनमे उठल मुदा फेर भेल जे भैयारीक सम्बन्ध बुझैक अछि, अनेरे दोसर-तेसर बातमे

वौआएब नीक नै...।

पुछलयैन-

“सपरिवार नीके छी किने?”

परिवारक नाओं सुनिते जेना हरिनाथ भाय चौंकला तहिना हलसैत कहलैन-

“भने परिवारक कुशल पुछलह, सुन्दरलाल सेहो आएल अछि, गामेपर चलह कलकतिया बिस्कुटो खुएबह, चाहो पीविहऽ आ गपो-सप्प हेतइ।”

हरिनाथ भाइक बात सुनि मनमे उठल भने कहबो केलैन आ बहुत दिनसँ सुन्दरलालसँ भेँटो ने भेल, दुनू भऽ जाएत। मुदा नमहर नचनियाँक फीस तखने ने नमहर होइ छै जखन व्यस्तता बेसी देखबैए। तहिना हमहूँ बजलौं-

“भाय, एकटा काजे दछिनवारि टोल जाइ छी मुदा सुन्दरलाल बहरवैया भेल, परदेशक किछु समाचार सुनब बेसी महत रखैए। अपन काज तँ अपना हाथक छी, जखने समैयक गर लागत तखने ससारि लेब।”

जहिना हरिनाथक घर दिस डेगो बढ़ैत रहए तहिना गपो-सप्प डेगे-डेग बढ़ए लगल...।

कहलयैन-

“जखन सुन्दरलाल महानगरक राजधानीमे रहैए तखन तँ बाल-बच्चा सभकेँ ओतै पढ़बैत हएब?”

ऐगला बात कहैले पछुआएले रहए आकि बिच्चेमे हरिनाथ भाय टपकला-

“संगतुरिया जकाँ तोरा बुझै छी, तखन किए एना अनाड़ी जकाँ बजै छह?”

हरिनाथ भाइक बात सुनि फेर मन ओझरा गेल। केहेन सुन्नर बात कहलयैन तखन किए तमसा गेला। तमसाइक कोनो अरथे ने लगल। फेर

सोचलौं जे दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिने खटपटाएब नीक नहि। खटपटही गाए जकाँ दुहैसँ पहिने लथारसँ डाबा फोड़ा लेब तखन दूहब कथीमे। मुस्की दैत जहिना शुभ-शुभ कियो केतौ पहुँच बजैए तहिना बजलौं-

"भाय, बिस्कुट तँ कलकतिया नीक हएत मुदा चाहमे पौडरबला दूध मनाही कऽ देबै, गैसक शिकाइत रहैए।"

जेना हरिनाथ भायकेँ ठोरेपर बरी पकैत होइन तहिना जवाब देलैन-

"घरवैयाकेँ जुड़त मरूआ रोटी तँ खीर केतए-सँ आनत।"

गर भेटल। कहलयैन-

"कहलौं तँ बेस मुदा ईहो केहेन हएत जे नै पचैए सएह खुआएब।"

जहिना बजलौं तहिना ओहो लोइक लेलैन-

"खुएबऽ बिस्कुट, चाह तँ पीबैक वस्तु छी। खेला पछाइत ने पीअल जाइ छै पीला पछाइत खाएल थोड़े जाइ छइ।"

गपक रस पाबि बजलौं-

"खेनाइ-पीनाइ दुनू संगी छी। एकठाम बनि-ठनि भरि दिन केतए वौआइए तेकर खोज-खबैर रहौ आकि नै रहौ मुदा बनै-ठनै बेर तँ दुनू एकठाम होइते अछि।"

घर लग एने मनमे भेल जे रस्ताक गपकेँ विराम देब नीक हएत। तहूमे लङ्गोटिया संगीक बीचक बात छी, जँ कहीं परिवारक दोसराइत सुनि लेत तँ अनेरे अर्थक अनर्थ भऽ जाएत...।

बजलौं-

"सपरिवार सुन्दरलाल एला अछि आकि असगरे?"

हरिनाथ-

"ऐबेर तँ सपरिवार आएल अछि मुदा बेसीकाल असगरे अबैए।"

असगर सुनि पुछि देलिऐन-

"एना किए दू-रंगा गप कहै छी?"

'दू-रंगा' सुनि मनमे कचोट भेलैन। मुदा सोझे मुहेँ नै बाजि कनछियाइत बजला-

"नोकरियो कि एक रंगक होइए जे एक चालिये सभ चलत। रघुवीरकेँ देखै छी एजेंसीक नोकरी छै, किम्हरोसँ किम्हरो महिनामे चारि-पाँच खेप चलि अबैए। मुदा सभ कि रघुवीरे छी, सेहो बात नै अछि। एहनो तँ होइते अछि जे कियो सालक मास दिनक छुट्टी एकेबेर गाममे बितबैए, तँ कियो टुकड़ी काटि-काटि पान-सात बेर सालमे चलि आबैए। मुदा सुन्दरलालकेँ अपन ढाठी छइ। दस दिनक दुर्गा पूजाक छुट्टीमे सभतूर अबैए आ अनदिना असगरे अबैए। मुदा ऐबेर तइ सभसँ अलग भऽ सपरिवार आएल अछि।"

पेटमे जहिना भूखल बिलाइ बिलाइत रूपमे कुदैत तहिना पेटमे दू भैयारीक रामा-कठोला सुनैले सेहो कुदैत रहए। मुदा कण्ठसँ ऊपर हुअ नै दिअ चाहिऐ। अनेरे अनका चार परहक कुमहर गनब। गनबै कुमहर आ जँ कोनो बतिया सड़ि जेतै तँ नाओं लगौत जे फँल्लेँ आँगुर बतौने रहए...।

फेर मन हुअए जे जँ कहीं दुनू भाँइक बिच्चेमे सम्बन्धक प्रश्न रखि दिऐ तँ से बेसी नीक हएत। मुदा फेर हुअए जे सबहक कीदैन रुपैआ करए। जँ कहीं पाइ-कौड़ीक चर्च भेल आ विवाद फँसल तँ अनेरे दोखी हएब जे फँल्लेँ आबि कऽ दुनू भाँइमे मारि करा देलक। मारि करत अपना चालिये आ दोखी बनौत हमरा जे फँल्लमा घरे फोड़ि देलक..!

कोनो गरे ने अँटए जे अपन बातक जड़ि पकड़ब। जाबे जड़ि नै पकड़ाएत ताबे सत् केना औत, जाबे सत् नै औत ताबे चेतनकेँ चेतन केना कहबै, ताबे तक तँ ओ बाले-बोल रहत। बाल-बोलक आनन्दे की? क्षणिक! मन तेना मकड़जालमे ओझरा गेल जे हरिनाथ भाइक रस्ताक बातो अदहे-छिदहे सुनि पेलौं। दरबज्जापर पहुँचते जहिना घोड़ाएल मक्खन आगिपर चढ़ि घी बनए लगैए तहिना भेल।

दरबज्जा ओसारक चरिजनियाँ अखड़े चौकीपर सुन्दरलाल सभटा धिया-पुताकेँ माने दुनू भाँइक बेटा-बेटीकेँ गोल-मोल बैसा अपनो बैसल

रहए। रूमाल चोर जकाँ गोलका माला बनौने रहए आ सभसँ छोट भतीजीकेँ पुछैत रहइ-

"बुच्ची, तोहर नाओं की छियौ?"

आँखि उठा चारि बर्खक रानी मने-मन गर लगबए लगल। माए कहैए- 'रानी', पिता कहै छैथ- 'सड़लाही', बड़का भैया कहै छैथ- 'लछमी' आ काका अपने कहै छैथ- 'त्रिवेणी' आ चाची 'जमुनियाँ सरोसती।' जेतए लोकक नाओं तँ एकटा होइ छै तैठाम हमरा ढेरी अछि। तखन की कहबैन, यएह ने कहबैन त्रिवेणी। बाजल-

"त्रिवेणी।"

सुन्दरलालकेँ बच्चा सबहक बीच गप-सप्प करैत देखि डेढ़ीए लग कनी डेग छोट कऽ लेलौं। ओना, संयोगो नीक रहए जे सुन्दरलालक पीठ दिससँ अबैत रही।

'त्रिवेणी' सुनि सुन्दरलाल जेठकी बहिनकेँ देखबैत पुछलक-

"ई के भेलखुन?"

"दीदी।"

"हम?"

"कलकतिया काका।"

सुन्दरलालकेँ बच्चा सबहक बीच देखि मन घीवाह भऽ गेल। आगिपर चढ़ल घीबक सुगन्धसँ दरबज्जा सुगन्धित पाबि ठाढ़ भऽ गेलौं। मुदा से हरि भाय भंग कऽ देलैन। सुन्दरलालकेँ टाँहि देलखिन-

"बौआ, पुरान संगी रस्तापर भेटला, बच्चा सभकेँ छोड़ह पहिने जलखै-चाहक ओरियान करह।"

धड़फड़ा कऽ सुन्दरलाल उठि बाँहि पकैड़ कुरसीपर बैसबैत भातीजकेँ कहलक-

"बौआ, पहिने जलखै नेने आबह, ताबे चाहो बनते।"

कहि दुनू भाँइ चौकीपर बैसला। सेरिया कऽ सभ बैसलो ने रही आकि तीन-चारि रंगक बिस्कुट आ दूटा लालमोहन सजल प्लेट हाथमे आबि गेल। तेज काजक रूप देखि मनमे भेल जेना पहिनेसँ प्लेट सजल होइ। तीनू गोरेक हाथमे प्लेट आबि गेल मुदा हाथ तीनूक बाड़ल। ओ दुनू भाँइ बाड़ने जे पहिने, ओ मुँहमे लेता तखन ने हम सभ लेब। जेना भोजो काजमे पहिने बुढ़-बुढ़ानुस कौर उठबै छैथ तेकर पछाइते ने सभ उठबैए। भलेँ धिया-पुता पहिने किए ने खेनाइ शुरू कऽ लइए। अपन अगुआएब नीक बुझि एकटा बिस्कुट तोड़ि मुँहमे लेलौं। ओहो दुनू भाँइ खाए लगला। बेवहार देखि भ्रमित मन सहैम गेल। अपनाकेँ छिपबैत सुन्दरलालकेँ पुछलिऐ-

"बौआ, केते दिनपर गाम एलह हेन?"

सुन्दरलाल कहलक- "डेढ़ मासपर।"

'डेढ़ मास' सुनि मन आरो भरैम गेल। डेढ़ मासपर कलकत्तासँ आएल, तखन कमाएल कथी हएत! ओ कमाइ तँ गाड़ियेक भाड़ा-भुड़ीमे चलि गेल हेतइ। मुदा पुछबो केना करबै जे भाड़े-भुड़ीमे सभ पाइ चलि जाइत हेतह, तखन परिवार केना चलतह...।

विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"डेढ़ मासपर किए एलह, कोनो विशेष काज की?"

'विशेष काज' सुनि सुन्दरलाल बाजल-

"विशेष केकरा कहबै आ साधारण केकरा कहबै?"

सुन्दरलालक प्रश्न जेना मनकेँ दाबि देलक, दाबि ई देलक जे विशेष आ साधारण तँ बेकता-बेकती होइए। ओना, सामाजिक सेहो होइते अछि, मुदा जहिना समाज अपन चालि बदैल कुचालिक बाट पकैड़ लेलक अछि तहिना ने बेकतीक साधारण आ विशेष काजोक चालि बदैल गेल अछि। ओना, बेकता-बेकती जिनगीक दशा-दिशानुसार सेहो बदलैत चलै छै...।

कोनो गरे ने फुरए जे सुन्दरलालकेँ सवुरगर जवाब दऽ सकब। मन

ठमकल। मुदा लगले भेल जे जखन पी.जी. किलासमे विषय धारा पकैड़ चलबे ने करैए, तखन गाम घरक तँ दलान दलाने भेल। जँ खेती-गिरहस्तीक क्रार्यक्रममे भगवतीक गीत बीचमे नै गाएब तँ की गाएब। ने खेतीकेँ अपन उपजाक ठेकान छै आ ने गिरहतकेँ गिरहस्तीक। तखन हमरे किए रहत। पाशा बदलैत बजलौं-

"बौआ, गाममे नीक लगै छह?"

प्रश्न तँ ऐ हिसाबसँ रखलौं जे जहिना बजरूआ लोक सिनेमा-कलाकारक सात पुश्त तक जनैए मुदा अपन वंशक तीनियोँ पुश्त नै जानि पबैए। मुदा से भेल नहि। जेना ठेकनाएले रहै तहिना सुन्दरलाल कहलक-

"भैया, जहिना अहाँ भाय साहैबक संगी छिऐन तहिना हमरो भेलौं। तँए अहाँ लग कोनो बात बुझैले रखि सकै छी। गाममे किए ने नीक लागल? बोन राखए सिंह आ सिंह राखए बोन।"

खोलि कऽ सुन्दरलाल किछु ने बाजल मुदा तेहेन गड़ूगर प्रश्न रखि देलक, जे किछु फुरबे ने कएल। मनमे उठल जे जखन धारो-धुरक कोनो ठेकान नै अछि जे जइ कोसी-कमलाक गीत लोक झालि-मिरदंगपर गबैए भलेँ ढोलक-झालिक जगहे किए ने बदैल गेल हौ। मुदा जइसँ खुशी होइत ओहो कोसी-कमला गामक-गामकेँ उजाड़बो करैए आ माटिकेँ सेहो उजरबैए! तैठाम मनुख तँ मनुखे भेल। जे मनुखाहो बनैए आ मरखाहो...।

पाशा बदैल बजलौं-

"भाइयो साहैबक धिया-पुताकेँ ओतए लऽ जा नीक स्कूल कौलेजमे पढ़बै छहुन किने?"

ले बलैया! सुन्दरलाल चुपे रहल आ बिच्चेमे हरी भाय बमैक उठला-

"अहिना बुझै छहक। हम कि अपना बेटाकेँ कारखानाक लूरि सीखा कारखानाबलाक बेटा बना देब। जइ दिन अपना पूजी-पगहा हएत तइ दिन अपना मशीनपर लूरि सिखत।"

हरी भाइक बात सुनि किछु खास बात मनमे उठल संगे मनमे ईहो

उठल जे अनेरे अनका दरबज्जापर मुँहचुरू होइ छी तइसँ नीक जे हरीए भायकेँ पुछि वक्ता बना अपन नाङेर समेट लेब नीक। बजलौं-

“केना अपन बेटा अनकर भऽ जाएत?”

हरी भाय बजला-

“केना भऽ जाएत, से तूँ नै बुझै छहक।”

अपना दिस प्रश्न अबैत देखि फेर पाशा बदललौं-

“बौआ सुन्दरलाल, तोहर बात नै बुझि पेलौं जे केना बोन सिंह रखैए आ सिंह केना बोन?”

गम्भीर होइत सुन्दरलाल बाजल-

“भैया, किए हम परदेश गेलौं, अहीं कनी बुझा दिअ। स्कूलमे नीक विद्यार्थीक गिनतीमे हमहूँ छेलौं। एम.बी.ए. केलौं। अहाँक गाममे हमर कोन काज रहल। जँ पढ़ि-लिखि काज बदैल करितौं तँ अहीं बजितौं जे पढ़ै फारसी बेचै तेल, देखू भाय करमक खेल। तखन?”

सुन्दरलालक प्रश्न जेना मनकेँ आरो भरिया देलक। मुदा जइ दरबज्जापर बैस जलखै केलौं, चाह पीलौं तैठामसँ मुड़ी गौंति जाइ ओ नीक नहि। मुदा मुड़ी उठाएबो असान तँ नहियेँ अछि। मनमे एकटा गर उठल। गर ई उठल जे जइ प्रश्नपर हरी भाय बमकला तही प्रश्नकेँ किए ने सुन्दरलालकेँ दोहरा कऽ पुछि दिऐ। बजलौं-

“बौआ हरीभायकेँ कोन बातक कुवाथ भऽ गेल छैन जे एना कड़ुआएल छैथ?”

सुन्दरलाल हूसल। हूसल ई जे अपन पैछला बात दोहरबैत बाजल-

“मनमे उठल रहए जे जखन भैयारीमे, परिवारमे जाबे तक काजक सम्बन्ध नै बनत ताबे तक एक दबाइत रहत दोसर उठैत रहत। यहए सोचि भैयाकेँ कहलयैन जे भातीज-भतीजीकेँ कलकते जाए दियौ, ओतै नीक स्कूल-कौलेजमे पढ़ाएब। मुदा..?”

‘मुदा’क पछाइत सुन्दरलाल रूकि गेल। ओना, जिनगीक घटित

घटना रहै, भाइक सोझहामे पक्ष राखब नीक नै बुझलक, मुदा हरी भायकेँ जेना पैछलो बात ओहिना तजगरे छेलैन। तहूँमे बजैक क्रमो तँ अगियाऐ गेल रहैन। मुदा मनुख तँ भगवानोसँ बुधियार होइते अछि। आगि भर्लें पानि नै भऽ सकए आ ने पानि आगि भऽ सकए मुदा मनुख तँ भऽ सकैए। आगि पानिक बनल मनुख, कखनो आगिक लहास जकाँ भऽ जाइए तँ कखनो कैलाशक बरफ जकाँ। हरियो भायकेँ सहए भेलैन...। सुन्दरलालक विचारपर पानि फेड़ैत टटका प्रश्न बनबैत बजला-

“तोरेसँ पुछै छिअ जे जे बच्चा बच्चेसँ माए-बाप लगसँ हटि जाइए ओ सकताइत-सकताइत पाकल बाँस जकाँ नै सकता जाएत, ओ माए-बापक देल कोन किरिया-करम मोन पाड़ि अपन किरिया करमसँ जोड़ि करत?”

हरीभाइक प्रश्नक उत्तर उकड़ू छेलैन। उकड़ू काजकेँ सुकड़ू बनाएब धिया-पुताक खेल थोड़े छी। तहूमे केहेन उकड़ूकेँ केहेन सुकड़ू बनौल जाए। ईहो एक अलग समस्या भेल। एहेन तँ नै ने जे जइ बाँसक टोनसँ ढेंग उनटाबए जाएब आ वएह टुटि जाए, तखन तँ आरो उकड़ू हएत। तइसँ नीक जे दुनू भाँइक बीचक बात छी तँए किए ने ओही गरे उनटा दिऐ...।

बजलौं-

“हरी भाय, बातकेँ कनी फरिछा कऽ कहियौ। नै बुझि पेलौं जे अहाँ की कहै छिऐ।”

जेहने धियानसँ हमर बात हरी भाय सुनने रहैथ तेहने अपन जगह ठेकनबैत बजला-

“हमहीं दू भाँइ छी। दुनू भाँइक बीच केहेन मेल-मिलान अछि जे सभ देखैए, मुदा मिलान रहलो पछाइत हटल केते छी। जँ कलकत्तामे सुन्दरलाल बिमार पड़ए आकि गाममे हमहीं पड़ी, भैयारीक सेवा कथी हएत?”

हरीभाइक अकाट बात सुनि किछु फुरबे ने कएल, खिस्सा सुनिनिहार जँ हूँहकारी नै देत तँ खिस्सकर अपनाकेँ की बुझत। मुदा

हूँहकारियो तँ हूँहकारी छी। केहेन हूँहकारी पड़त ईहो तँ अदना बात नहियेँ अछि। ओना, सुन्दरलाल डेढ़ मासपर आएल छल, मुदा बुझलो बातकेँ अनठबैत फेर पाशा बदैल बजलौं-

"बौआ, गामक आवाजाही केहेन रखने छह?"

अपन भार हटैत देखि हरी भाय ओसारक देवालमे ओङैठ गेला। ओंगठैत देखि मन हल्लुक भेल। जइ नजरिये हरी भायकेँ देखै छिऐन तइ नजैर-जोकर सुन्दरलाल थोड़े अछि। आँखि उठा सुन्दरलालक आँखिमे गाड़लौं आकि सुन्दरलाल बाजल-

"भैया, नोकरीक शुरूआतमे दस बरख सोलहन्नी गाम छुटि गेल। छुटैक कारण नोकरी रहए। जहिना सभ जिनगीमे आगू बढ़ए चाहैए तहिना चाहलौं। जइसँ ड्यूटीकेँ मजगूतीसँ पकड़लौं। ने कहियो अनट-बिनट छुट्टी ली आ ने कोनो लापरवाही करी। मुदा बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ आ पत्नीक बर-बिमारी खुदरो-खुदरी एते भइये जाए जे सालक बीस दिनक छुट्टी हेरा जाए। छुट्टियो ने हुअए जे गाम ऐबतौं। दस बर्खक पछाइत मनमे भेल जे आब बच्चो कनी चेष्टगर भेल आ पत्नियोँ कनी निधोख भेली, जइसँ दुनू काज असान भेल। असान कि भेल जे अपन काजे ने रहल। मुदा फेर दोसर बिहंगरा ठाढ़ भऽ गेल?"

'बिहंगरा' सुनि बजलौं- "की बिहंगरा?"

मुँह बिजकबैत सुन्दरलाल बाजल- "तेते ने हित-अपेछित भऽ गेल अछि जे नौते-हकार पुड़ैमे छुट्टी हेरा लगल। हेरेबे नै कएल जे केतेठामसँ उपरागो आबए लगल जे अहाँ नै एलौं।"

बाजि सुन्दरलाल चुप भऽ गेल। पुछलिऐ- "चुप किए भेलह?"

जेना सुन्दरलालक आँखिमे चुमकी एलै! बाजल-

"सभ छोड़ि दुर्गापूजामे सपरिवार गाम आबए लगलौं। मुदा जे मनमे छल से अहूसँ नै भेल।"

जिज्ञासा जगल पुछलिऐ- "की मनमे छेलह?"

सुन्दरलाल- “मनमे आएल जे कम-सँ-कम मासे-मास गाम आबी। मुदा तहूमे बाधा आबए लगल। कहियो पत्नी नैहरक लाटमे नौत पूरए जेती तँ कहियो बच्चा-सबहक पढ़ाइ बाधित हुअए।”

“तखन?”

“तखन यएह केलौं शनि-रबिक उ पयोग केलौं, परिवारकेँ छोड़ि गाम आबए लगलौं।”

गाम अबैक लाट देखि कहलिऐ-

“हरी भायकेँ गाम-गमाइत करैले एकटा गाड़ी कीनि दहुन? एक तँ उमेरगरो भेला आ अपन नामो-निशान रहतह?”

बजैकाल तँ बाजि गेलौं मुदा हरी भायकेँ नीक नै लगलैन। बमैक गेला- “बड़ बुधियार भऽ गेलह, टिटही जकाँ हमरा टिकटिकिया कपारपर चढ़ल अछि जे अनेरे रोडमे हाथ-पएर तोड़ा काहि काटब। हाट-बजारक जे काज अछि ओ जखन गामेमे भेट जाइए तखन अनेरे किए वौआएल घुमब।”

सुर्जकेँ सिरचढ़ू होइत देखि उठैक गर अँटबए लगलौं। बहुत बेसी कहा-कही दुनू भाँइक बीच भलेँ नै भेल होइ, मुदा विचारक दूरी तँ अछिए। तहूमे दरबज्जापर बैस चाह-पानि पीलौं, सामंजस करैत कुरसीपर सँ उठैत बजलौं-

“समय तेहेन भऽ गेल अछि जे कँटहा बाँस जकाँ केतबो चिक्कन करबै तैयो उबड़-खाबड़ रहिये जाएत। कोनो कि गीरहेटा खोंचाह रहैए, पोरक बिच्चोमे तहिना रहैए।”

बाजल तँ ई सोचि रही जे दुनू भाँइकेँ नीक लगतैन मुदा से भेल नहि। सुन्दरलाल चुप रहल, बात मानलक आकि नै से तँ ओ जानए। मुदा चुप्पीसँ अपना बुझि पड़ल जे मानि लेलक। मुदा हरी भाय तड़ैंग बजला-

“अनेरे समयकेँ दोख लगा लोक अपन गलती छिपबैए। समय केकरो ने किछु केलकै हेन आ ने करै छइ। लोक अपने केतौ भाग कहि

समैयक दोख लगबैए तँ केतौ दिनक दोख तहिना केतौ मौसमक तँ केतौ सालक।”

हरी भाइक बात सुनि मन चकरा गेल। चकरा ई गेल जे, जे बात सभ बजैए से झूठ केना भऽ जाएत। सभ कि झूठेक कारोबार करैए..?

बजलौं-

“हरी भाय, अहाँ जान नै छोड़ब। सोफ जकाँ तेहेन बात लाधि देलिऐ जे बिना लाठी लगौने ठाढ़े ने हएत। अधडरेरेपर सँ लीब जाएत। कहैले तँ बिछानसँ नमहर होइए मुदा अपने भरे ठाढ़ो होइक जोर नै होइ छइ। कनी फरिछा कऽ कहियौ जे समैयक दोख किए ने होइए?”

हरी भाय बुझि गेला। कनियेँ रूकि बजला-

“देखहक, कोनो काज करैसँ पहिने लोक ओकर विचार करैए। विचार केलाक पछाइत एक सीमापर अबिते बुझब मानैए। बुझबकेँ बुझाएब लूरि भेल, कला भेल।”

हरी भाइक विचार जेना मनमे गड़ल। काँट जकाँ नै गड़ल जे बिसबिसैतए, छेनाक पानि जकाँ कपड़ामे बान्हल मोटरीक पानिक ठोप जकाँ गड़ल...।

कहलयैन- “हरी भाय, कनी पैछला बात समैयक दोख जे कहलिऐ तेकरा चिक्कन कऽ दियौ।”

‘चिक्कन’ सुनि हरी भाइक ठोर जेना मधुएलैन। मुस्की दैत बजला-

“जेकरा समय बुझै छहक ओ निरविकार अछि। हाथ-पएर नै रहितो ओ अपना गतिये चलिते अछि, चलिते रहत। मुदा विवेकी मनुख विवेकहीन बनि अपन काजकेँ दोसरपर लादि दइए। खाएर, आब नहाइयोक बेर भेल जाइए, तहूँ जेबह। तँए कहि दइ छिअ।”

हरी भाइक लछन-करमसँ बुझि पड़ल जे अपन अन्तिम बात कहए चाहै छैथ।

हूँहकारी भरलौं- “समैयेपर ने नहाएब-खाएब आ सुतब नीक

होइए?”

सुनि जेना हरी भाइक मन फुला गेलैन। जेठ मासक रौदमे जखन कियो छाती भरि पानिमे पइस पतालसँ अकास धरिक बीच अपनाकेँ पबैए तहिना हरी भाय अपन बात बजला-

“जखन सुन्दरलाल आगू पढ़ैक विचार केलक, तखन सुन्दरलालो आ पितोजीक एक विचार रहैन। मुदा नै ऐ दुआरे बजलौं जे पिताक आगू किछु बाजब आ जँ कहीं सुन्दरलालक मनमे होइतै जे भैये बाधा छैथ, तखन किए बीचमे बाधक बनि कलङ्क लैतौं। तँए किछु ने बजलौं मुदा ओतैसँ परिवार हूसल।

‘हूसल’ सुनि जिज्ञासा बढ़ल। पुछलयैन-

“उपए?”

बजला-

“जे हूसल से तँ हूसि गेल, मुदा आबो सुमति आबौ जे आगू दिन दनदनाइत चलत।”



तिथि: 30 जनवरी 2014, शब्द संख्या: 3072

फेर पुछबैन

राकेश आ मुकेश गामेक हाइ स्कूलक वर्ग दसममे पढ़ैत। एक तँ एकउमेरिया तैपर दुनूक मात्रिको एके गाम तँए सम्बन्ध आरो बेसी गाढ़। गाढ़ सम्बन्ध तँ वएह ने भेल जे झगड़ा-मिलान संगे एक रहैए। तेतबे किए तहूसँ बेसी होइए। तीत-मीठ दुनू संगे रहैए। तँए कि सना-बटा कऽ डलना तरकारी जकाँ मसल्ला सभकेँ एकबट कऽ दइ छइ? नहि! से नै होइ छइ। होइ छै ई जे समय आ जगह पाबि वएह तीत होइए आ समय-जगह पाबि वएह मीठ होइए।

दस घण्टी पढ़ाइक बीच नअम घण्टीक पढ़ाइ शुरू भेल। शिक्षक आबि जमीनक सर्वेक विषय पढ़बए लगला। जलियाएल विषय तँए आन शिक्षक जकाँ धुर-झाड़ तँ नै बाजि पबैथ मुदा मोन पाड़ि-पाड़ि बजने विद्यार्थी सभकेँ अकछाइत देखलैन। मन मोड़ैले बजला-

"जोरू जमीन जोरकेँ नहि तँ केकरो औरकेँ।"

लयवद्ध पाँति तँए विद्यार्थी एकाग्र भेल। मुदा अपन विषयक नाडैर पकैड़ पुन: शिक्षक सर्वेक विषय पकैड़ लेलैन।

छुट्टीक घण्टी बजल। सभ विदा भेल। विद्यालयक आँगनक झूण्ड पतराइते राकेश-मुकेश एकठाम भेल। झूण्डक हल्लो कमल। गप-सप्प करैक मौसम पाबि राकेश बाजल- "जोरू जमीन जोरकेँ, नहि तँ केकरो औरकेँ।"

बजैक कारण राकेशक मनमे रहै जे मास्टर साहैबक पढ़ौल ओहिना मोन अछि...।

उनटबैत मुकेश बाजल- "छुच्छे पाँति बजने हेतौ! कह ते ओकर

माने की भेल?”

मुकेशक चाइलेंजकेँ राकेश केना नै स्वीकारैत। बाजल-

“घरवाली आ खेत-पथार तागैतक छिऐ जे हर्ही-सुर्ही नै सम्हारि पौत।”

गपक क्रमक नाङैर पकैड़ मुकेश बाजल-

“जहिना सुरेबगरहा लेल सुरेबगरही घरवाली होइ छै तहिना नेंगरा लेल नेंगरियो होइ छै, तखन केना बुझलेँ?”

दुनूक बीच प्रश्नपर रग्गड़ नै होइत, नीक-बेजाएक सीमापर हरदा-हरदी कहि मानि लैत। राकेश मानैत बाजल-

“तूँ की बुझहै छीही, बाज?”

राकेशक बात सुनि मुकेशक मनमे खुशी उपकल। खुशियो केना नै उपैकते, केतौ बिनु पुछनौं ढाकीक-ढाकी बात छिड़ियाइत रहैए आ केतौ सुनिनिहार स्वयं जिज्ञासु होइए...।

बाजल- “खेत-पथारक संग जेकर जोर भेल अछि ओकरे ने ओ भेल आकि दोसराक?”

ओना, अखन धरि राकेश-मुकेश अपना मतभेदकेँ अपने विवेके फरिछा लइ छल मुदा से नै भऽ रक्का-टोकी शुरू भऽ गेलइ। रंग-बिरंगक शब्दवाण चलए लगलै।

विद्यालयसँ घर लग दुनू पहुँच गेल मुदा फरिछौट नै भेल...।

अन्तमे, दुनू सहमत भेल जे काल्हि ओही मास्टर साहैबकेँ फेर पुछबैन।



तिथि: 31 जनवरी 2014, शब्द संख्या: 339

भोँटक गहमी

पाँच बरख पहिलुका भोँटक बात किछु गोरेकेँ मनो रहल आ अधिक गोरे बिसरिये गेला। मनो रहैक कारण आ बिसरैयोक कारण अपन-अपन छेलइ। किए लोक बिसैर जाएत जे हमरे भोँटपर सरकार नै बनल। नै बनैत तँ करोड़क लाभ केना भेटल, मुदा अधिक लोक ओहने जेकरा भोँटक अधिकार तँ छै मुदा चीन-पहचीन नै छइ। दू देशक सीमान परहक पगलखन्ना जकाँ, केकरो नै दुनूक। भलेँ पगलपनी दुआरे दुनूमे सँ केकरो मोजरे किए ने नै दइत होइ।

रंग-रंगक मुखौटा, रंग-रंगक रूप बना एबे करत। मुखौटा ई जे कियो सम्प्रदायकेँ अगुऔत तँ कियो पछुऔत, मुदा रहत दुनू काते-कात। जँ से नहि तँ पंथ निरपेक्ष जीवन शैली छिऐ आकि भाषण..? जँ जिनगी भाषण बनि जाए आ लोक नै भँसिअए तँ भाषणे की भेल। कियो जातिक ढोल पीटि सम्प्रदाय छिपबैए तँ कियो ओकरे उजागर करैए, मुदा रहैत अछि दुनू अगले-बगले। खाएर जे हौ, मुदा छी तँ ओहेन पाबैन निसचिते, जेकरा कियो निष्ठा बुझि करत आ कियो पाबती बुझि करत, तँ कियो खेल बुझि खेलाएत। खेल बुझब ई भेल जे देशक चक्की कोन दिस घुमए चाहैए, बामी आकि दहिनी...।

रंग-रंगक हवा-बिहाड़िक बात सुनि मोहन, दसम कक्षाक विद्यार्थी, ठाढ़ भऽ किलासमे बाजल-

“सरजी, ओना, पैछला भोँट नीक जकाँ मनो ने अछि, मुदा ऐबेर तँ बहुत गहमा-गहमी देखै छिऐ, से की?”

कुरसीपर बैसल शिक्षक-श्यामचरण मोहनक प्रश्न सुनि मने-मन

विचार करए लगला। प्रश्नकेँ छोट मानल जाए आकि नमहर। प्रश्न तँ बिनु ओर-छोरक अछि। देशक सरकार बनत। जे जन-जनसँ दुनियाँ धरिक सम्बन्ध बनबैक कड़ी हएत, तैठाम दसमा किलासक अबोध बच्चाकेँ केना बुझौल जाए। मुदा जँ शिक्षकक आगू बच्चाक प्रश्नकेँ अनदेखी कएल जाए तँ एकरा के उचित कहत...।

लगले मन बदललैन, नीक हएत जे मोहनेटा सँ नहि, आनो-आन बच्चा सभसँ आरो-आरो प्रश्न उठबाएब। जँ अपने उत्तर देब शुरू करब आ प्रश्नकर्ताक नजैरमे की हएत तैपर भऽ सकैए जे नजैर नै जाए, तखन दुधमुहाँ बच्चाक मुँह घीमुहाँ केना बनत? आ जँ नै बनत तँ अनेरे शिक्षक बनि बाल-बोधकेँ ठकै किए छिऐ।

शिक्षक आँखि खिड़बए लगला। जेना आँखिक जोतसँ तीर छिटकैत होइन तहिना रंग-रंगक उलटा तीर हृदयकेँ बेधए लगलैन...।

सोहन उठि कऽ बाजल-

“सरजी, अपन देश जनतंत्र छिऐ, तखन किए प्रधानमंत्री ‘के’ बनत से पहिने लोक गर्द करए लगैए?”

कुरसीपर बैसल श्यामचरण सोहनक प्रश्न नोट करैत बजला-

“बौआ, अखन सबाल अबैक समय अछि तँए तोहर सबाल कागतपर लिखि कऽ रखि लेलिअ। पछाइत बुझा देबह।”

सोहनक प्रश्नक दर्ज सुनि भागेसर उठि बाजल-

“सरजी, लोडस्पीकरपर प्रतिबन्ध लगि गेल अछि, मुदा गाड़ीक-गाड़ी बाजा बाजि रहल अछि। से एना किए अछि?”

मुस्की दैत श्यामचरण बजला-

“किए अछि, किए नै रहत, ई विचारणीय प्रश्न छी। हमर संसद तँ यएह भेल, तोहीं सभ ने काल्हि पटना-दिल्लीक संसदोमे बैसबह, कानूनो बनेबह आ कानून बना लागुओ करबह।”

श्यामचरणक विचार सुनि सौंसे किलासक विद्यार्थी थोपड़ी बजबए

लगल। जेना देव मन्दिरमे बैसल भजनमे लीन भक्त थोपड़ी बजबैत बिसैर जाइए जे भजनक कड़ी कखन खतम भेल। किछु गोरे थोपड़ी बन्नो केलक आ किछु गोरे बजैबते रहल। थोपड़ीक स्वागत पाबि दुनू हाथसँ बच्चाक थोपड़ी बन्न करबैत श्यामचरण बजला-

"आइ भरि प्रश्न रखैक छह, काल्हि सबहक बीच वाद-विवाद करेबह, जँ समय बँचत तँ काल्हिये नहि तँ परसू, छुटल-बढ़ल सभ सबालक रस्ता बुझा देबह। अखन एतबे बुझि लएह जे साम्राज्यवादी जालमे फँसल जा रहल छी।"



तिथि: 24 मार्च 2014, शब्द संख्या: 515

सिरमा

बङ्गालक शान्ति निकेतनसँ तीन दिन पहिनहि आएल बारह बर्खक मुरारी बाबा-जगदम्बक संग तेना घुलि-मिलि गेल जेना बाँसक पोर मिलल रहै छइ। ओना, गाममे बाबा छोड़ि दोसर कियो नहि, कारण रहै बङ्गालमे रहने जहिना घेरामे पड़ल गाछ ओतबे दूर कुदै-फनैए, तहिना मुरारीकेँ अनभुआर समाजक बीच गामे अनभुआर भऽ गेल रहइ। सात बर्खक पछाइत मुरारी माए-बापक संग गाम आएल। बाबा लेल देहक वस्त्रक संग ओछाइन-बिछाइन सेहो अनलक अछि। सिरमाक संग चद्दैर, जाजीमक मोटरी नेने मुरारी जगदम्ब लग पहुँच बाजल-

“बाबा, पुरनाकेँ बदैल दियौ, सभ किछु नवका अनलौं अछि।”

‘पुरनाकेँ बदैल दियौ नवका अनलौं अछि।’ सुनि जगदम्बक मन ठमकलैन। की नवका अनलौं? रूइयाक मोटका सूत बदैल मेही-चिक्कन सूतक वस्त्र आकि पेट्रोलियमक? मुदा एक तँ गामक अपरिचित बच्चा, दोसर दायित्वो तँ बनिते अछि जे जे नै बुझै छै ओ बुझा दिऐ। मुदा बुझबैयोक तँ दू रस्ता छै, एकटा छै जे मुँह-मुँह मुख बनबैत मुखधारा जकाँ बोहि जाइए, आ दोसर अपन इतिहास तँ सभ अपना पेटमे रखने अछि। तहूमे सिर तरक सिरमा...।

जगदम्ब बजला-

“बाउ मुरारि, अपना जनैत तँ नीके जानि अनने छह तँए बदलबे करब, मुदा..?”

कहि माथ तरक सिरमा उठा भुण्डी छिटका देलखिन...।

पाँच तह झोराक खोलमे एक-एकटा फाटल चद्दैर, धोती, लुङ्गी, गमछा। पुरान लुङ्गीक झोरा...।

शान्ति निकेतनक विद्यार्थी मुरारी। धोती, चद्दैर, लुङ्गीकेँ तँ परेख गेल मुदा गमछा बेर भोतिया गेल। भोतिया ई गेल जे बङ्गलिया ढाठी छी आकि छपरिया..?

तैबीच मुरारीक मनमे उठि गेलै जे कनी गलती भेल। पहिने पुछि नै लेलिऐन। खाएर जे भेल मुदा सिरमा बदैल सिरमा लितैथ आकि खोलि कऽ आगूमे पसारि देलैन। जखन पसारि देलैन तँ बाल-बोधकेँ बोधबो ने करता। तँए चुप। पाँचो तह लुङ्गीक खोल खोलैत जगदम्ब बजला-

"बौआ, जे लुङ्गी फटि जाइए ओकर सिरमो खोल बना लइ छी आ रूमालो बना लइ छी, तँए पाँच तह अछि। सालमे एकबेर जुड़शीतल दिन खीचि कऽ खोलो सुखा लइ छी आ पेटमे जे देने छी तेकरो रौद लगा लइ छी।"

कोनो नव जगहपर सभ एके रंग नव थोड़े रहैए, जे पहिनेसँ जड़ि खोदिया नेने रहल ओ 'गुलियाएल नव' भेल आ जे नै खोदने रहल ओ 'छेहा नव' भेल। तीन दिनमे मुरारी जगदम्बक बीच केतेको रंगक सबाल-जवाब भऽ गेल छल, सिरमा खोलकेँ एकठाम सैंत चद्दैर उठबैत जगदम्ब बजला- "बौआ, जइ दिन ई चद्दैर कीनिलौं, ओही दिन एकटा केसमे सजा भऽ गेल, दुनूक बीच पहिल भेँट जहलेमे भेल। अखनो मोन अछि जे निरदोस चद्दैर संगे जहल कटलक, केना बिसैर जेबइ.!"

सिनेह भरल जगदम्बक ममत्व-प्रेम देखि मुरारी चौंकन हुअ लगल। हुअ ऐ दुआरे लगल जे फाटल-पुरानक संग जखन एहेन प्रेम छैन, तँ किए ने पुछिये लिऐन।

बाजल- "बाबा, प्रेम कहलिऐ?"

उत्साहित होइत बाबा कहलखिन- "हँ-हँ, जे सालमे गाहीक गाही कपड़ा कीनत ओ केकरासँ प्रेम करत, प्रेम तँ ओ भेल जे जिनगी भरि प्रेमसँ संगे रहल। जीबैतमे जे रहल से तँ रहबे कएल जे मुइला पछाइतो

सिरमेमे रखने छी।”

मुरारीक पिता विश्वभारतीमे चतुर्थ श्रेणीक पदपर काज करै छैथ जइसँ मुरारीकेँ शिक्षा भेट रहल छइ। आन ठाम जकाँ नै जे शिक्षकक बेटा आ किरानी-चपरासीक बेटाक संस्कारपर चोट पड़ैत, किछु छी तँ आखिर विश्वभारती छी। दोसमुक्त संस्कार मुरारीक। बाजल-

“बाबा, जखन चद्दैरक इतिहास-बात कहिए देलिऐ तखन बँकियोहोक कहिये दियौ?”

मुरारीक सिनेह भरल शब्द सुनि जगदम्बक मन मोम जकाँ पिघलए लगलैन। हाथसँ धोती उठा पहिने फाट सबहक सीऐन गनलैन। सीऐन गनि बजला-

“बौआ, जहियेसँ धोती पहिरैमे नीक लागए लगल तहियेसँ फाटब शुरू भेल। मुदा बात दोसर दिस बहैक जाएत।”

बात ‘बहकब’ सुनि मुरारी बिच्चेमे बाजल-

“ईहो कीनने छिऐ?”

‘कीनब’ सुनिते जगदम्बकेँ मोन पड़लैन जहल, बजला-

“नहि, ई धोती जहलेमे देने रहए।”

‘जहलमे देने रहए’ सुनि मुरारीक मन भरैम गेल। भरैम ई गेल जे जहलोमे धोती दइ छइ! बाजल किछु ने। मुदा जगदम्ब बुझि गेला जे भरिसक जहलक बातमे भोतिया गेल।

बजला-

“बौआ, जिला भरिक लोक कोसी नहैर आ पैनबिजली-डैमक संग मैथिली भाषाक मांग करैत जहल गेलौं। पनरह दिन रखलक। सोल्हम दिन एक-एकटा धोती दऽ विदा केलक, वएह धोती छी।”

जगदम्बक पछुलका इतिहास मुरारीक मनकेँ झिकझोड़ि रहल छल। शिष्टाचारक लगाम ऐ तरहेँ कसि रहल छेलै जे किछु बाजि नै पाबि रहल छल। मुदा बिनु मुँह खोलनौं तँ अपन मनक फल नहियेँ खा सकै छी, तइले

मुँह खोलि अपन विचारक बात बाजहि पड़त...।

ततमताइत मुरारी बाजल-

“बाबा, जखन चद्दैर-धोतीक बात कहिए देलिऐ तखन लुङ्गियोँ-गमछाक कहि दियौ।”

मुरारीक बात सुनि जगदम्बक मन आरो-पतालक पानि जकाँ शीतल-स्वच्छ-सुअदगर बनि गेलैन। लुङ्गी-गमछाकेँ संगे उठबैत बजला-

“बौआ, ईहो जहलेक छी। अपन कीनल लुङ्गीक सिरमाक खोल छी आ जहलक लुङ्गीकेँ पेटभर देने छिऐ।”

सिरमा खोलसँ लऽ कऽ पेटभर धरिक सिनेह सिक्त इतिहास सुनि मुरारी थकथकाइत बाजल-

“बाबा, नवका सिरमा नै लेबै?”

पोताक टुटल आस देखि जगदम्ब बजला-

“हँ हौ, किए ने लेब! मुदा चारूक एक-एकटा कोण काटि नवकाक पेटमे भरि दहक, जाबे जीबैत रहब ताबे माथ टेकने रहब।”



तिथि: 31 मार्च 2014, शब्द संख्या: 757

झकास

सिरूआ पाबैनक तेसर दिन, पछिया हवा पच्छिमसँ मेघ-बादल अनलक। ओना, अपना ऐठाम बङ्गालक खाड़ीसँ बादल बनि मौनसुनी बरखा होइए, कहियोकाल पच्छिमसँ बर्फीली हवा चलि सेहो बरखा अनिते अछि। सएह भेल, मुदा बुन्न छोड़ि बरखा नै भऽ अदहा घन्टासँ खाली झकैस रहल अछि। ने सौन-भादोक बुन्न आ ने पूस-माघक पाला जकाँ, बीच-बिचौआ...।

दुआरपर बैसल घुरना काका खेती-बाड़ीक हिसाब जोड़ि रहल छैथ। जोड़ि रहल छैथ जे जँ अखन निम्मन बरखा होइत तँ मौसमे बदैल जाइत, नवका सालक खेतीमे हाथ लगि जाइत; से तँ नै भऽ रहल अछि मुदा तँए कि अकाजक भऽ रहल अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अनका जे हौ, अप्पन खेती तँ सुतरिये रहल अछि...।

घुरना कक्काक मन फुल-फुलेलैन। फुलाइते बकार फुटलैन-

“अमृत बरिस रहल अछि।”

एक बेर, दू बेर, बेर-बेर एके बात मुहसँ निकलैत रहलैन-

“अमृत बरिस रहल अछि!”

हाइ स्कूलक दसम् किलासमे पढ़ैत रघुवीर दलानक ओसारक दोसर भागमे कुरसीपर बैसल पिताक बात बेर-बेर ‘अमृत’ सुनि बाजल-

“काका, देखै छी जे होइए झकास आ अहाँ कहै छिऐ अमृत बरिस रहल अछि, से की? तेहेन जरल माटि अछि, खेत-पथारक जे भीजबो ने करत।”

रघुवीरक बात सुनि घुरना काका चुपे रहला। किछु बजैसँ पहिने तारतम्य करए लगला जे रघुवीर कोनो अनुचित तँ नहियेँ कहैए, मुदा अपन जे खेती अछि, सजमैनक खेती, तइले तँ अमृत बरसिये रहल अछि। काल्हि दमकलसँ पटेलौं, निच्चे-निच्चे पानि चलल जइसँ जड़ियो, माटि सटल लत्तियो आ पातो तँ पटबे कएल, मुदा माटिसँ ऊपर मुड़ियो आ ठाढ़ भेल पातो तँ ओहिना, बिनु पानिक रहि गेल जे ऐ झकाससँ भीजि रहल अछि। अनका जे हौ, मुदा अपना-ले तँ अमृते बरिस रहल अछि...।

बजला-

“बौआ रघुवीर, खेतो आ खेतियो की सबहक एके रंग अछि जे एके रंग नीक-बेजए हएत। रंग-रंगक खेतियो छै आ रंग-रंगक लाभो-हानि।”

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ नै बुझि सकल, तेकर कारण भेल जे ओ खेतकेँ खेते आ फसिलकेँ फसिले बुझैए। ई नै बुझि पबैए जे फसिल-फसिलकेँ पानिक खगतो कम-बेसी होइ छइ। कोनो एहेन होइ छै जे डाँर लग तक पानिमे ओफा करैए तँ कोनो एहेन होइ छै जे जड़ि-पनियामे ओफा करैए आ कोनो एहनो होइ छै जे ऊपरेसँ छिच्चा पाबि ओफा करैए आ तहिना कोनो एहनो होइ छै जे जड़िये-जड़ि पटौलासँ ओफा करै छै...।

फेर दोहरबैत रघुवीर बाजल-

“काका, खेती तँ खेती भेल, तखन मौसमक असैर तँ एके रंग ने सभकेँ हएत।”

रघुवीरक प्रश्नक ओझरीकेँ सोझरबैत घुरना काका बजला-

“बौआ, अनकर बात छोड़ह। अपन देखहक। काल्हि सजमैनक खेत पटौने छेलौं किने, माटि तँ गिलगर भइये गेल अछि, मुदा ऊपरका पात आ मुड़ी भीजबे ने कएल। अछैते नमीए ओ पियासल रहि गेल। ओना, लत्तीक माध्यमसँ हाल पीबे करत मुदा अपना मुहेँ पीलासँ जे पानिक तृष्णा मेटाइ छै से थोड़े हएत। जे झकास झकैस रहल अछि ओ मुँहमे अमृत दऽ रहल अछि। जेते बाढ़ि आठ दिनमे हएत तेते एके दिनमे

हएत। पाँचे दिनमे देखियहक जे दोबरा-तेबरा जाएत। जखने लत्ती बढ़ियाएत तखने ओइमे गिरहे-गिरह कनोजैरो चलत, फुलो चलत आ फुलबतियो चलत। यएह ने भेल अमृत बरिसब।"

अपना जनैत घुरना काका रघुवीरकेँ बुझबैत कहलैन मुदा बाल-बोध रघुवीर नीक जकाँ तैयो ने बुझि पेलक। बाजल-

"काका, पानि तँ पानि भेल, अमृत केना भेल?"

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे तामस नै भेलैन, भेलैन ई जे अखन रघुवीर बाल-बोध अछि, पानिक तरी-घटी नीक जकाँ नै बुझि रहल अछि...।

बुझबैत कहलखिन-

"बौआ, देखबहक जे स्वाति नक्षत्रक बुन्न सितुआक मुँहमे पड़ने मोती, बाँसक मुँहमे पड़ने वंशलोचन, केरा मुँहपर पड़ने करपूर आ साँपक मुँहमे पड़ने बीख बनि जाइए। रहैए एके चीज मुदा जगह-जगहपर बदैल जाइए।"

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ ने बुझबे कएल आ ने सोलहन्नी नहियेँ बुझलक। अधखिज्जू जकाँ अदहा-छिदहा बुझबो केलक आ अदहा-छिदहा नहियेँ बुझलक। बाजल-

"काका, एना किए होइए?"

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक रघुवीर ने नीक जकाँ बुझबे केलक आ ने नहियेँ बुझलक। बुझबो तँ असान नहियेँ अछि, ओझराएल तँ ऐछे...।

सोझरबैत बजला-

"बौआ, जहिना गाम-गामक पानि आ बोल किछु ने किछु बदलिये जाइए तहिना ने मासो-नक्षत्रक अछि।"

अखन धरि रघुवीर सालक पेटमे मास आ मासक पेटमे नक्षत्र बुझै छल, ई नै बुझै छल जे नक्षत्रक अपन हिसाब छै आ मासक अपन। तैसंग

मलमास भेने सालोक सीमा-सरहद घुसैक-फुसैक जाइए...।

बाजल-

“एना किए होइए काका जे जखन एके पतालक पानि आ जमीनक वाणी होइए तखन बदैल किए जाइए?”

रघुवीरक प्रश्नकेँ गहींरतासँ लैत घुरना काका बजला-

“बौआ, एके सुरूज रहैत कहियो उत्तरायन तँ कहियो दछिनाइन भऽ जाइए। जइसँ मौसममे कहियो बदलाहट आबि जाइए। मौसम बदलने प्रकृतिक रूप-रंगमे सेहो बदलाउ आबिये जाइए।”

घुरना कक्काक उत्तर पाबि रघुवीर आरो ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एकटा पृथ्वी एकटा सुर्ज अछि तखन किए एना भऽ जाइए..!

बाजल-

“सुर्जक जगह बदलने, दुनियाँक रूपे-रंग बदैल जाइए?”

घुरना काका- “हँ, बदैलते अछि। सुर्ज अपन सीमामे चलैए, धरती अपन सीमामे चलैए, तहिना आरो आरोक अछि। जइसँ सबहक आड़ि-धुरमे सेहो बदलाउ आबि जाइ छइ। तहूमे अपना ऐठाम तँ आरो बेठेकान अछि। सालक बीच मौसम चलैए, मौसमक बीच मास चलैए आ मासक बीच नक्षत्र आ दिन चलैए।”

पिताक बात सुनि रघुवीर, बिना किछु सोच-विचार केने पुछलकैन-

“तखन तँ सभ सालक एके रंग मौसम होइत हेतइ?”

रघुवीरक सोझ प्रश्न सुनि घुरना काका बजला-

“यएह छी दुनियाँक पेंच। जइसँ सभ किछु ठेकनाएलो रहैए आ बेठेकनाएलो भऽ जाइए।”

रघुवीर-

“की ठेकान आ की बेठेकान?”

घुरना काका- “ठेकान ई जे जखन सुरूज दछिनाइन रहैए तखन

ओइठामक मौसममे गरमाहट आबि जाइ छै आ दूर भेने उत्तराइनमे ठन्ढाहट आबि जाइ छइ। जइसँ विपरीत मौसम बनि जाइ छइ। विपरीत मौसम बनने विपरीत रूपो-रंग बनि जाइए। तहूमे अपना ऐठाम तँ मासोक सीमा-सरहद गजपटे अछि। सीमा गजपट भेने रीतुओ गजपटाइए जाइए।"

रघुवीर-

"से की?"

घुरना काका-

"देखहक, अपना ऐठाम तीस दिनक मास तिथिक अनुरूप सेहो चलैए, ओना, तहूमे घटी-बढ़ी भइये जाइ छइ। दोसर सकराँइतक हिसाबसँ सेहो चलैए। ओना, सालमे बारहेटा अमावसियो, पुरनिमो आ सकराँइत सेहो होइए मुदा नक्षत्र सत्ताइसटा भऽ जाइए। जेकर बेठेकान हिसाब भऽ जाइ छइ। कोनो सोलह दिनक तँ कोनो तेरहे दिनक भऽ जाइए। तहिना पुरनिमो सकराँइतिक अछि आ रीतुक सेहो।"

पिताक बात रघुवीर कनी-मनी बुझबो केलक आ कनी-मनी नहियोँ बुझलक। बाजल-

"रीतु केना बेठेकान अछि?"

बेटाक जिज्ञासासँ घुरना कक्काक मन फुदकलैन। फुदैकते बजला-

"बौआ, सरोसती पूजा अमावसिया-पुरनिमा मासक हिसाबसँ बीस माघ कैँ होइए जइ दिनसँ वसन्तक आगमन मानल जाइ छइ। जखन कि सालमे छहटा रीतु भेने चैत-बैशाखकैँ वसन्त सेहो मानल जाइए। तोहीं कहऽ, जे दस दिन माघ भेल, तहूमे सकराँइतिक मास केमहर अछि तेकरा छोड़ि कऽ, मास दिन फागुन भेल, तेकर पछाइत चैत भेल आ चैतक पछाइत बैशाख, भेल?"

रघुवीर-

"हँ, से तँ भेल।"

मुस्की दैत काका बजला- “सोझ हिसाबे तीन मास दस दिनक वसन्त रीतु भेल।”

जहिना कोनो गबैयाकेँ ध्वनि आ शब्द-लहैर केतौ अनायास भेटने मन मन्दिरमे बेर-बेर घूँघरूक चालि पकैड़ रमकए चाहैए, तहिना रघुवीरकेँ सेहो वसन्तक गीत मनमे उमकल। संगीतमय दुनियाँमे केतौ केकरो प्रेम रस भेटैत तँ केकरो बिरह भेटैत, केकरो शान्ति रस भेटैत तँ केकरो अशान्ति, ई तँ अपन-अपन नजैर आ नजैरक पानिक अनुकूल भेटै छै, जे जेना तहिना रघुवीरकेँ सेहो भेटल। जहिना गुलाबक पहिल कलिक कलियाएल फूलक सौन्दर्य आ साल-सालक फुलाएल गाछक फूलक शोभामे होइत तहिना रघुवीरकेँ सेहो भेल। बाजल-

“काका, कनी उघारि कऽ वसन्त गीत कहियौ?”

रघुवीरक पिता घुरना काका। गामक अधिकांश लोक हुनका काका कहैन जइसँ अपनो बेटा-बेटी कक्के कहै छैन। ओना, काका ‘पित्तीकेँ’ कहल जाइ छै, जे पितासँ छोटो आ पैघो होइ छैथ, मुदा घुरना कक्काक मनमे से नै रहैन। हुनका मनमे रहैन जे जँ घरसँ बाहर धरि एकबट्ट सभ कहैए तँ नीके भेल किने। मुदा तहूसँ बेसी नीक ई ने भेल जे जहिना अपन बेटा-बेटी तहिना टोलो-पड़ोस आ समाजोक। तखन तँ अपन कर्तव्य बनिते अछि जे सभकेँ एक्के नजरिये देखिऐ। रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना काका बजला-

“बौआ, जइ दिन वसन्तक आगमन होइए, तइ दिन सरोसती पूजा आ लछमी पूजा सेहो होइए। मुदा पुजेगरी बदलने रंग-वेदरंग भऽ जाइए। खाएर जे हौ, जखन वसन्तक बाट पुछलह तँ कहिये दइ छिअ।”

रघुवीरकेँ प्रश्नक जड़ि बुझैक ललक मनमे जोर मारिते रहइ! बाजल- “काका, अनेरे अहाँ केतए-सँ-केतए बोहिया जाइ छी। कनी सरि भऽ कऽ सेरिया दियौ।”

बेटाक मनक भूख जेना घुरना काका बुझि गेला। बाल-बोधक भूखकेँ जँ माए-बाप नै बुझै तँ दोसर आन के केकरा बुझत। बुझबो केना

करत, सभकेँ तँ अपने-अपने छै...।

बजला-

"जइ दिन सरोसती पूजा होइए ओही दिन वसन्तक आगमन सेहो रंग-अबीर उड़बैत होइए। होइए आकि नै होइए?"

तालमे ताल मिलबैत रघुवीर कहलकैन-

"हँ से तँ होइते अछि।"

जहिना कथ्थकक हूँहकारी पाबि कथ्थकर कथनकेँ कथियबैए तहिना घुरना काका बजला-

"बौआ, बीस माघकेँ जइ दिन सरोसती-लछमीक आवाहन होइ छै तही दिन कड़कड़ाएल जुआनी जाड़क सेहो रहैए। ओस बदैल पाला, पले किए, बरफाएल पाला दिन-राति झहड़ैए, वएह ने कुहि फाड़ैत अदहा फागुनमे शिवरातिक रूप पकैड़ सिरूआ दिन भाँग-धुथुर ओढ़ि नचबो करैए आ चैतावरक संग वसन्त आ वसन्तक संग बरहमासासँ कदमक गाछक मचकीपर झूलैत गेबो करैए?"

रघुवीरक भक्क जेना दिशांस लगलकेँ होइ छै, तहिना वसन्तक बीस माघसँ तीस बैशाखक डोर पकड़ा गेल। बाजल किछु ने मुदा पिताक मुस्कीमे अपन मुस्की जोड़ि नजैर-मे-नजैर मिलबैत मुस्कियए लगल।

गामक मात्र सवा बीघा जमीनक हिस्सेदार घुरना काका, जेतबे अपना जमीन छैन तहीमे अपन परिवारकेँ समाजक बीच जीवित रखने छैथ। बाल-बच्चाकेँ अपन ओकाइत देखबैत कहै छथिन-

"बौआ, अपना ओते ओकाइत नै अछि जे बड़का-बड़का एजुकेशन इंसिच्यूटमे पढ़ेबह, मुदा पढ़ैसँ रोकबो तँ नहियेँ करबह। तखन एते तँ कहबे करबह जे अदहा समय अपन उन्नैतक लेल आ अदहा परिवारक लेल उपयोग केने जिनगीक पाठ जरूर पढ़ि लेबह।"

'जिनगीक पाठ' सुनिते रघुवीरकेँ जेना मनपर भार पड़ल। बोझ तर दबाएलक बोल जहिना दबाइत स्वरमे फुटैए तहिना रघुवीरक दबाएल स्वर

फूटल- “जिनगीक की पाठ?”

हँसैत घुरना काका बजला-

“ऐ धरतीपर सभ कनैत आबि रंग-मञ्चपर ठाढ़ होइए, तइमे कियो कनैत जिनगी बितबैत कनैत उसरन करैए आ कियो मुस्कियाइत मुस्कान भरैत मुरली टेरैत विसरन करैए। यएह भेल जिनगी आ जिनगीक पाठ।”

पिताक बात सुनि रघुवीर आएल-गेल पाँतिकेँ पँतियबैत अपन सरूप देखए लगल। मुदा जननिहार आ बिनु जननिहारक बीच जहिना चुपा-चुपी होइ छै तहिना रघुवीरो आ घुरनो कक्काक बीच चुपा-चुपी पसैर गेल।



तिथि: 26 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 1595

सजमैनियाँ आम

जेठ मास। हथिया-चितरा नै बरसने आन जेठसँ शक्तिगर रौद। तीन बजे करीब बेरुका पहरमे एक चिड़की मेघ उठल, ने बेसी पसरल आ ने बेसी चतरल, हवाक झोंकमे पानि-पाथर, ठनका सभ बरिस गेल। ओना, बिहाड़िसँ केते गोरेक घरो खसल आ टाटो-फरक उजरल, केतेकैँ गाछो-बेख खसल मुदा चरितर बाबाक तँ नाश भऽ गेलैन। नाश ई भेलैन जे एक तँ फूसि घर तैपर घरक पजरेमे तेहेन सजमैनियाँ आमक गाछ लगौने छैथ जे ऊपर ताकि ठनका खसल, खसल तँ गाछक मुड़ीपर मुदा किछु निच्चाँ होइत-होइत छिछैल कऽ घरपर चलि आएल, गाछक तँ मुड़ियेटा टुटबो केलैन आ जरबो केलैन, मुदा खढ़क घर तैपर झोंकगर हवा पाबि घरक सभ किछु जारि देलकैन। मनुखक जान बँचलैन तँए बेसी गमगीन नै भेला। हाथ-पएर रहत फेर बनि जाएत। मुदा से बात नहि, अपने चरितर बाबा बाड़ीमे दारीम गाछक जड़ि पटबैत रहैथ, प्रकाश स्कूलमे रहए। दुनू परानी जगरनाथ बिआहक नौत पूरए गेल रहए।

दस मिनट बीतैत-बीतैत सभ शान्त भऽ गेल! हवो-बिहाड़ि पड़ा गेल, पानियोँ पड़ा गेल आ एकेटा ठनका जे खसिये पड़ल...।

चरितर बाबाक घर ठनकामे खसलैन आकि जरलैन, अखन धरि यएह घोंघौज लोकक बीच चलैत रहए। मुदा मनुखक नोकसान नै भेल तँए सभ खुशी। घर-दुआर आकि धन-सम्पैत मनुख नै ने छिऐ, तखन अनेरे कानियेँ-खीज कऽ की हएत, तँए चरितर बाबाक ठनका खसल घरपर गाममे कियो नोर बहौनिहार नहि। ठनकाक चर्च गाम-घरमे पसरल, प्रकाशो स्कूलसँ आएल। कुमरमक दिन रहने बेटा-पुतोहु सासुरे-नैहरमे

रहल। केना नै रहैत, तीन जेठक मिलानक विधो-विधान ने दोसर होइ छै, जे धी-जमाए छोड़ि दोसर कइए के सकैए। तँए जगरनाथ दुनू परानीकेँ अपन घर-दुआरक सुधिये ने रहलै। पहिल साँझ। सूर्यास्त भऽ गेल मुदा दिन जकाँ। प्रकाशकेँ स्कूलसँ अबैमे बिलम भेल। बिलमो केना ने होइत एक तँ गरम समय दोसर झाँट-बिहाड़िक सम्भावना। स्कूल तँ स्कूले छी, जहिना नियमित जिनगीक सूत्रधार डॉक्टर अपने अनियमित जिनगी जीब बाहवाही करै छैथ तहिना ने विद्यालयोक विद्याध्ययन अछि। कोन समय केते गरमी पड़ै छै तइले थर्मामीटरक खगता होइते छइ। आँगनमे बाबा आ पोता अपन बेथा-कथाक चर्च शुरू केलैन...। प्रकाश कहलकैन-

"बाबा, ई केना भेल जे थोड़बे दूर गाममे पानि भेल, बिहाड़िसँ घर-दुआर आनो गाममे उजरल मुदा ठनका अपने घरपर किए खसि पड़ल?"

पोताक प्रश्न सुनि चरितर बाबा मिसियो भरि विचलित नै भेला, मनसँ तेना हटि गेल रहैन जेना किछु भेबे ने कएल। जेठ मास छिऐ, लोक गाछो-बिरीछक तरमे आ दुबियोपर दिवस गुदस कइये लइए, तइले अनेरे मनकेँ रोगाएब नीक नै...। चरितर बाबा बजला-

"बौआ, ओना, मेघ केते रंगक अछि मुदा अखन से नै दुइए रंगक मेघक बात बूझह, एकटा होइ छै सघन, जे दूर-दूर तक पसरल रहल। दोसर होइ छै कोदारि कट्टा, जे रूइयाक फाहा जकाँ टुकड़ी-टुकड़ी बनैए। ओहू एक-एक टुकड़ीमे एहेन शक्ति छै जे जँ ओकरो अनुकूल समय भेट जाए तँ सभ किछु कऽ सकैए। सएह भेल। एक चिड़की मेघ उठल। देखलिऐ। मुदा बिसवास नै भेल जे बरिसत। जेठुआ समय, रंग-रंगक तँ हवा-बिहाड़ि चलबे करत। जँ बिसवास होइत तँ पटैबतौं किए। मुदा जेते दूरक गड़े उठल तइमे अपने सजमैनियाँ गाछ नमहर छल, ओकरे ठनका लपैक लेलकै। ओ तँ आगि छीहे, सभ किछु जरि गेल।"

प्रकाश-

"एहेन गाछ घर लग किए रखने छी?"

परिवारक प्रति जिज्ञासा देखि चरितर बाबा बजला- "नमहर

गाछपर ठनका खसब उचिते भेल, जे दैवी भेल। मुदा समय-साल केहेन भऽ गेल अछि जे देखिते छहक कियो एक्कोटा खाए देतह? दुइयो-अढ़ाइ साए जँ फड़ि जाइए तँ कहुना आमक मास आम खा काटि लइ छी।”

जेना ओझा-गुनी गुनगुनाइत गोसाँइ खेलए लगैए तहिना दुनू गोरे अपन-अपन मन-मनतर पढ़ए लगला...। हाइ स्कूलक विद्यार्थी प्रकाश, नव फूल तकैक जिज्ञासा। आइक युगमे ठनका रोकैक ओरियान लोक घरमे लगा लइए, मुदा गाछकेँ तँ खाली ठनके नै हवा-बिहाड़िमे खसैक सम्भावना सेहो अछि..! चरितर बाबा मने-मन गद-गद होइत रहैथ, गदगदाइक कारण ई रहैन जे कोढ़िया बरद जकाँ हरे देखि डेराएब तँ बड़का-बड़का इञ्जन के चलौत..?

पहाड़क दिन तँ वएह ने नीक जकाँ बुझि सकैए जे पर्वतिया हएत।



तिथि: 04 मई 2014, शब्द संख्या: 611

गरदैन कट्टा बेटा

आमक गाछीसँ घुमि आबि लाल भौजी ओछाइनपर पड़ल बेटाकेँ कहलखिन-

“गरदैन कट्टा कहीं-के, सबेर उठि गाछी-कलम जेता से नहि, तँ दुखताह जकाँ ओछाइनपर पड़ल छैथ!”

माइक बात सुनि ललबबुआक तँ नीन टुटि गेल, मुदा मन भकुआएले रहइ...।

भकुआएले मोने बाजल-

“कथी ‘गरदैन कटलियौ’ जे भोरे-भोर बजै छँह?”

ओना, ललबबुआ गाढ़ नीनमे सुतल जहिना कियो माया विहीन आत्मा-परमात्मासँ साक्षात्कार करैत मगन होइए, तहिना छल।

लाल भौजीकेँ अचन्दाज भेलैन जे जेठ मासक पुर्बाक लहकीमे दिन-दुनियाँ बिसैर ‘पड़ल’ अछि...।

मुदा से नहि, ललबबुआ ‘पड़ल’ नै छल गाढ़ नीनमे ‘सुतल’ छल। जे माइक कर्कश आवाज सुनि उठल।

लाल भौजीक तुरुछल मन आरो बेटाक बात सुनि मुरैछ गेल! मुरछैक कारण भेल जे गाछीक जे आम खसल से सभटा आन बीछिनिहार सभ बीछि लेलक। गोटि-पंगरा गुलाबखासमे तोड़ियो नेने छेलइ। ओना, अपना मनमे ईहो उठैत रहैन जे जेना भोरगरे नीन टुटल तेना जँ गाछीए गेल रहितौं तँ एना नै होइत, मुदा मनक जवाब मनेमे उठलैन, सुति उठला पछाइत लोक अपन आ अँगना-घरक काज सम्हारि गाछी-बिरछी, बाध-

बोन दिस जाइए आकि पहिने घरक देवता छोड़ि बाहरे पूजए जाएत...।

बेटाक जवाब सुनि लाल भौजी बजली- "हमर की गरदैन कटलैं, कटै छैं अपनो आ दुनियोकेँ!"

माइक पहिल प्रश्न 'गरदैन कट्टा' सुनि ललबबुआकेँ जेते तामस ओछाइनपर पड़ल-पड़ल भेल तइसँ बेसी दोसर प्रश्नसँ उठलै। उठबो उचिते छेलै, 'गरदैन कट्टा' तँ लोक अछिए। कियो धानक गरदैन छोपि अनैए तँ कियो घासक, तइले कियो दुखे किए करत। मुदा 'हमरो-अपनो आ दुनियोँक कटै छीही' सुनि ललबबुआ ओछाइनेपर उठि बैसैत बाजल-

"सबहक नाओं जे कहै छँह, से सबहक गरदैन हमरे हाथमे अछि जे कटै छिऐ?" -बजैत आँखि मीड़ैत उठि कऽ ठाढ़ भेल।

बारह बर्खक ललबबुआ, जुआन तँ नै भेल, ओ तँ चौदह बरख पुरला पछाइते हएत, मुदा ढेरबा तँ भइये गेल अछि। ओना, पोखैरमे रंग-बिरंगक माछ रहितो जहिना घाटपर डेढ़बा माछ आबए लगैए, से तँ भइये गेल अछि।

पैछला साल पतिक मुइला पछाइत लाल भौजीक मन टुटैत परिवार आ घटैत दिन देखि किछु कड़कड़ा तँ गेबे कएल छैन, जइसँ 'नीक-बेजए' विचारैमे किछु आगू-पाछू भऽ जाइ छैथ, पति तुल्य बेटाक धुआ-काया देखि मन भ्रमित भइये जाइ छैन। तहूमे दस सालक गुलाबखास आमक गाछमे निचला आम टुटि गेल छेलैन। घरक काज सम्हारैमे देरी भेने अपने जाइमे पछुएली जइसँ आन बीछिनिहार तोड़ि नेने छेलैन। जाबे पति जीबै छेलैन, ललबबुआ बेटाकेँ कोनो धनि-फिकिर रहबे ने कएल। सबेरे उठि अपने गाछी दिस चलि जाइ छला।

ढेरबा ललबबुआकेँ ठाढ़ देह देखि जेना लाल भौजीक मन पसीज गेलैन। बजली- "बौआ, आब घरक पुरुख तँ तोहीं ने भेलह। तोरे ने सबेर उठि बाग-बगीचा, बाध-बोन देखए पड़तह?"

माइक बात सुनि ललबबुओक मन सहमल। मुदा, मनक प्रश्न- 'गरदैन कट्टा' मनमे हूमैरते रहल। सुति कऽ उठिते जँ मन ओझरा गेल तँ

भरि दिनक काज केहेन हएत! मुदा दोहरा कऽ किछु बाजल नहि।

लाल भौजीकेँ मोन पड़लैन जे बेटाक प्रश्नकेँ जँ सेरिया कऽ बुझा नै देब तँ अखुनका उमेरक ठेकाने कोन। केमहर वौआ जाएत तेकर कोन ठीक अछि। कहलखिन-

“बौआ, जाबे बाबू छेलखुन ताबे ओ घरक-बाहरक काज सम्हारै छेलखुन आ हम अँगना-घरक सम्हारै छेलौं। मुदा आब कि कोनो ओ छैथ, जिनका भरोसे जीबह। आब जँ अपने नै करबह तँ काज गिरैत जेतह।”

‘काज गिरैक’ अर्थ ललबबुआ नै बुझि पेलक। बाजल-

“की घरक काज गिरत?”

लाल भौजी बजली-

“बच्चा, जइ घरक काज जेते आगू हएत ओ ओते आगू मुहेँ ससरत आ जइ घरक काज जेते पछुआएत ओ ओते पाछू मुहेँ ठसकत। ऐ विचारकेँ नै बुझबह तँ जिनगीक पार लगतह। दुनियोँक आ मनुखोक जड़ि एतै अछि। जँ नीक करबह तँ अपनो, परिवारो, समाजो आ दुनियोँक नीक हएत, जँ नै करबह आ अधला करबह तँ घरसँ बाहर धरि सबहक गरदैन कटत।”



तिथि: 10 मई 2014, शब्द संख्या: 571

पल भरि

तिरसैठम बरख गमौला पछाइत शिवजी बाबूक मन गरानिसँ गड़ि रहल छैन। जिनगीक संग दुनियोँ अन्हार जकाँ लगि रहल छैन। केकरा कहथिन आ कहलो पछाइत के बिसवास करतैन जे उवाह-उवाहमे जिनगीक तिरसैठ बरख बोहि गेलैन। समाजक केते लोक ऐ बातकेँ बुझि रहल छैथ जे जइ आशामे अखन धरि आस लगौने छेलौं ओ सोलहन्नी निआस बनि निकैल गेल! ओना, बेसी लोक तँ यएह ने बुझि रहल छैथ जे कौलेजक प्रोफेसर छैथ, नीक दरमाहाक नोकरी करै छैथ, आ नोकरी छूटलो पछाइत तेते पेंशन भेटतैन जे जिनगीमे कहियो कोनो अभाव नै हेतैन, मुदा भेल की..?

असकरे अपन कोठरीमे बैस पोथीक अलमारीपर आँखि गड़ौने शिवजी बाबू मने-मन अपन हूसल जिनगीपर नजैर दौगा रहल छैथ। जेते नजैर दौग रहल छैन तेते मन विषादसँ बिसबिसा रहल छैन। बिसबिसेबो केना ने करतैन, 'नीक नोकरी' 'नीक दरमाहा' केतए गेल?

सौनक घट जकाँ दुनू आँखि नोरसँ बोझिल भऽ जिनगीक बीतल दिन देखि रहल छैन। अनायास बकार फुटलैन-

"धारक पानि जहिना धारे-धार बहैत समुद्रमे समा जाइए, तहिना ने अपनो जिनगीक धारक भेल!"

असगर कोठरीमे रहने कियो दोसर तँ नै सुनि पौलक मुदा अपन मनक 'सोग' जे मुँह होइत निकलल, ओ दुनू कान तँ सुनबे केलक...। फेर मन घुमलैन। भने कियो आन नै सुनलक। जँ सुनबो करैत तँ लाभे कथी होइतै। यएह ने जे जहिना अपन जिनगी फुर्र-फाँइमे गेल तहिना ओकरो

जइतै...।

तैंतालिस बरख पहिनहि शिवजी सी.एम. कौलेजसँ एम.ए. पास केलैन। औनर्सोमे नीक अङ्क आ एम.ए.मे सेहो नीक अङ्क भेटल छेलैन। शुरूहेसँ माने हाइए स्कूलसँ मनमे बैस गेल रहैन जे एम.ए. केलाक पछाइत प्रोफेसर बनब। परिवारक स्तर- शिक्षा संग अर्थ- केँ उठाएब। मुदा भेल की?

गामक सम्पन्न परिवारमे शिवजीक जन्म भेल। पिता नीक खेतिहर, पनरह बीघा खेतो छेलैन। राधा गोविन्द पढ़ल-लिखल तँ बेसी नहियेँ छला मुदा खेतीक सभ लूरिसँ सम्पन्न छलाहे। समटल परिवार तँए बेटाक विचारक विपरीत विचार कहियो बेटाक सोझ नै रखलैन। मनक धरणो छेलैन जे बच्चाकेँ माने बेटा-बेटीकेँ जेते स्वतंत्र रूपेँ जिनगी ठाढ़ करैक समय देल जाएत, ओते नीक बनत। तहूमे कहियो बेटाकेँ ने स्कूल-कौलेजमे फेल होइत देखलैन आ ने कहियो ताड़ी-दारू पीबैत देखलैन आकि सुनलैन। जइसँ मनमे आरो बेसी बिसवास बनले रहलैन।

एम.ए. केलाक साले भरिक पछाइत गामक बगलेक गाम-सोनपुरमे कौलेज खुजल। कौलेज बनौलैन सोनपुरेक एकटा सुभ्यस्त परिवारक विष्णुदेव। तीन भाँइक भैयारीमे विष्णुदेव सभसँ जेठ। अस्सी बीघा जमीन। दोसर भाए छेलखिन, जे नि:सन्ताने मरि गेला। तेसर भाए कृष्णदेव छैन। मुदा दोसर भाएक पत्नी नि:सन्तान 'विधवा' सेहो जीविते छथिन। हुनके मन बुझबैले रामदेवक नाओंसँ कौलेज बनौलैन।

कौलेजक शुरूक समयमे, बिनु दरमेहेक बाहरक प्रोफेसर केना रहि सकितैथ तँए अगल-बगलक संग सोनपुरक शिक्षक सबहक बहाली भेल। ऐगला आशापर सभ–चपरासी, किरानीक संग प्रोफेसर–ऑफिसक काजसँ पढ़ै-लिखै धरिक काज सम्हारए लगला। ओना, गाम-घरमे कम पढ़ैबला, तँए विद्यार्थीक संख्या ओते नै जइसँ कौलेजक काज नीक जकाँ चलैत। नीक जकाँक अर्थ ई जे प्राइवेटो कौलेज नीक विद्यार्थी रहने नीक जकाँ चलिते अछि, मुदा से ऐ कौलेजमे नै भेल। कम विद्यार्थी रहने,

आमदनी कम, जइसँ दरमाहामे कटौती भेल, मुदा ऑफिसक काज चलैत रहल।

बीस बर्खक पछाइत कौलेजक भाग जगल। भाग ई जगल जे विद्यार्थीक संख्या बढ़ने आ नीक रिजल्ट भेने सरकारी हेबाक सम्भावना बढ़ल। जइसँ चपरासी, किरानीक संग शिक्षकोक बीच सुखद भविसक आशा जगल। मुदा तइ बिच्चेमे पहिने तिकरम शुरू भऽ गेल। सचीवक परिवार आ जाति-कुटुमक तँ कौलेजमे रहल मुदा शिवजीक संग तीन गोरेकेँ हटा देल गेलैन।

कौलेजसँ हटला पछाइत शिवजी अनुभवी शिक्षकक रूपमे रहितो नोकरीसँ विमुक्त रहला। मुदा साले भरिक पछाइत दोसर कौलेज शिवजीक घरसँ पाँच कोस हटि खुजल, ओ खुजल जन-सहयोगसँ। मुदा कौलेजक अदीनता रहल जे सञ्चालन समितिक सदस्यक बीच वैचारिक भेद, मन-भेद सभ दिन चलिते रहल, जइसँ कौलेजक बेवस्था आगू नै ससैर पाछूए हड़कैत रहल। मुदा तैयो ठाढ़ तँ रहबे कएल। ओ

ही कौलेजमे समय बितबैत शिवजीक तिरसैठम बरख बीति गेलैन...।

सोनपुर कौलेजमे जखन तीन साल शिवजीकेँ भेलैन तखन पिता मरि गेलखिन। परिवारमे दोसर करताइत नहि, मुदा तैयो शिवजी जन-बोनिहारक हाथे खेती सम्हारैत रहला। ओना, पिता असगर जेते काज सम्हारै छेलैन, ओते काज सम्हरैमे तीनटा जन लगै छैन। मतलब ई जे तीन जनक काज असकरे राधा गोविन्द करै छला। राधा गोविन्दकेँ मुइने परिवारक काजो घटल, मुदा तैयो परिवार तँ चलिते रहल।

शिवजीकेँ तीन सन्तान, दूटा बेटा एकटा बेटी, तीनू छँटगर। जेठ बेटा- कुशेसर- खेलौड़िया बेसी, तँए हाइ स्कूलक पढ़ाइसँ आगू नै बढ़ि सकल। नै बढ़ैक पाछू पितोक ओते तनदेही नै रहलैन जेतेसँ बेटा-बेटी सुधरैए। सोलह बर्खक अवस्थामे कुशेसर दिल्ली चलि गेल। गरो नीक बैसलै, एकटा फैक्ट्रीक ऑफिसमे नोकरी भेट गेलइ। दरमाहासँ बेसी

बाइली हुअ लगलै। जे अपन खर्च चलबैत बैंकमे नियमित रखबो करए आ पाँच हजार रुपैआ पितोकेँ मासे-मास पठबैत रहल। बहिनक बिआह सेहो नीक जकाँ केलक। छोटका भाएकेँ बंगलोर पठा डॉक्टरी पढ़बैए...।

समय आगू बढ़ल। शिवजी जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेला। परिवारक संग कुशेसर परसू गाम आएल। चारू धिया-पुता प्राइवेट कोचिंगमे पढ़ै छइ। कोठरीमे दुनू परानी शिवजी बैसल अपनो जिनगीकेँ आ बेटो- कुशेसरो-क जिनगीकेँ भजारि रहल छैथ।

अपन पढ़ल-लिखल जिनगी देखि शिवजी बजला- "ओना, ईश्वरक दयासँ परिवारक पैछलो आ ऐगलो गति नीक अछि मुदा..?"

'मुदा'पर शिवजीकेँ रूकिते पत्नी टोकि देलखिन- "मुदा की?"

ओना, अखन धरि पत्नियोँ नीक जकाँ शिवजीक जिनगीकेँ नै जनैत, मुदा शिवजी तँ स्वयं कर्ता-धर्ता छैथे। संयोग नीक रहल जे पत्नीकेँ उत्तर दइसँ पहिनहि पोता- कुशेसरक जेठ बेटा- जे हाइ स्कूलमे पढ़ैए, कोठरी पहुँच गेल।

पोताक रूप-रंग देखि शिवजी सहैम गेला। सहमला जे अपना आगू कुशेसर केते पढ़ने अछि। मुदा कमेबाक आ जिनगी जीबाक जे लूरि ओकरा छै ओ अपना कहाँ भेल! खाली-खाली जिनगी खलियाइत सोलहन्नी खलिआ गेल! कोन मुहेँ केतौ बाजब जे जिनगीक ई लीला अपन छी!

कोठरी अबिते नन्दन पुछलकैन- "दादाजी, अपन जिनगीक अनुभवक किछु बात हमरो सुना दिअ।"

पोताक प्रश्न सुनि शिवजी ठकुआ गेला। ठकुआ ई गेला जे सत्-सत् कहि देबै तँ हो-ने-हो ओकरो मन पढ़ै दिससँ हटैक जाइ, ओना, कोन रूपेँ दिल्लीमे रहैए, हमरा बातक केते असैर हेतै, ई परिखब तँ कठिन अछि। झाँपि-तोपि अपन कहि देने तँ उत्तर भइये जेतइ। मुदा अधखिजू कहने थोड़े नीक नहाँति बुझि पौत। सभ रोग-वियाधि, सोग-सन्तापकेँ मनमे तहियबैत शिवजी कहलखिन- "बाउ, समय सभसँ बलवान होइ छै,

श्रमवाने ओकरा पकैड़ संगे चलि सकैए, तँए..?”

‘तँए’ सुनि नन्दन बिच्चेमे पुछलकैन-

“की बलवान?”

पोताक दोहरबैत प्रश्न सुनि कहलखिन-

“बाउ, जे मनुख पल-पल जिनगीक महत बुझि पग-पग बढ़ैए ओकर जिनगी आ जे पल-पलकेँ पलपलाएल रस पीब बढ़ैए तेकर जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर होइ छइ। किएक तँ नीको आ अधलोमे पलपली होइते छइ।”

नन्दन-

“अकास-पतालक ई अन्तर मेटाएत केना?”

शिवजी-

“प्रकृतिकेँ अनेको रूप छै मुदा अखन दुइए रूप देखहक। धरती-अकास तँ देखै छहक, पताल नुकाएल अछि। मुदा मनुखोक प्रकृति होइ छै, जे मनराजमे बास करै छइ। वएह रूपान्तरण एक रूपता आनि एकबट करैत बाट पकड़ैए।”

बाबाक विचार सुनि नन्दनो आ नन्दनक दादियो उठि कऽ ठाढ़ भेली। दुनूकेँ ठाढ़ होइत देखि नमहर साँस छोड़ैत शिवजी अपन मनकेँ बुझबैत घुनघुनेला-

“दिनक हेराएल जँ साँझमे घुमि आबए तँ ओ हराएब नै भेल। मुदा जे हेराएल से हेराएल, जे बाँकी अछि ओकरा पलो भरि हाथसँ छोड़ब जिनगीकेँ धोखाड़ब हएत।”



तिथि: 24 मई 2014, शब्द संख्या: 1101

चोरक चोरबती

आने दिन जकाँ आत्मानन्द बाबा दिन लहैसते अपन काज उसारि, दिशा-मैदानसँ आबि दरबज्जाक आँगनमे सोंफ बीछा बैसते रहैथ आकि सुगिया दादी चाह नेने आगूमे ठाढ़ भेली। गर लगा कऽ बैसते हाथमे चाहक गिलास धड़बैत दादी ई सोचि ठाढ़ भऽ गेली जे किछु खगता हेतैन तँ बजबे करता। मुदा सभ काजक गर देखि बाबा चुपे रहला। बतलग्गू रोग तँ धेने नै छैन जे अनका जकाँ अनेरो किछुसँ किछु बजैत रहता।

किछु समय अँटकला पछाइत दादी बुझि गेली। आँगन दिस घुमि गेली। तेतबेमे टोलक स्कुलिया धिया-पुता एकाएकी आबए लगल। बाबाकेँ चाह पीबैत देखि आगूमे, बाबा दिस घुमि-घुमि बैसैत गेल। अँगनाक डेढ़ियापर अबिते सुगिया दादी पाछू उनैट तकली तँ चारि-पाँचटा बच्चाकेँ देखि मन मुस्कियेलैन। मुस्कियेलैन अपन नियमित काजपर। जँ कनियोँ बिलम होइतए तँ ऐगला काजमे बाधा होइतैन किने। जेकर भागी के बनैत..? सुगिया दादीकेँ अपन पतिव्रत निअम मनमे जगलैन। जगिते ठोर पटपटेलैन-

"पतिव्रत काजक रूपमे नहि, मात्र लोक शब्दक रूपमे बुझैए।"

मुदा लगले जेना कियो ठोंठ पकैड़ कऽ दाबि देलकैन, तहिना ठोरक पटपटी बन्न भऽ भेलैन। आँगनक ओसारपर बैस चाह पीबए लगली।

चाह पीबिते बाबाक मन खनहन भेलैन। खनहन मन खनखनेलैन-

"सज्च-मज्च भऽ पहिने बैसै जाह आ जेकरा जे बुझैक छह से बेराबेरी बाजह।"

कहिते आत्मानन्द बाबाक मनमे उठलैन जे अखन बाल-बोधक

बीच छी, अखुनके रोपल आकि सीखल बात ने जिनगीक बेसी समय पकड़त। माने ई जे दुनियाँमे हजारो-लाखो किताब पढ़निहारकेँ आदि अक्षर 'अ-आ' होइ छै, जे जहियासँ जन्म लइए तहियासँ मरै बेर तक, मरैए बेर किए कहबै तेकर पछाइतो तँ रहिते अछि। तँए जेहेन बात अखन कहबै तेहने हेतइ। जेकर फला-फलक भागी भेने नीक-अधला सुनए पड़त...।

जहिना जगरनाथ बाबा आ बैजनाथ बाबाक डोरी लगिते मन छटपटए लगैए जे कखन जा कऽ दर्शन करी, तहिना बच्चा सबहक मनमे उठल। अगुआ कऽ दस बर्खक गोविचन्दा बाजल-

"बाबा, चोरक चोरबती केहेन होइ छइ?"

गोविचन्दाक प्रश्न सुनि बाबाक मनमे उठलैन, 'चचन्दा जुनि उगु आजुक राति।' इजोतेसँ भकइजोतो आ अन्हारो जनमैए। गोविन्दक जेहेन प्रश्न अछि ओकर उत्तर ओ सम्हारि सकत? मन सकपकेलैन। सकपकेलैन ई जे अपनो तँ व्रतक माने मनक सङ्कल्पक प्रश्न अछि। अपनो तँ अखन तक ई नै निर्णय कऽ पेलौं जे बच्चाक केहेन प्रश्नक उत्तर तत्काल देल जाए आ केहेन प्रश्नकेँ अखन खेत जकाँ जोति-कोड़ि बीआ छीटि छोड़ि दिऐ। अपनो तँ अखन तक यएह ने करैत एलौं जे कोनो प्रश्नक उत्तर केकरो कहए लगलिऐ। चूक भेल, ई बात सत् जे दस बर्खक बच्चा होइ आकि बारह बर्खक, ओकर नमहर प्रश्नक उत्तर दसे-बारह बरख धरि देब नीक कि अधला...।

मन घोर-घोर हुअ लगलैन। मुदा जेना कियो धक्का मारलकैन तहिना चकोना होइत चौंकैत देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे अखन तँ बच्चा सबहक बीच छी। ओकरे मुँहक मुंगरकेँ ने मुंगबा बना परसब। अपन जँ बँचल रहत तँ ओ पछाइत बाँटब। दही-चीनी भोजक पछाइते बाँटब नीक होइ छइ। जँ से नै होइ छै तँ अनेरे लोक किए पचताइए जे 'बेरक मारल बगूर तर...।' दुनू कँटाह। मुदा समय बलवान होइ छै, माछ-मौस छोड़ि बबाजी भेलौं जे बिलाइ जकाँ गोरस चाटब से ले बलैया! ओहो लोहे

महींसक भऽ गेल। मुदा कि करबै भाय, अपन हारल कनियाँक मारल जँ कियो बजबे करत तँ ओकरा नीक के कहत...।

'कनियाँक मारब' तक अबैत-अबैत आत्मानन्द बाबाक मन पोखैरक पानि जकाँ प्रज्ञ भेलैन।

बजला-

"बाउ गोविन्द, तोहर प्रश्न बड़ हल्लुक आ बड़ झुझुआन बुझि पड़ैए मुदा उत्तर भारी अछि, से...।"

बाबाक बात सुनि सभ बच्चाक कान ठाढ़ भेल। साँझू पहरमे जहिना सभ नढ़िया-पण्डित मिलि एक्के बेर अन्हारक हल्ला करैए तहिना सभ बच्चाक मनमे। मोन पड़लैन- जहिना केराक गाछक खोंइचा माने डपोरक डोरी बनैए, जइसँ कोनो वस्तु बान्हल जाइ छै तहिना ने बिनु बुझल बातक डोरी बना बालो-बोधोकेँ बन्हैक जरूरत अछि। विचारमे एकरूपता एलैन। लगले मन घुमि डपोरक डोरी बनै केना छै तइ दिस गेलैन। ऊपर जेते सुखल अछि ओतैसँ चीरि कऽ जीतहा चीरैत ने जड़िमे तोड़लो जाइए आ छोड़ौलो जाइए...। मुस्की दैत बाबा बजला-

"बौआ सभ। आमक गाछीमे एकटा बगवार बती लऽ कऽ मचानपर सुतल रहै, अन्हार रातिमे चोर सभ आबि पहिने ओकर बतीए चोरा लेलक आ पछाइत ओकरे बतीकेँ हड़ैप आमो बीछि लेलक आ बतियोकेँ हड़ैप चोर बतीक मूड़न बिआह कऽ लेलक। तही दिनसँ चोरक चोरबती गृहवासू भऽ गेल।"

बाबाक खिस्सा सुनि बच्चा सबहक बीच रंग-रंगक खेल पसैर गेल। कियो चोरक बुधियारीक हिसाब जोड़ए लगल जे केना भेल, तँ कियो जोड़ैत जे गुण भेल जे चोरबतीए चोरौलक। ओहेन सुतलकेँ तँ जाने छोड़ि देलक से गुण रहल। कियो बाबाक नजैर-पर-नजैर रखने जे बाबा असली जगरनाथ बाबाक दर्शन करौलैन आकि ऊपरमे राखल झपनाक..?

जेना-जेना बाबाक नजैर आगू दिस खिड़ैन तेना-तेना मनमे धिक्कार उठैन जे आगू तकक बात कहि देने अपन विचारो आ रस्तो बनौत। मुदा

बाबाक मनक चटपटी देखि गोविन्द बुझि गेल जे बाबा किछु बजऽ चाहै छैथ, तइ बिच्चेमे अपन बात किए ने रखि दिऐन। बाजल-

"बाबा, नीक जकाँ नै बुझि पेलौं जे अपने की कहलिऐ?"

गोविन्दक जिज्ञासा बाबा अँकलैन। आँकि कऽ गुलेतीक गोली जकाँ ठिकिआ कऽ बजला-

"बौआ गोविन्द, जेते दूर तक सुजोत चलैए, तेते दूर तक कुजोतो चलैए, केतौ-केतौ बेसियो चलैए आ केतौ-केतौ कमो चलैए, मुदा से नहि, वएह सुजोत कुजोतक बती चोरबती बनि गृहवासू भऽ गेल।"

बाबाक बात सुनि अपन जिद्दपन धेने गोविन्द बाजल-

"बाबा, अखन सुनलाहा भेल, आँगन जा जखन ओकरा उचारब-विचारब, तखन हँ-निहँस काल्हि कहब।"

गोविन्दक जिज्ञासा देखि आत्मानन्द बाबाक मनमे हौहैट-कलकैलक कुरूऐनी जकाँ सुआस पड़लैन...।

बजला-

"बाउ गोविन्द, काल्हि तँ काल्हि हएत, आइ ठीक छह किने?"

हँसैत गोविन्द बाजल-

"हँ बाबा।"

❑

तिथि: 6 अगस्त 2014, शब्द संख्या: 884

सनेस

तुलसी बाबा जहिना हलैस कऽ रामायण गढ़ि तूल देलैन जे “हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता” तहिना ने “मनु अनन्त मनुआँ अनन्ता” सेहो होइ छइ। एहने अनन्तमे पण्डित कक्काक जिनगी सेहो वौआ गेलैन।

जेकर ओरे-छोर ने रहत तइमे लोक नै हेराएत तँ हेराएत कइमे। तहूमे जे हेराइबला रहैए ओ तँ हेराइते अछि। घरोमे लोक हेरा जाइए। मुदा बिनु ओर-छोरक जे अछि तइमे लोक हेरेबो केना करत। हेराइते बेर ने हरण होइ छइ। जँ सीते नै हेरैतैथ तँ हरण किए होइतैन। ओ जँ केतौ वौआइत रहत तँ ओही अनन्तमे किने। तखन ओ हेराएब केना भेल। हेराइ तँ लोक ओतए अछि जेतए एकसँ दोसरमे चलि गेल, रामक संग छोड़ि सीता जेना रावणक संग गेली। मुदा एक छोड़ि दोसर जेतए ऐछे नहि, तेतए लोक जाएत केतए। ओहीमे ने जहिना सभ अछि तहिना ओहो अछि।

पण्डित काकाकेँ सेहो तहिना भेलैन। बच्चेसँ चन्सगर रहैथ, पढ़ै-लिखै दिस मन झूकलैन। पढ़ै-लिखैक एकछाहा भाषो आ विषयो, तँए पण्डित काका संस्कृते विद्यालयमे नाओं लिखौलैन। ओना, पनरह-अनासँ बेसीए लोक पढ़ै-लिखैसँ दूर हटल अछि। धरतीसँ अँकुरि भाषा-साहित्यक गाछ बनल अछि। जइमे गमैआ वैद जकाँ, जे अमेरिका-इंगलैंडक दवाइसँ उपचार नै करि, बोन-झार, खेत-पथारक जड़ी-बुटी चुनि औषध बना रोगक उपचार करै छैथ, जे एक धारा बनि धरतीकेँ सींचैए तहिना संस्कृतो भाषा धारा छी। तेतबे नै अदौक धार छी, जे अखनो बहैए। मुदा कोनो धारा ताबे तक अपन समुचित गतिये प्रवाहित होइत रहैए जाबे तक

ओकरा अनुकूलता भेटैत रहै छइ।

जेना इतिहासक मध्य किछु राजो शासनक अछि। तँए ओइ कालखण्डमे भाषो-साहित्य फुलाएल फड़ल। मुदा धरतीपर बहैत धारक धारा आ विचारक दुनियाँमे बहैत धाराक बीच दूरी तँ किछु भइये जाइ छै, मुदा ओ दूरी पाटत के? पटाएत केना? जइसँ सिञ्चित भऽ रूप-सौन्दर्य पसारत...।

'लघु सिद्धान्त कौमदी'केँ पण्डित काका तेना कऽ धुथुरक पीसल बीआ मिला चटलैन जे पढ़ैक निशाँ लगि गेलैन। आन काज की भेल आ की नै भेल तैपर ओते धियान नै दऽ पढ़ैपर नजैर गड़ल रहै छेलैन। तहूमे गीताकेँ तँ चाटिये गेल छला...।

पण्डित काका आ अपना बीच एतबे सम्बन्ध अछि जे जखन काजसँ निचेन रहै छी तखन लगमे आबि बैसै छिऐन तँ रामायण, गीता, महाभारतक गप-सप्प कहै छैथ। सुनैकाल सुनै छी। मुदा जिनगीक उद्यम तँ अपने जुतिये ने करै छी आ अपना जुतिये कि करै छी काजक जुतिये करै छी। काजेक जुतिकेँ कन्हेठ अपन जुति लगबै छी। काजोक तँ अपन जुति होइ छइ। मुदा समाजक लोक पण्डित काकाकेँ निशाँएल थोड़े बुझै छैन, बुझै तँ छैन भूतलगुए। निशाँएल तँ ओतए ने भेल जेतए सार-असारमे बदैल शारीलक स्वरूप धरैए।

मुदा ओ तँ जिद्दक आड़िंयेपर बैसल छैथ। मानि नेने छैथ जे जहिना ओ सभ नै सुनत तहिना की अपन मुँह सीब लेब। जेकर जे काज रहतै, रस्तो चलैत रहब आ बजितो रहब, सुनि कऽ बुझलक तँ बड़बेस नहि तँ हमहूँ बजलौं ओहो सुनलक...।

ओना, सुनै आ बुझैमे भेद छइ। भेद ई छै जे किछु करैक उदवेग बुझला पछाइत अबैए, मुदा सुनब तँ खाली सुनब भेल जेकरा सुनियोँ सकै छी आ अनसुनियोँ कऽ सकै छी।

ओना, पण्डित कक्काक जन्म पाँच बीघाबला किसान परिवारमे भेल छैन। बच्चेसँ पण्डित काका माता-पिताकेँ जन्मदते नै जिनगीक

जन्मदाता-गुरु सेहो मानै छथिन। जन्मदते ने जन्म दैक बाट पकड़ा जन्मदाता बनबै छैथ, तँए गिरहस्तीक सभ लूरि पितासँ सीखि पण्डित काका अपन जीवन-जापन करै छैथ। गीताक तेते अध्ययन केलैन जे उगना महादेव जकाँ किछु लिखैक विचार उगलैन। पचपन बर्खक अवस्थामे किताब लिखि छपबौलैन। गुण रहलैन जे दुइए साए छपौलैन नहि तँ पाँच कट्ठाक बदला बीघा चलि जैतैन। ने कियो किताब कीनलकैन आ ने अपने केतौ बेचए गेला...।

जहिना कोनो बेमारी परिवारमे भेने परिवारबलाक नजैर ओइ दिस बढ़ै छै, बाढ़ि एलापर बाढ़िक दुश्मन दिस बढ़ै छै, रौदी भेलापर रौदीबाबाक सराध-विटाइर केना हेतैन तइ दिस बढ़ै छै, इत्यादि-इत्यादि, तहिना किताबक छति पण्डित कक्काक मनकेँ पण्डितौपन दिस रेड़लकैन। रेड़ पड़िते मन फुरफुरेलैन जे किताबमे जे समय लगाएब आ ओ समय बेकार चलि जाए तँ जरूर केतौ रस्तामे आँकर-पाथर ढेरियाएल अछि...।

प्रश्न उठिते जहिना अस्पतालमे रोगीक पहिल जाँच करैत डॉक्टर विभागीय वार्ड दिस पहुँचा दैत तहिना पण्डित काकाकेँ सेहो भेलैन। मुदा लगले ऊपर-झपकी भेलैन जे एहेन प्रश्नसँ एतेटा जिनगीमे भेँट कहाँ कहियो भेल छल..?

फेर भेलैन जे एहेन काजे दोसर कोन केने छेलौं जे भेँट होइत। तँ की काजे बुधि जन्मबैए आकि काजकेँ बुधि जन्मबै छै...।

जेते पण्डित कक्काक पण्डिताउ बढ़ल जाइन तेते पसेना देहसँ निकलए लगलैन। पसिने ने दुनियाँक पसन्द भेल। जेते पसेना छूटत तेते सुख भेटत...।

मुदा लगले मन अपना दिस पाछू उनटलैन। उनटलैन ई जे पचपन बर्खक मेहनैतक फल उपयोगी नै भेल। जँ फले खट्टा भऽ गेल तँ जिनगी केना मीठ भेल! जँ जिनगी मीठ नै भेल तँ अनेरे किए एते समयकेँ शरबत बना पीबलौं? मुदा शरबतो तँ परखए पड़त जे सोझे मधुरस छी आकि भँगरस..?

पण्डित काकाकेँ अपनापर तेहेन ग्लानि जगलैन जे अपनेमे अपने गड़ए लगला। पिताक देल जत्था-जमीन बोहा पोथी लिखलौं से आन बुझह आकि नै बुझह मुदा अपने तँ बुझिते छी जे सैयो टीका-संग गीता पढ़लौं। तेकरे ने नेबो जकाँ निचोरि-निचोरि पोथीक सृजन केने छेलौं। तखन? पोथी मौलिक भेल की टीका। जँ टीका भेल तँ सृजन केना भेल? जँ सृजन नै केलौं तँ सिरजलौं की जे लोक पूछत..?

फेर जेना ग्लानि गरए लगलैन। ग्लानिसँ गड़ैत दुनियाँमे प्रवेश केलैन। जेते लिखिनिहार तेते रंगक विचार! एना किए भेल? जे व्यासजी गीता लिखि खुट्टा गाड़ि देलैन जे सर्वोत्तम जिनगी जीबाक सूत्र लिखि सुतिआ लेलैन, मुदा एते विचारक की कारण?

प्रश्न मनकेँ रोकि कहलकैन-

"अनेरे जहिना पचपन बरख वौएलौं तहिना छपनमो बरख वौआइते ढहनाएब। हूबा करू। फेर पढ़ू फेर लिखू। मुदा हूबटुटु बनि जिनगी नै जीबू।"

गीताक समीक्षा लिखि विषयकेँ अन्त करैत लिखलैन-

"जँ पूजी जगदम्ब तँ आनक पुजन व्यर्थ। नै पूजी जगदम्ब तँ आनक पुजन व्यर्थ। सभ जिनगीक खेल छी, जेहेन जिनगी तेहेन विचार, तखन अनेरे लोक किए मीठहा छोड़ि खटहा फल खा खटही बनत?"

मन मानि गेलैन जे दुसैएबला काज तँ करबे केलौं, किए ने कियो दुसत जे किताब छपैक प्रेस जखन एते सस्ता भऽ गेल तखन दुइए साए किताब छपबैमे एते किए खर्च भेल..?

मुदा मनमे उठलैन- जेते मोट-मोट किताब पढ़ि नेने छेलौं तइसँ पातर केना लिखितौं। गीता पढ़ि गीते आकारक पोथी लीखि पाँच कट्ठाक दाम सबा लाख गमेने छेलौं, मुदा तहिना जँ अहाँ अपन गतातिक प्रेसक खर्च आ साए पृष्ठक किताब बुझैत होइऐ, ई दीगर भेल। मुदा से नहि, हमर तीन हजार पृष्ठक पोथी छल जेकरा रेक्सिनक गत्तासँ गतानि छपबौने छेलौं, अपन बोइन-बुत्ता छोड़ि पनरह साए मुल्यो रखने छेलौं। मुदा सभटा

पड़ले रहि गेल। ओना, अखनो बड़ दुख नहियेँ अछि, किएक तँ कोनो कि हमरेटा पड़ल रहल आकि आनो-आनकेँ अहिना पड़ल छैन। जखन आनो-आनकेँ भेल तखन तँ यएह ने नीक भेल जे जे भेल से सभ मिलि एकेबेर छातीमे मुक्का मारि, कनैक लैये बदैल ली...।

जहिना पहाड़ी रस्ता टपला पछाइत समतल जमीनक रस्ता आ गाछक छाहैर भेटलापर जे मन हरखित होइ छै तहिना पण्डितो काकाकेँ भेलैन। हरखित मन होइते गर गड़ेलैन। गर गड़ाइते मन हनहनेलैन जे जहिना गमैआ वैद गामेक खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी, बोन-झार, गाछी-कलम आ बँसबाड़िसँ जड़ी उखाड़ि ओकरा जड़िया-औषध बना रोगक उपचार करै छैथ तहिना हमहूँ करब। ठीके पिताजी कहै छला जे मौसमक अनुकूल सभकेँ चलक चाहिऐ। जेहेन समय तेहेन काज, जेहेन काज तेहेन भोजन, तेहेन रहन-सहन बनेनहि ने मौसमक संग चलि पएब। बरहमसिया खेतीक तँए प्रयोजन पड़ै छै...।

सोचिते-विचारिते पण्डित कक्काक मन मानि गेलैन जे नव सिरासँ आब किताब लिखब...।

मुदा लगले मनमे उठलैन जे पहिलुक पोथी तीन हजार पृष्ठक छल, तँए काज तँ ओइसँ बेसी लिखने बढ़ियाँ हएत। जँ तीन हजार पृष्ठसँ आगू चारि हजार पृष्ठक लिखब तखन ने तरका दबाएत। जँ से नै हएत तँ ऐगला ओहिना अलगले रहत किने..?

झोंकाएल मन पण्डित कक्काक झोंकमे रहबे करैन, पुर्बा झोंकमे पच्छिम आ पछिया झोंकमे पूब दिस जहिना गाछो-बिरीछ झूकि जाइए तहिना झूकए लगलैन। मोन पड़लैन अपन ओ दिन जइ दिन गीता–महाभारत अंश गीता–केँ जिनगीक मुँहक गीत गबैत सुनने रहैथ। कानक सुनल आकि कोनो मुँहक बाजल, झूठ केना हएत? मन ठमकलैन, आगू बढ़ैसँ जाँघ थरथरेलैन...।

थरथरेलैन ई जे एक तँ जिनगी भरिक पढ़लाहा हेरा रहल अछि जे आब दोसर सिरा पकैड़ लिखैक अछि, तखन तँ पचपन बर्खक उमेरक

कोनो मोजरे ने भेल! आ जँ कहीं अगिलो सएह भऽ जाए, तखन तँ ओहन आमक गाछ आकि कोनो आन फलक गाछ जकाँ ने भऽ जाएब जे छाँह तर पड़ि कहियो फुलेबे ने करैए..!

जखन मोजरे ने तखन फल केहेन फड़त?

आगू-पाछू देखैत पण्डित काका विचारए लगला- आब की उपए..? काजो तँ असान नहियेँ अछि...।

नव शिरासँ नव बात बिना बुझने-गमने केना आगू बढ़त? ई तँ नै जे सभ पञ्च लबरे भऽ जाए। जँ आगू नै बढ़त, तँ कलमक धार केना फुटत? जँ कलमेक धार नै फुटत तँ सादा कागतपर चारि हजार पृष्ठ उतरत केना? केकरोसँ पुछबो केना करब, सभ तँ अपने बेथे बेथाएल अछि। दिन-राति जे बेटा, बेटी, पत्नी-ले दौड़ रहल अछि ओकरा एते पलखैत कहाँ छै जे अपना परिवारमे बैस परिवारक तानी-भरनी ठीकसँ चलौत। जाबे सुतकेँ तानी-भरनीक बीच तानि कऽ नै तनियाएल जाएत ताबे ओ अम्बर केना बनत? प्रश्न ई नै जे पुछबो केना करबै। प्रश्न ई जे केकरासँ पुछबै। की गीताक टीकाकारसँ आकि व्यास रचनाकारसँ? से नहि तँ चारि हजार पृष्ठक किताब लिखैमे अदहा विचार गीताक लेब आ अदहा समाजक। जँ से नै करब तँ गीताक गुण तरेतर हृदयकेँ तेना सिहरा कऽ सड़ैन करए लगत जे देहे-हाथ कठुआ जाएत! काजे ने कएल हएत..!

दू साल बीत गेल। सौन मासक हरिअर चास गाममे लहलहाइत रहए। निच्चे-ऊपरे खेती भऽ गेल। जे खेत जेना रोपल गेल से खेत तेना हरियरियो बेसी पकड़ैत गेल, मुदा लगक रोपल, माने काल्हि-परसूक, कोनो पतसुखू तँ कोनो धड़सुखू तँ अछिए। चैत-बैशाखक सुखाएल-अध-सुखाएल धारो-धुर आ डाबरो-पोखैर फुला गेल। पतझड़ गाछ-बिरीछ सौनक सोहनगर समीर आ शीतल सलिल पाबि अपना वस्त्रे झूकि गेल...।

काल्हि साँझमे पण्डित कक्काक पाँच हजार किताब गाड़ीसँ उतरलैन। पहिल साँझ दीप नै बरल तँए झलअन्हारमे बण्डल खोलब नीक नै बुझि सोझे थकिआ कऽ कोठरीमे रखि लेलैन।

खेला-पीला पछाइत जखन ओछाइनपर पण्डित काका पड़ला आकि पैछला किताब मोन पड़लैन। मोन पड़िते कबुल लेलैन जे पिताक सम्पैत नष्ट केलिऐन। मुदा कननौं तँ नहियेँ हएत? जिनगी सदैत हार-जीतक बीच चलिते अछि, कियो अफसर निचलाक ऊपर रोब झाड़ैए तँ ऊपरकाक रोब सहबो करैए। आब किताबकेँ खाली बेपारक सौदा नइ बना जिनगीक सौदा बनाएब जइसँ जिनगीक बीच रखि परिचयौ-पात देब नीक हएत। जँ से नहि, खाली परिचए-पात देबै तखन एहनो तँ भइये सकैए जे ओइ दिस पढ़निहारक नजरिये ने जाए...।

किताबक परिचयो आ बिकरियो, दुनूकेँ नजैरमे रखि पण्डित काका निर्णय केलैन जे किताब लऽ कऽ दोसराक दरबज्जापर परिचए करा कऽ ढौआ लेब। मुदा दोसराइत के? अदहासँ बेसी लोक किताब पढ़ैबला नै छैथ! तखन? जँ पढ़निहार परिवार ऐछो आ कोनो रूपक सम्बन्ध ओकरासँ नै रहल अछि तैठाम केना जाएब..? आन कोनो दरबज्जापर जेबाक रस्ता होइ छै, जइ रस्ते लोक जाइए। मुदा लगले, जहिना भकमोड़क रस्ता केकरो देखल रहै छै तहिना भक्क टुटलैन। भक्क ई टुटलैन जे जे साहित्य प्रेमी जे पाठक छैथ, ओ तँ अङ्गीते भेला किने आ सामाजिक अङ्गीतो तँ छैथे तैसंग पारिवारिक अङ्गीत सभ सेहो छैथे..! दस रंगक पोथी पाँच हजारक अछि, पँच-पँच साए भेल, जखन कि लेबाल तँ पाँचो हजारसँ ऊपर छैथ! तखन काज असाध केना भेल..?

लगले पण्डित कक्काक मन किताबक छपाइ-कढ़ाइ दिस बढ़लैन। हाथक लिखल लोहाक मशीनमे गेल आ लोहासँ निकैल हाथमे औत, अनेरे दुनूक बीच तीन बेर चढ़ा-ऊतरी भेल। छूट-छाट, भूल-चूक भेले हएत। तैबीच जँ दोहरा कऽ किताब पढ़ए लगब से सम्भव नहि, किताबक थाक तौलाक भात थोड़े छी जे एकटा चाउर टोबने बुझि जेबइ। एका-एकी छपाइ भेल तँए एकक भूल-चूक दोसरोमे हएत आकि दोसरो भूल-चूक अछि से बुझब कठिन अछि। तँए नीक ई जे सभकेँ एके निवेदित जे भूल-चूक भेल हुअए, से चेतौनी देब जइसँ आगू चेतल जेतइ।

पड़ले-पड़ल पण्डित कक्काक मन ऐठाम आबि गेलैन जे किताब लऽ घरसँ निकलब। मुदा घरसँ निकलैसँ पहिने यात्राक दिशा तँ देखए पड़त। जँ से नै देखब तँ अनेर कुयात्रा हएत, जखने कुयात्रा भेल तखने गाड़ी जकाँ काजो दब-उनार भऽ जाएत। जखने दब-उनार भेल तखने गाड़ी उनटैक सम्भावना आबि जाइए। जखने सम्भावना औत तखने अथाह दिस बढ़ब भेल...।

फेर मोड़पर अबिते मन घुमलैन। अथाह तँ समुद्र होइए, पोखैर-झाँखैर तँ थाहल होइए, तेकरो नपैले तँ लोक फैदम बनाइए नेने अछि तखन सम्भावित केना भेल? हँ, ई बात अछि जे मौसमक गति-विधि–रौद-हवा इत्यादि–सेहो रस्ताक बाधक बनैए तँए विपरीत दिशामे बढ़ने चलैमे सुभिता होइए, मुदा जँ काज धारक सिरा जकाँ हुअए तखन छोड़ब नीक हएत आकि बढ़ि कऽ करब नीक हएत? दिन-बेरागनक विचार काजक हिसाबे नीक होइ छै...।

निर्णयक लग पहुँचैसँ पहिनहि मनमे एलैन जे दुनियाँमे कियो दोसराइत हुअए आकि नै मुदा संगीक संगिनी तँ लगेमे छैथ, किए ने पहिल विचार हुनकेसँ लऽ ली। आखिर ओहो तँ ओहिना ने सङ्कल्प केने छैथ जे जिनगी भरि घरसँ बाहर धरि विचारक संग रहब जे जिचन्दा दिल, दिल खोलि सङ्कल्प जिनगी भरिक लइ छैथ...।

पोखैरक पानि जकाँ पण्डित कक्काक मन थीर भेलैन। बजला-

“सुतल छी?”

‘सुतल छी’ सुनि रेशमा सगबगेबो ने केली। एक तँ ओहुना गमैआ चौकीदारकेँ तीन हाक देबाक अधिकार छै, तँए पहिल हाकक जवाब देब जरूरियो तँ नहियेँ अछि। फेर मनमे नाचि उठलैन, हो-न-हो जँ कहीं एहेन विचार मनमे आएल होइन जे एक बेरसँ दोसर बेर साँपक मंत्र जकाँ ने डाकैन देल जाइ छै, तखन नै किछु बाजब उचित नै हएत। मुदा उत्तरक समयकेँ हुसैत देखि रेशमा विचारलैन जे बोलसँ नहि, खोंखी करि जगैक सूचना देबैन। अपनो मन कहतैन जे भरिसक भकुआएलमे नै सुनलैन।

मुदा लगले भेलैन जे, लोक जगलो ओछाइनपर पड़ल रहैए, मन जागल रहै छै आ देह पड़ल छै, ओकरो तँ सुतबे ने कहल जाइ छइ। केना ओ बुझलैन जे सुतले हेती। अखने छनेक पहिने ओ खा कऽ ओछाइनपर एला, तेकर पछाइत अपने खेलौं, बासन-कुसन, थारी-लोटा अखारि, कुत्ता-बिलाइ दुआरे सहिआरि कऽ रखि अखने ओछाइनपर एलौं आ जखन ओ पहिने एला तखन जगले छैथ आ पछाइत हम एलौं तँ नीन पड़ि गेलौं! जरूर केतौ सोचमे शङ्का भऽ रहल छैन। हमहूँ तँ संगियेँ छिऐन किने, किए ने कनी आगरे करि थारीमे परैस दिऐन...।

मधुवनक मधुआएल मौधमाछी जकाँ भनभनाइत स्वरे रेशमा बजली-

"सुतलोमे वौऐनी नै छुटल जे निसभेर रातिमे बपहारि कटै छी?"

पत्नीक बातसँ पण्डित काकाकेँ मनमे दुख नै भेलैन, खुशीए भेलैन। खुशी ई भेलैन जे भरिसक कोंचा-कोंची अखन धरि बन्हनहि छैथ, तँए एहेन टाँस बोल भेलैन...।

मधुरस पीनिहारकेँ जहिना मौधमाछीक डङ्कक दर्द मनसँ मेटा गेल रहै छै तहिना पण्डितो काकाकेँ मेटा गेलैन। बजला-

"एकटा बेगरता भऽ गेल?"

'बेगरता' सुनि पण्डिताइन काकी अकचकेली। अकचकेली ई जे अरामोक अवस्थामे जिनका कोनो बेगरता होइ छैन, तँ जरूर ओइ बेगरता-वस्तुक काजमे मन लगल छैन। बजली-

"केहेन बेगरता अछि?"

जहिना कियो केकरो बेगरता सम्हारि दुखकेँ सुखमे बदैल दइ छै तहिना पण्डितो काकाकेँ भेलैन। बजला-

"किताब लऽ कऽ निकलब, से कोन दिन नीक हएत?"

पण्डिताइन काकी बजली-

"देखू, पुरुखक जतराकेँ ठेकान नै छै, मुदा काजक बेगरताक

हिसाबे महिला अपन दिन-बेरागन बना नेने छैथ। जँ से नै बनेने छैथ तँ किए लगनक भदबा माफ अछि।"

जहिना कोनो जन्तु दोसरकेँ धरऽ दौड़ैए तहिना पण्डित काकाकेँ पत्नीक बोल धेलकैन। मनमे ठानि लेलैन जे काल्हि किताब लऽ कऽ घरसँ निकैल जाएब। मुदा जाएब केतए? मात्रिक अङ्गीतक जाल छी निच्चाँ-ऊपर तेना ओझराएल अछि जे जँ कियो सुनिनिहार ऐछो तँ कियो नहियोँ सुनिनिहार तँ छैथे, तहिना सासुरो भेल। नीक हएत जे जैठाम कम सम्बन्ध अछि ओतए जाएब...। टोहियबैत पण्डित काका सढ़ूआरए चुनलैन। सारिक घर छी, कहिया केतए सँ गपो-सप्प बाँकी अछि। बेटो हाइ स्कूलमे पढ़िते छैन, साढ़ू अपने ने नै पढ़ल छैथ।

दोसर दिन पचासटा किताबक मोटरी बान्हि कन्हिया पण्डित काका सढ़ूआरए पहुँचला। दरबज्जापर पहुँचते साढ़ू आगूसँ मोटरी उतारि चौकीपर रखि गोड़ लगलकैन। गोड़ लागि आँगनसँ लोटामे पानि आनि पएर धुआ, पुछलखिन-

"बड़ भारी मोटरी अछि?"

कहलखिन-

"किताब छी।"

'किताब' सुनि सिंहेश्वर बेटाकेँ सोर पाड़ि बजला-

"बौआ, जाबे साढ़ू दरबज्जापर रहैथ ताबे अहाँक भार भेल। किताबक मोटरी छिऐन से देखैत-सुनैत रहब।"

बिच्चेमे सारि आबि एक चुटकी अबीर पण्डित कक्काक आगूमे उड़िया गेली। शान्त जगह देखि पण्डित काका साढ़ूक बेटाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, की नाओं छी?"

"श्याम सुन्दर।"

"कोन किलासमे पढ़ै छी?"

"दसमामे।"

‘दसमा’ सुनि पण्डित काका बजला- “बौआ, जिनगी भरिक काजक मोटरी छी। अहीं सन लोकक खगता अछि, काजो-एहेन अछि जे अहूँकेँ नीक आ हमरो नीक हएत।”

दुनूक नीक सुनि चकोना होइत श्याम सुन्दर बाजल-

“से की?”

‘से की’ सुनि पण्डित कक्काक हृदयमे हिलकोर उठि गेलैन। बजला-

“बौआ, जँ बच्चा बच्चेसँ काजक लूरिकेँ कन्हियबैत चलए तँ ओ माए-बापक भारक मोटा कम करैत अपना ऊपर ठाढ़ भऽ जाइए। श्रवण कुमारक कथा सुननहि हएब। केना सीक-पटैपर माए-बापकेँ कन्हेठ, चारू-धाम करए विदा भेला। तँए अहूँ किताबो बेचू आ पढ़बो करू। काजसँ लजाउ नहि, जखने काजसँ लजाएब तखने लजबिजी जकाँ लाज-बीज रहितो अकाजक दुनियाँक खाधिमे खसब। जेकरा काँटक दुआरे ने माल-जाल खाइए आ ने हाड़-गोड़ दुआरे लोके पुछै छइ।”

पण्डित कक्काक विचार सुनि श्याम सुन्दरक हृदए सिहैर गेल। सिससिराइत बाजल-

“मौसा, अहाँक विचारसँ जेना देहक खून फनफना रहल अछि, अपनोसँ भेँट-घाँट करैत करब। अखन अपनेक विचार शिरोधार अछि।”



तिथि: 16 अगस्त 2014, शब्द संख्या: 2685

पुरस्कार

भिनसर सात बजे समाजक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ बेदरा धरि सभ कियो बच्चाकेँ पुरस्कारक असिरवादो दइले आ बोन बीच विचरण करैबला वियाधो चिन्हैले एकत्रित भेला।

जेना गामे हलचलाएल अछि। हलचलेबो केना ने करैत, कोन-परिवारक कोन माता-पिताक मन बच्चाकेँ पढ़बै दिस नै छैन। के नै बुझै छैथ जे साए भरि सोनासँ नीक रती भरि बुधि होइ छइ। मनक झोंकमे, पुरस्कारक उत्सवक कारणे, बारह-अना लोक बिसैर गेला जिनकर बच्चा स्कूलक आँखि नै देखने।

रातिये सुतैबेर मे बहुलांश पुरुख अपन-अपन पत्नीकेँ कहि देलखिन जे तीन बजे भोरेमे उठि, घर-अँगनाक काज सम्हारि, चुल्हि-चौका अमैनियाँ बना जलखै तैयार कऽ लेब। कहुना भेल तँ सरस्वतीक दरबारक सभा भेल किने, तँए सभ किछु चिक्कन बना नै जाएब से केहेन हएत..?

जिनका सभकेँ दुनू परानीक बीच खटपटो छेलैन सेहो सभ पतिक बातकेँ कन्हेठ तीन बजे भोरे उठि पतिकेँ सात बजेसँ पहिनहि खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़ै-पहिरै तकक ओहेन तैयारी कऽ लेलैन जे सचमुच सरस्वतीक मन्दिर पूजा करए जेता। ऊपरसँ दोसर कारण ईहो भेल जे पत्नीक जेते क्रिया-कलाप पुरुख सभकेँ नै मोहने छेलैन, तइसँ बेसी पत्नीक मन-मक्खन मोह मोहलकैन। से कोनो एक्के-दुइएकेँ नहि, जेना समाजेक भऽ गेलैन।

सात बजैत-बजैत विद्यावादिनी सरस्वतीक सभा जकाँ स्कूलक

आँगनक परतीक दुभियेपर सभा सजल। जुगक अनुकूल तँ विचारो बदैलते अछि, जे स्कूलक आँगन बच्चाक लगौल फुलवारीसँ सजल रहै छल, विद्यालयक चारूकात एबा-जेबाक रस्ता बनल रहै छल, आइ ओ दुभि लगौल परती, दुभियो लगौल परती किए कहै छिऐ, बेउदाम जगह बनि गेल अछि। एहेन उठौन लोकमे उठल केना..?

गामक एक बेटा जगरनाथ मध्यम परिवारमे जन्म लेलो पछाइत अपन बुधिबलसँ एम.ए.क नीक डिग्री पाबि शान्ति-निकेतन- विश्व भारतीमे शिक्षक बनला। मुदा जिनगी भरि रहि गेला ओहेन विद्यार्थी जकाँ जे ट्यूशन पढ़बैत उपैत करै छैथ। इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, ओकील इत्यादि बनि धरतीपर ठाढ़ होइ छैथ, पेशा बदलला पछाइत जिनगियोमे बदलाउ अबिते छै मुदा से जगरनाथमे नै एलैन। संस्कृत विद्यालयक विद्यार्थी जकाँ तेहेन पोथीक चटनमा बनि गेला जे अपनाकेँ कहियो विद्यार्थीसँ ऊपर नै बुझलैन। जहिना चिड़ै-चुनमुनी चहरा चुनि घोघमे बच्चा-ले आनि मुँहमे दइ छै तहिना जगरनाथोक जिनगीक क्रिया-कलाप रहलैन। बिसैर गेला नोकरी आ बिसैर गेला नोकरीक साल-बर्ख...।

तीन मास पूर्ब जखन सेवा निवृत्तिक चिट्ठी जगरनाथक हाथमे एलैन तखन भक्क खुजलैन। भक्क खुजिते आँखिक आगू अन्हार पसैर गेलैन। ओइ अन्हारमे टापर-टोइया दइते भादो-अन्हारक जन्म-अष्ठमी, फागुनक अमावसियाक शिवराति आ कातिकक अमावसियाक कालीक दर्शनक पढ़ल-गुणन विचार मोन पड़लैन...।

मोन पड़िते हूबा जगलैन। हूबा उगिते मनसूबा जगलैन। पाछू उनैट तकला तँ देखि पड़लैन जे आब विश्व भारतीसँ चलि जाएब। केतए जाएब? गाम जाएब। केना रवि बाबू गामेमे विश्व भारती जनमौलैन? केना अखनो बड़का-बड़का सिरीसक गाछ ओहिना फुलाइत रहल आ ओ केना आगूओ फुलाइत रहत...। तीन मासक पछाइत गाम जाएब तखन रहब केतए? जुआनीसँ अखन धरिक जे गाछक छाहैरक स्वच्छ हवा पीलौं, की ओइसँ हटि जीब पाएब..?

मन सिहरए लगलैन। मुदा लगले मनमे उपकलैन जे लाल रवि

बाबूक रूपमे ओहिना, जहिना रविन्द्र नाथक रूपमे, तहिना 'टैगोर' आ 'गुरुदेवोक' रूपमे दुनियाँक ऐनामे चमैक रहल छैथ, ओइठामसँ गाम जाएब? जँ गुरुदेव केकरो किछु देलखिन तँ हमरो देलैन।

थोड़ेकालक पछाइत विश्व भारतियेक रूपमे गामोमे बनेबाक विचार जगलैन। विचार जगिते मन तरंगलैन। तरंग ई एलैन जे जँ कोनो जनोपयोगी संस्था समाजमे ठाढ़ होइ छै तँ जरूर ओकर असैर समाजमे पसैरते छै जइसँ अपन भविसक बाट-घाट बनै छइ। जेहेन बाट-घाट बनत तेहने ने गामक भविसक दिशा-दर्शन हएत। ई दीगर बात भेल जे जे रूप बदैल-बदैल शिक्षण संस्थान सामाजिक जिनगीकेँ, काँकोड़ जकाँ कँकोरि खेबो केलक आ खाइतो अछि। जेकरा कहियो अछन थोड़े होइबला छै...।

सेवा-निवृत्तिक सूचना पाबि जगरनाथ गाम दिस कनछियेला। सोलहन्नी तँ सेवा-निवृत्तिक पछाइत होइ छइ। तेसर मासक तीस तारीखकेँ ऐठामसँ काज करैक अधिकार समाप्त हएत। किए ने अपन पेंशनक काज अगुआ ली। कर्तव्य-कर्ममे सेहो किछु ढील-ढाल एबे करत। जइ विद्यार्थीकेँ गतिशील जिनगीक बात कहै छेलिऐ, आब तँ ओ सहजे चल-चलौए ने बुझत। नीके भेल। काजो तेदिसिया भऽ गेल अछि। एक दिस पेंशनक कागतक तैयारी, दोसर दिस विद्यालयक उपस्थिति, तेसर दिस ओ समाज जइमे जा बास करब। तँए ओकरो बसै-जोकर ने बास बनबए पड़त। मन ठमकलैन। ठमैकते ठनकलैन। ठनकलैन ई जे समैये ने अपना गतिये चलि रहल अछि, तँए जँ अपनो जिनगीमे चलन्त गति नै आनब तँ जिनगीक सार्थकते केते। जइ प्राणमे जेते चलन्तता अबैत ओ ओतबे सजीव होइत। ओकर हँसब-विहुँसब, ओकर क्रिया-कर्म, ओकर आकर्षण-सम्मोहन ओतबे ज्वलन्त-जीवन्त हएत। तँए अखनेसँ ने गामक बास बसबैक खगता अछि। सूचीबद्ध काज सुतिआ कऽ जँ नै करब तँ मनक मुराद पूर कऽ हएत? जैठाम जगरनाथ तैठाम पुरी तँ बनबए पड़त। गाम पहुँच सभसँ पहिने पढ़ै-लिखैबला बच्चाकेँ मान-सम्मान देब नीक हएत। जाबे समाजमे बच्चाक आदर नै हएत ताबे ओ आगू मुहेँ मुखरत केना। मुदा निर्दोष

बच्चाकेँ लोक किए बीरान बुझैए। मन मानि गेलैन जे पहिल काजमे हाथ लगा देब नीक हएत...।

मोबालिक युग, एक दोसरसँ मोबाइल नम्बर लऽ गामक सभकेँ जगरनाथ कहि देलखिन- 'परदेश रहि जे अर्जन केलौं ओ समाजक भेल। अहीक पहिल कड़ी बच्चाकेँ गुरुदेवक नाओंसँ पुरस्कृत करब भेल।'

जहिना कोनो घटना, कोनो विचार मनकेँ दलमलबैत तहिना जगरनाथकेँ सेवा-निवृत्तिक सूचनाक पत्र भेटते भेलैन। आकि विश्व भारतीक अन-पानिक असैर भेलैन, आकि गुरुदेवक देल वस्तु पेलासँ भेलैन, से ओ जानैथ। मुदा जहिना पोखैरक पानिक हिलकोर, जे कोनो गोला फेकलासँ आकि हवाक वेगसँ चलि आस्ते-आस्ते असथिर होइत तहिना जगरनाथकेँ सेहो भेलैन। विचार ठमकलैन। ठमैकते ठनकलैन जे तीस तारीककेँ चारि बजे विद्यालयसँ विदा हएब। ओना, ओइ दिन विद्यालय नहियोँ जाएब तँ केकरो पुछैक अधिकारे नै रहतै, ओहुना औझुका शिकाइत काल्हि ने हएत, काल्हि तँ ओकरा अधीनेमे नै रहबै, तखन ओ पुछि केना सकैए। बड़ करत तँ दरमाहा काटि लेत, काटि लेत तँ काटि लेत, परसूसँ अधिया जाएब से बरदाश करबे करब आ एक दिन पैछला तँ पछुआइए गेल तेकर केते चिन्ता करब। औझुका चिन्ता करैक छुट्टीए ने अछि आ कल्हुका दिस किए ताकब...।

मुदा लगले मन बदैल पुछलकैन, 'कोनो यज्ञक अन्तिम समैयक की महत अछि?

मनमे प्रश्न उठिते दोसर मन दबैत कहलकैन,

'जहिना सभ दिन, सभ दिन किए जिनगी भरि, चारि बजे विद्यालय छोड़ैत आएल छी, तहिना चारि बजे ओहू दिन छोड़ब। जखन चारि बजे विद्यालयसँ डेरा आएब, तखन परिवारकेँ सम्हार करैमे सेहो समय लागत। राता-राती रस्ता नै चलब। लगक रस्तो नै अछि। तखन तँ भेल जे एक तारीककेँ ऐठामसँ विदा हौ, गाड़ी-सवारीक बात अछि, कखन गाम पहुँचब कखन नहि। गाम पहुँच परिवारक सभ बेवस्था केले पछाइत ने दोसर

काज दिस बढ़ब। दुनू तँ काजे भेल। गाम गेला पछाइत समाजक दरबज्जापर नै जाएब सेहो केहेन हएत। किए लोक बुझत जे जगरनाथ के अछि। तीत अछि आकि मीठ अछि, से तँ बाग-बगीचा लगला पछाइते ने कियो बुझता जे फल्लाँ मीठ आकि खट्टा आकि तीत। जैठाम बाग-बगीचा लगबे ने कएल अछि प्रश्न तँ तैठामक छी...।

जहिना बच्चाकेँ जन्मक पछाइत माथक केश कटौल जाइ छै तहिना जगरनाथकेँ माथ साफ बुझि पड़लैन जे अखन चानिपर जहिना पतरखली उगत तहिना ने कोयलो। भलेँ एकटा हंसक रंग आ दोसर कोइलियेक रंग हुअए। दुनू मीठे अछि। जखने गमैआ फलक बाड़ीमे बहरबैया फलक गाछ रोपल जाइ छै तखने ओइपर अपनो नजैर आ आनोक नजैर पड़िते छै...।

दू तारीकक समय धड़फड़ीमे बनि गेल। समाजक बीच पहिल काज छी तखन जँ गोभे सुखा जाए तँ आशा कथी कएल जाएत। मन झनझनेलैन। जहिना झालिक झनझनी वीणाक झनझनीसँ मिलि सूर भरैत तहिना जगरनाथक सूर चढ़लैन। मनमे उठलैन जे जहिना कोनो कार्यक्रमकेँ कोनो कारणे आगू बढ़ौल जाइए तहिना दस दिन पहिने कार्यक्रमकेँ आगू बढ़ा देब। मनमे सबुर भेलैन। मुदा लगले चनैक गेलैन। चनैक ई गेलैन जे समारोहक समय सभकेँ कहि देलयैन ओइ सोचबमे धड़फड़ी भेल। जखन सात दिन छुट्टी बाँकी अछि, तखन किए ने एक बेर गामसँ टहैल आबी। टहैलो लेब आ सभसँ भेँटो-घाँट करैत अपन सभ बात बुझबैत हुनके सभसँ, समैयक अँटावेश करैत कार्यक्रमक समय बना लेब।

जगरनाथक मन फुलेलैन। फुलाइते उठलैन जे केकरो भोज-भात, जात-बरियात आकि आरो कोनो कारणे दरबज्जापर जेबा-एबामे बाधा होइ छै, हमरा कोन अछि। जखन समाजक भोजो-भात नहियेँ खेलयैन तखन अनेरे मुँह फुलाएब हएत। समाजक काज छी तँए समाजक भागीदारी आवश्यक अछि। ओ तँ दस गोरेसँ विचार केले पछाइत सम्भव अछि, तँए नीक हएत जे सेवा-निवृत्तिक बीच्चेमे गाम जा अपन रहैक बेवस्थाक जोगाड़ सेहो कऽ लेब आ कार्यक्रमक भार सेहो समाजेकेँ दऽ

देबैन...।

मन थीर भेलैन। दौड़ला पछाइत जहिना साँस तेज गतिये चलए लगैए तहिना फेर जगरनाथक मनमे उठलैन- 'सम्मानक नाओं' की रहत? मुदा लगले मनमे विचार उठलैन,

'जइ महापुरुषक नाओंसँ सम्मान दिअ चाहै छी, ओ शब्दजालसँ ऊपर छैथ, तँए सभ नाओं बराबरे।'

जहिना राम, कृष्ण, महादेव इत्यादिकेँ हजारो नाओं देव स्वरूप जेबर बनि चमैक रहल छैन तहिना ने रवियो बाबूकेँ चमैक रहल छैन। 'टैगोर' नाओंसँ सम्मान देब उचित हएत। गामक इतिहासक धाराक यएह ने कड़ी छी जे गाम-समाजमे जन्म लऽ विश्वपुरुष लग अपन समाजकेँ पहुँचा नवेद स्वरूप ओइ नाओंसँ शिक्षण संस्था आकि बाल-बोधकेँ उत्सुकता बढ़बैले पुरस्कृत किए ने कएल जाए..?

जगरनाथक मन तनि गेलैन। तनैक कारण भेलैन जे जिनगी विश्व भारतीक बीच सेवारत् रहल, की ओइ समाजक नै भेल? जखन सेवा भेल तखन सेवक बनि सम्बन्ध जीवित बना नै राखी ई केते धरि उचित भेल? गाम सुतल अछि, ओकरा के जगौत..?

मनमे अबिते जगरनाथ बाँकी सातो दिनक छुट्टीक आवेदन लिखि प्राते-भने देबाक निर्णय केलैन।

जहिना कोनो देवस्थान, बजार, समुद्र, झील, पहाड़, विश्व विद्यालय, राज भवन इत्यादि देखैक जिज्ञासुकेँ मनमे रंग-रंगक प्रश्न उपकलो रहैत आ सोझ पड़ला पछाइत उपकबो करैत तहिना जगरनाथकेँ गाम एला पछाइत उपकलैन। गामक सीमामे प्रवेश करिते जे पहिल घर भेटलैन तेतए रूकि गेला। घरवारी थैर खड़ैत रहए, रस्तापर ठाढ़ जगरनाथकेँ टोकैत बाजल-

"बटोही, केतए जाएब?"

घरवारीक प्रश्न सुनि जगरनाथक मनमे अनेको प्रश्न जोर मारलकैन। जोर मारलकैन जे गामेमे 'बटोही' बनि गेलौं? ओहो हमरासँ कम उमेरक नै

छैथ, तखन किए ने चिन्हलैन?

मुदा लगले मन रोकि देलकैन जे हमहीं किए ने ‘फल्लाँ काका’, आकि ‘फल्लाँ भैया’, आकि ‘फल्लाँ भाय’, आकि ‘फल्लाँ बौआ’ कहि पुछलयैन? मुदा लगले तेसर विचार मनकेँ रोकैत शिष्टाचारक बात उठा देलकैन। अखन हमरा की करक चाही, यएह ने भेल शिष्टाचार...।

बजला-

“भाय, हम परदेशी छी, अहीं गाममे पूर्वजक बास छल, हमहूँ घर-घराड़ी, खेत-पथार बेचि कऽ नै लऽ गेल छी, जिनगी भरि परदेश खटलौं, आब चाहै छी अपने सर-समाजक बीच रहि शेष जिनगीक बिसरजन करी।”

‘गौआँ’ सुनि बुधन चौंकल। अपन पूर्वजक बास कहै छैथ, तखन किए ने खरिआरि कऽ पुछयैन...।

बाजल-

“आउ, आउ, पहिने पएर धोइ दरबज्जापर बैसू, बाट-घाटक चलल बटोही छी, थाकल-ठेहियाएल हएब। पहिने पानि पीबू चाह पीबू, पछाइत निचेनसँ आरो गप हेतइ। कोनो कि रहैक घर नै अछि जे रातिमे केतए जाएब तेकर चिन्ता हएत।”

बुधनक विचार सुनि जगरनाथकेँ सबुर भेलैन। सबुर ई भेलैन जे गामक समाजमे अखनो आगत-भागत जीवित अछि! मुदा प्रश्नक जवाबकेँ अँटकाएब उचित नै बुझि जगरनाथ चौकीपर बैस बजला-

“बड़बढ़ियाँ, अहाँ अपन काज सहेज लिअ तखन निचेनसँ गप-सप्प हेतइ।”

बुधन अपन काज दिस बढ़ल। जगरनाथक मनमे उठलैन-

‘की अखनो वएह गाम अछि जेहने देखि कऽ गेल रही? मुदा तेहेन कहाँ अछि। खाली रस्ता-पेरा एकरत्ती चिक्कन भेल बुझि पड़ैए। पजेबा घर सेहो बेसियाएल, तहिना मरल इनारक बदला चापाकल बुझि पड़ैए,

मुदा गाम आ समाज तँ दू छिऐ। गाम भेल घर-दुआर, पोखैर-इनार, कलम-गाछी, खेत-पथार इत्यादि आ समाज भेला ओइठामक बशिचन्दा। बशिचन्दा केहेन बास कऽ रहला अछि ओ भेल सामाजिक जिनगीक स्तर। जेकरा विकासक तुलापर तौलल जाइ छइ।'

जहिना काजपर काज एलासँ करबारीक देहक पानि पनपैए तहिना बुधनकेँ देहक पानि पनपलैन। मने-मन विचारि लेलक जे जाबे आँगनमे चाह बनत ताबे थैरक काज सेरिया घूर लगा पजारि हाथ-पएर धो तैयार भऽ जाएब...।

जगरनाथकेँ आग्रह करैत पुछलकैन-

"चाह-पानि एकेबेर पीब आकि पहिने पानि पीबि लेब?"

बुधनक आग्रह सुनि जगरनाथक मनमे एलैन जे परदेशी छी भने नीक हएत जे गरम-ठण्ढ़ा एकबेर हएत...। बजला-

"अनेरे किए बेर-बेर हरान हएब।"

पानि-चाह पीऐबते, बुधन पुछलकैन-

"अपनेक पिताक नाओं?"

'पिताक नाओं' सुनि जगरनाथक मनमे उठलैन, बहुत दूर समाजसँ हटि गेल छी...।

बजला-

"चेतनाथ।"

'चेतनाथ' सुनिते जगरनाथकेँ लपैक कऽ छातीसँ जोड़ि बुधन बाजल-

"जगरनाथ भैया!"

'भैया' सुनि जगरनाथ बजला-

"हँ बौआ।"

"अपने घर बुझू। जखन गाममे रहैले एलौं तँ समाज थोड़े भगौता।

पहिनौं अहाँकेँ की समाज भगौलैन, अपने ने गेलौं। तहूमे अहाँ सन रत्नक खगता तँ समाजकेँ छइहे।"

सात दिनक छुट्टीमे जगरनाथकेँ दू दिन रस्ते कटलैन, शेष पाँच दिन गाम-समाजकेँ देखलैन-परखलैन। सभ टोलक सभ परिवारक बीच पहुँच सम्बन्ध बनबैक परियास केलैन। गामक रूप-रेखा जहिना किछु नीक तहिना किछु अधलो बुझि पड़लैन। नीक बुझि पड़लैन जे बान्ह-सड़क सुधरल, गाड़ी-सवारी बढ़ल, बाँस-खढ़क घरक संख्या कमल, सिमटी-पजेबाक घर बढ़ल, इनार-पोखैर कमल, चापाकल बढ़ल। अदौक फलो-फलहरी आ गाछो-बिरीछ घटल, बहरबैया बढ़ल, स्कूलक पढ़ाइ घटल, मकान बढ़ल। मुदा जे मूल उत्पादित पूजी छल ओ ठमैक गेल! खेतीकेँ अगुएबाक जे दिशा छै, तइमे कतरनी लगल, जइसँ अर्थ कतरा गेल...।

..एहेन गाम जगरनाथकेँ बुझि पड़लैन। समाजक खेनाइ-पीनाइ, लत्ता-कपड़ाक संग घरो-दुआर नीक बुझि पड़लैन। मुदा बेवहारिक चालि-ढालि तेते नव पीढ़ीमे कहाँ अछि। जे गाममे फगुआ-जुड़शीतलमे सार्वजनिक रूपमे नाचो-गान आ खएनो-पीन होइ छल तैठाम कम्प्यूटर, टी.बी.क नाच-गान आ अपने भरि खाएबो-पीब बनि गेल अछि। ने कियो केकरो लग बैस अपन बेथा-कथा कहैत आ ने सुनैत अछि। जइ पद्धैतक शिक्षा-दीक्षा छल ओ बदैल गेल। विकासक नाओंपर लोकक मनमे एहेन आगि लगि गेल अछि जे शान्त-चित्तसँ ने कोनो काज बुझए चाहैए आ ने बात-विचार। मूल प्रश्न अछि, मनुखक जिनगी आ जिनगीक उदेस? मनुखकेँ की चाही? शिक्षा पद्धैत एहेन पाठ पढ़ा रहल अछि जे समाजकेँ खाधि दिस धकेलने जा रहल अछि...।

छठम दिनक साँझमे जगरनाथ बुधनकेँ कहलखिन-

"दू तारीककेँ पुरस्कार समारोह समाज सूहकारि आयोजनक भार लऽ लेलैन। निश्चित पहुँचबे करब। काल्हि भोरुका गाड़ीसँ चलि जाएब। अहाँकेँ सभ जोगाड़ कऽ देब। घरमे हाथ सेहो लगा देबइ।"

जगरनाथक बात सुनि बुधन कहलकैन- "अहाँक सेवा निवृत्तिसँ

पहिने रहैबला घर जरूर बनि जाएत। समय-समयपर खरचा पठबैत रहब।”

सात बजे समारोहक समय निर्धारित छल, मुदा छबे बजेसँ लोकक जुटान हुअ लगल। पोने सात बजैत-बजैत जगरनाथो आ समाजोक सभ पहुँच गेला। पढ़ै-लिखैबला बच्चो सभ पहुँचल। किछु देखैक खियालसँ किछु प्रतियोगितामे भाग लइक खियालसँ...।

रामकिसुन, राधेश्याम आ गौरीकान्त तीनू गोरे प्रतियोगी भेल...।

प्रतियोगीकेँ केहेन प्रश्न पुछल जाए? समारोहक बीच प्रश्न उठल। एहेन तँ नै जे सफल होइबला प्रतियोगीकेँ एकक जगह एक हजार प्रश्न पुछी, तँए बिनु उत्तर देल प्रश्न पुछल जाए। जँ सभ उत्तर देत तँ पहिल उत्तर देनिहार आगू भेल, जँ कियो ने उत्तर देत तँ दोसर प्रश्न पुछल जाएत...।

मुदा प्रश्नकर्ता के हेता? तैपर समाजक सभ पढ़ल, बिनु पढ़ल, एक स्वरमे बजला-

“जगरनाथ बाबूक आराधल काज छिऐन तँए हुनके प्रश्न रहतैन।”

प्रश्नकर्ता सुनि जगरनाथ घबड़ेला नहि। ओना, पहिने मन डोललैन। डोललैन ई जे गामक विद्यार्थीकेँ जँ गामक प्रश्न नै पुछल जाएत तँ ओकरा संग अन्याय हेतइ। मुदा अपने तँ गाममे कहियो रहलौं नै तखन प्रश्न केतए-सँ आनब! मुदा मोन पड़लैन अपन बालपन। बालपन मोन पड़िते राधोपुरक बरियाती मोन पड़लैन।

..सरियाती-बरियातीक बीच जखन बौद्धिक परिचए हुअ लगल छल तखन सरियातीक प्रश्न रहैन- ‘मरूआ केते गिरहपर फड़ैए?’ मुदा जहिना सरियातीक प्रश्न खसलैन तहिना गोबरधन काका लोकैत बाजल छला- ‘पाँच गिरहपर मरूआ फड़ैए।’ माँजल किसान गोबरधन काका, एके सुरे मरूआक संग-संग आनो-आन जजातिक वृतान्त सुना देने रहथिन। समाजक जीत भेल रहए। आन समाजसँ जीत कऽ आएल रही...। वएह प्रश्न जगरनाथ प्रतियोगीक बीच रखला। जेकर जवाब रामकिसुन देलक। जे पुरस्कारक भागी बनल।

पछाइत तीनू प्रतियोगीकेँ एकठाम बैसा जिनगीक समीक्षा भेल। तीनूक तीन जिनगी। ओना, कहैले तीनू किसाने परिवारक मुदा तीनूक पारिवारिक क्रिया-कलाप भिन्न-भिन्न।

पुरस्कारक घोषणा करैत जगरनाथ अपनो घोषणा केलैन-

“पुरस्कार नाओं ‘टैगोर’ भेल आ जेते कमा कऽ अनने छी तइमे अपन घरो बनाएब आ ‘रविन्द्र पुस्तकालय’क नाओंसँ पुस्तकालैयो बनाएब।”



तिथि: 24 अगस्त 2014, शब्द संख्या: 2423

गावीस मोइस

बड़का छिड़ियेलहा छिट्टामे छाँछी-मटकुरी नेने दौरीवाली कुम्हैन अँगने-अँगने चौरचनक छाँछी-मटकुरी दैत हमरो अँगना एली। हमहींटा नै हमर टोले हुनके सीमामे पड़ैए।

जहिना जमीचन्दारक अपन जमीचन्दारीक सीमा होइए तहिना पसारी-उसारीक सेहो होइते अछि।

परिवारमे भिनौज भेने जमीचन्दारोक जमीचन्दारी बँटाइए आ पसारियो-उसारीक तँ बँटाइते अछि। मुदा से नहि, एक पुरखियाह परिवार रहने तीन पुश्तसँ एके कुमहार परिवारक गाम रहल अछि। ओना, पहिने एक परिवार रहने डोमो-चमारक रहलैन, मुदा बेटाक बाढ़ि एने दुनूक गाम टोल-टोल बँटा गेल। टोलो-टोल कि एक रंग बँटाएल, चारि बेटा भेने डोम चारि टुकड़ीमे गाम बाँटि लेलक, मुदा तीन बेटाक परिवार भेने चमार तीनियेँ टुकड़ीमे बँटने अछि।

पैछले शुक्र दिन दुआइत फुटि गेल। सिलौट सोझे, खोलियापर मोसिक दुआइत रखै छी आ बगलेक खुटीमे पाटी लटका कऽ रखै छी। स्कूल जाइबेर दुआइत उतारए लगलौं आकि हाथसँ छुटि सिलौटपर खसि पड़ल, फुटि गेल। सौंसे सिलौट गावीस मोइस पसैर गेल, आ मोसिदानी जे देने रहऐ ओ दुआतिक पेनीए धेने रहल। तही दिनसँ स्कूल कामे भऽ गेल...।

ओना, माए शनिये दिन दौरीवालीसँ दुआइत मंगलखिन मुदा सठि गेल रहै, तँए वेचारी चौरचनक आबाक नाओं कहलकैन। माइयो मानि

गेली।

मानियोँ केना ने जैतैथ, पहिने माटिकेँ काँच दुआइत बनत, तखन रौदमे सुखौल जाएत, पछाइत आबामे पकि ने काजक हएत, से थोड़े मुहसँ निकलने पुरि जाएत। ओना, सुरुजो भगवान ऐबेर कुमहारपर खुशी छथिन, आबासँ पनरह दिन पहिनैसँ जे रौद रहल, ओ अनका-ले जे हौ मुदा कुमहारक तँ भागे भेल।

भादोक रौद कुमहारे हिस्सामे अछि। भेल रहै तेसराँ, तेहेन सतैहिया चौरचनसँ पहिने लधलक जे आबामे पकैकेँ के कहए जे सेरिया कऽ एकोटा छाँछी-मटकुरी सुखबो ने कएल।

बिनु पकौल छाँछी-मटकुरीमे दही केना पौरल जाएत। मुदा तँए कि लोक पाबैन छोड़ि देत, अरबा चाउरक पीठर घोरि-घोरि पाबैन तँ पुरेबे करत। चौरचनमे हाथ उठेबे करत। सगुन-अपसगुन तँ अपन-अपन सीमामे अछि, कियो खीर-पुड़ीसँ हाथ उठबैए तँ कियो अढ़मे रहि चानकेँ मुँह दुसैए।

जहिना हमर कान खड़ल रहए तहिना माइयो आ कुम्हैनोक रहैन। छिट्टा रखिते दौरीवाली मटकुरीक दोगसँ दुआइत निकालि बजली-

“काकी, पहिने तीनियेँटा भूरबला दुआइत बनबै छेलौं, जइमे कनियोँ धक्का लगने उनैट जाइ छेलै, तँए चारिटा लटकबैबला अछि, आब उनटै-पुनटैक डर कम रहत।”

दुआइत देखि मन चपचपा गेल। केना ने चपचपाइत, आठ दिनमे आठटा खाँत सीखने रहितौं, से तँ पछुएबे केलौं। मुदा काल्हिसँ से थोड़े हएत...।

दुआइतकेँ माए निङ्गहारि-निङ्गहारि देखए लगली जे पाक नीक छै की नहि। किएक तँ भरि जिनगी थाले-पानिमे रहत किने। जँ कनियोँ कँचकुह रहत तँ भसकिये जाएत। माइयक परेखबकेँ दौरीवाली अपन तराजूपर तौल बुझलैन जे भरिसक काकी पाक देखै छैथ। जहिना वेचारी अपन सौदाकेँ गारन्टी दिअबैए जे एते दिन एक्के उपे चलत तहिना

दौरीवाली बजली- “काकी, एना किए निहारि-निहारि देखै छथिन, जहिना विधाता अपन चाकक गढ़लकैँ देखै छथिन तहिना हमहूँ ने अपन गढ़लकैँ देखै छिऐ। जँ से नै देखबै तँ बाल-बोधक काज रोकैक दोखी के बनत।”

वस्त्र उतरल बरकैँ जहिना दाइ-माइ आगू-पाछू चला नाक पकैड़ परीक्षा लइत तहिना माए आङुरसँ ठोकि-ठोकि दुआइतिक परीक्षा लऽ नेने छेली। जे बात कुम्हैनो बुझि गेली। तैबीच हमरो मन पाछू घुसैक गेल। घुसैक ई गेल जे दुआइत भइये गेल, गावीस चाही। बजलौं-

“मोइस कथीकैँ बनाएब। गावीसो तँ नहियेँ अछि।”

ओना, केते दिन गावीस नै रहने चिकनि माटि सेहो घोड़ने छी। दुआइतमे, जे से भट्ठा तँ सोल्हो-अना चिकनियेँ माटिक बनबै छेलौं। गावीस मुलाइम माटि होइ छइ। तहूमे परतदार सेहो होइ छइ। मुदा चिकनि माटि सक्कतो होइ छै आ रंगगरो तँ होइते छै...।

गावीस सुनिते जेना कुम्हैनकैँ बिसरल बात मोन पड़ि पानि चढ़ा देलकैन तहिना हाँइ-हाँइ कऽ लत्तामे बान्हल गावीस छिट्टाक पेनी लग देखैत बजली-

“बौआ, अबैकाल ओरिया कऽ ते रखने छेलौं, मुदा तर पड़ि गेल अछि, अखन जे हाथ गोड़ियेबै तँ बरतन ढनमना जाएत। तहूमे चौरचनक छी, टोनाह होइत अछि।”

माए कहलखिन-

“ओरिया कऽ ऊपरसँ उतारि-उतारि आँगनमे रखि लिअ, गावीस निकालि फेर सेरिया लेब।”

माइयक बात सुनि दौरीवाली कहलकैन-

“जाबे बरतन सेरियाएब ताबे चारि-पाँच अँगनामे बाँटि सधाइए लेब। घुमैकाल देने जेबैन।”

नव दुआइत देखि मन खुशी रहबे करए बजलौं-

“जाबे अहाँ चारि पाँच अँगनासँ घूमब ताबे हमहूँ दुआइतकैँ धोइ,

लत्ता भीजा लइ छी।”

घुमैकाल गावीसक मोटरी दौरीवाली माइयक हाथमे दैत कहलखिन-

“काकी, अपने एकरा चोरा कऽ रखि लथु, जहिया-जहिया बौआकेँ मोइस सधतै तहिया-तहिया दिहथिन, सोहनगर होइ छै, माटि ने खाए लगैन।”

एकटा ढेकरी दुआइतमे दैत कड़चीसँ घोड़ैत कुम्हैनकेँ कहलिऐ-

“यएह गावीस तँ सालोसँ बेसी चलत।”



तिथि: 29 अगस्त 2014, शब्द संख्या: 687

गलती अपने भेल

'गलती अपने भेल' ई बुझैमे आएल कखन, जखन असमसानमे रही तखन। बारह बजे रातिक पछाइत जखने एकादशी चढ़ल आकि सुतलीए रातिमे बाबाक प्राण छुटि गेलैन, अनुमान भेल तखन, जखन खोलियापर जरैत डिबिया बुता गेल तखन। जहिना बारह बजे सुतली रातिमे दिन-तिथि-मिति अपने बदैल जाइए तहिना भरिसक बाबो अपने चोला-चोली बदैल लेलैन।

बीस दिनसँ बाबा बिमार तँए ओगरवाहिक भार अपने रहए। ओगरवाहि ई जे कखन की खगता हेतैन, आकि देहक कड़े बदलैक हेतैन। जखन जिनगी जीबै-मरैक बीच संघर्षरत् छैन्हे तखन कोन गरे ऊँट बैसत, कहबो कठिन अछि। से कि कोनो हुनकेटा छैन से तँ नहियेँ। सबहक सएह छइ। चुल्हिपर चढ़ल ताबाक पानि जकाँ छनाक भऽ सकै छैथ आ स्वस्थ होइत जीबियो सकै छैथ।

मुदा जहिना बारह बजे राति अपन दिनुका औरुदा पुरबैत, तहिना दोसर दीनक अन्हार घटैत इजोत बढ़ैत डुमल सुरूजकेँ पकैड़ अकाससँ धरती देखैत अपन कर्मकेँ भूमिपर उतारि डेग आगू बढ़बैए, मुदा से होइ कहाँ छइ? बारह बजेक अन्हार आरो सघन होइत करियाइते जाइए...।

डिबिया बुताइते बिनु विचार केने मन मानि लेलक जे भरिसक बाबा मरि गेला। मुखौटी केता दिन सुनने छेलौं जे मृत्युक समय डिबिया मिझा जाइ छइ। कहियो देखै-परखैक अवसैर नै भेटल तँए कनी-मनी ऐपर बिसवासो हुअए आ कनी-मनी नहियोँ हुअए। मुदा ओइकाल से नै भेल, सोलहन्नी मन कबूल लेलक जे सत्ते एहेन होइ छइ। देहक मालिक मने ने

छी, जेहेन मन तेहने ने देहो हएत। अपाहिजो भऽ सकैए आ दिव्यो भऽ सकैए। ओछाइनपर सँ उठिते विचार झगैड़ गेल। झगैड़ ई गेल जे पहिने डिबिया नेस इजोत बना लेब नीक हएत आकि पहिने बबेकैँ नाकक साँस देखब नीक हएत..?

दुनू प्रश्न ऊपरा-ऊपरी, डिबिया नेसला पछाइत इजोतमे देखब बेसी नीक हएत। फेर हुअए जे एक बोलिया सिपाहीक ड्यूटीमे छी तँए बाबाकेँ देखब-सुनब पहिल काज भेल। फेर मनमे भेल जे पहिने डिबिये नेस लेब नीक हएत, नीक ई हएत जे देखए-परखए पड़त किने, तँए एते करैले प्रकाशक प्रमुखता अछिए। एक तँ अहुना डिबियाक इजोतपर कीड़ियो फतींगी खसने मिझाइए। एकटा सलाइयक कटकी खड़ैर डिबिया नेसैमे केते समैये लगत। सलाइ खड़ैर डिबियाक मुँहपर भिरा देलिऐ, बड़बो कएल मुदा लगले फकफका कऽ मिझहए लगल। जहिना प्रेमलहीन ज्योति फड़फड़ाइए तहिना। देखिते रही आकि फकफकाइत-फकफकाइत मिझाइए गेल। मुहठी खोलि टेमी घुसकेलौं अन्हारमे तेल केना देखब..?

मुदा लगले मनमे उठल जे मुँह गरे डिबियाकेँ उनटौलासँ सेहो तेल परखले जाइए किने। सएह केलौं, सिनेह विहीन प्रकाश हेबे केना करत? जँ हुऔ चाहत तँ टेमीए जरौत। मन अकछए लगल। मनक सभ विचार छोड़ि डिबिया-सलाइ रखि बाबा लग जा नाकक साँसपर दहिना हाथक दोसर आङुर दइते बुझि पड़ल जे साँस बन्न भऽ गेल छैन!

पहिल खेप नाकपर आङुर देला पछाइत, साँस बन्न भेनौं, अपनेपर शंका भेल, तँए दोहरा कऽ फेर आङुर देलयैन। मुदा साँस ठीके बन्न भऽ गेल रहैन। अनायास स्कूलक बात धक-दे मनमे उठल। उठल जे ई नै बुझि पेलौं जे मरैकाल नाकक दहिना पुड़ाक साँस चलै छेलैन आकि बामा पुड़ाक। जिनगीक यएह ने शुभ-अशुभ भेल। अहीठाम ने नीक-बेजए तौलैक तराजू अछि। तराजूपर तौलेसँ पहिने चानिमे चौन्ह उपैक गेल जइसँ दुनियेँ चोन्हिया गेल। चोन्हियाइते सगतैर अन्हार भऽ गेल। आब की करब? मुँहक बोलकेँ मन धकेल-धकेल कहए लगल- "जोरसँ बाज, जोरसँ

हल्ला कर।”

मुदा मुँह तत्-मत् मे पड़ि गेल जे एती रातिमे की हल्ला करब? की जोरसँ बाजब। अधरतियामे लोक चोर-डकैतक हल्ला करैए से तँ भेबे नै कएल अछि। बाबाक प्राण छुटलैन अछि। जिनगीमे लोक केते नीक-नीक प्रण करैए, छुटै छै, केते छोड़बो करैए।

ओना, अगिलग्गीमे सेहो लोक हल्ला करैए, मुदा जेते हल्ला करैए तेते ठनका खसैक समय जहिना बिजलोका लोककेँ सूचित करै छै, तहिना ने अगिलग्गियोमे आगिक इजोतो हल्ला करै छइ। मुदा सेहो तँ नहियेँ भेल अछि, तखन हल्ला की करब। हँ एकटा आरो अछि बाढ़ि आ अन्हर, मुदा बिजलोके जकाँ ने अन्हरोक ऐगला सिहकी सूचित करैए, सेहो नै भेल। बाढ़िक पानि तँ अपना गतिये धरतीपर चलैए जे लोक पहिने बुझि जाइए, तखन हल्ला करब नीक नहि। ओना, एहेन हल्ला सदिखन होइए जे अमुक तारीककेँ प्रलय हएत, तँ कखनो ईहो हल्ला होइए जे उनटन हएत, तँ कखनो एहनो हल्ला तँ होइते अछि जे एते ग्रह एकठाम भेने दुरग्रह हेबे करत। खाएर-जे-से...।

माएकेँ सोर पाड़ि जगेलिऐन। बगलेक कोठरीमे माए सुतल। परिवारमे अनेको एहेन कारण अछि जइमे परिवारक लोककेँ जगौल जाइए, तइसँ आन परिवारकेँ किए मतहानि हेतैन। जिनका हेतैन तिनको तँ होइते छैन। दैनंदिनक किरिया-कलापमे हेबे करत...।

केबाड़ खोलि माए बजली-

“बौआ सिरिस, किए सोर पाड़लह?”

माइक आवाज सुनि बुकौर लगि गेल। बुकौर ई लगल जे हमर ने बाबा छला, मुदा माइयोक तँ अर्द्ध-पिते छेलखिन, दुनियाँ छोड़ि चलि गेलखिन मुदा बुझबो ने केलैन। परिवार हौ आकि समाज, सम्बन्धो तँ दोहरी होइए, बेकतीगत आ पारिवारिक-सामाजिक...।

अपन दोख बँचबैत बजलौं- “माए, डिबियामे तेल सठि गेने मिझा गेल तँए दोसर डिबिया नेस कऽ नेने आ।”

माइयो सएह केलैन। अपने कोठलीसँ डिबिया नेसने एली। खोलियापर डिबिया रखि बजली-

“एकबेर बाबुओकेँ जगा कऽ पुछि लहुन जे पाइनियोँ-ताइनियोँक तिरखा छैन।”

माइक बात सुनि मनमे बुमकल्ला जकाँ उठए लगल। अपन मन कबूल नेने छल जे बाबाक साँस छुटि गेलैन, जखन कि माए अखनो बुझि रहली अछि जे जीविते छैथ। जखन जीबै छैथ तखन किछु ने किछुक खगता हेबे करतैन। जे सोभाविको अछि। जहिना अन्नसँ पेट भरलो पछाइत पानिक खगता रहबे करैए तहिना अन-पानि भरलो पछाइत नीनक तँ खालिये रहैए किने। तँए जाबे खाली रहत ताबे खगता रहत। माइक बात सुनि चुपे रहलौं...। माए अपन दायित्व बुझि, दायित्व ई जे जखन हम छी तखन सिरिस तँ पछुआ बच्चा भेल, बाबा लग जा बजली-

“बाबू, बाबू।”

बाबू जीवित रहितैथ तखन ने, बजैक कोन बात जे सगबगेबो ने केलाह! देहपर हाथ दए डोलौलैन, तैयो नै किछु बुझि पड़लैन। छातीक गतिपर हाथ देलखिन, हाथ दइते छाती थीर बुझि पड़लैन। थीर छातीक अनुभव होइते माएकेँ मनमे जोरसँ धक्का लगलैन। धक्का लगिते चिचिया उठली-

“बौआ सिरिस, बाबू नै रहलखुन!!”

जहिना घाट परहक यात्री पछुआएल यात्रीकेँ देखिते नाहपर चढ़ैए तहिना माइयक आवाजमे अपनो मिलबैत बजलौं-

“बाबाकेँ सार्सोँ बन्न भऽ गेल छैन।”

कहि चुप भऽ गेलौं, मुदा माए झौहैर करैत झड़-झड़ा देलखिन। झड़-झड़ाइते एके-दुइए टोल-पड़ोसक लोक आबि-आबि, देखि-देखि कानए लगला। सभ कननिहारे तँए केकर कानबकेँ के सुनत। झमटगर झौहैर भऽ गेल। मुदा झौहैरसँ, जहिना आगि पड़ल धान जना लाबा होइते

आगिसँ कूदि धरतीपर खसैए, ओना, आगियोमे खसिते अछि, तहिना झौहैरसँ निकलए लगल-

"टोलमे सभसँ बुढ़ बबे छला, जे समाजक बेटीकेँ बिनु दहेजक बिआह सभसँ बेसी करौलैन। अनका जे से हमरा बेटीक तँ वएह अपन खेत भरना लगा करौलैन। हम गाए नै खाएब, जहिना जीवितमे बाबाकेँ जनै छेलिऐन, तहिना जाबे जीब ताबे जनैत रहबैन। जनबे नै करबैन जँ धरमराजो लग गवाहीक काज पड़त तँ कहब।"

"दिन-वेरागन आब के कहत!"

"मतरनमी पितरपछमे अरबा चाउर, राहड़िक दालि केतए-सँ आनब। गामक लोक तेहेन अदत सभ भऽ गेल अछि जे अनके ठकि-फुसिया कऽ खाएत मुदा अपन नै देत। केना कऽ पइत बँचत।"

"छइहे केकरा जे बेर-बेगरता सम्हारत। जइसँ बेर-बेगरता समहारल जाइए से छइहे केकरा।"

झौहैरक बीच मरदा-मरदीक विचार भेल जे एते रातिमे असमसान जाएब गरूगर अछि। गरूगर ई अछि जे बिना नव वस्त्रे आँगनसँ निकालल केना जेतैन, तहिना चारिजन लैयो जाइबला चाही। केना अखन बाँस काटल जाएत आ ओकर अचरी-चचरी बनत। नव बरतनो कुम्हरटोलीसँ आनए पड़त। दिनुका बात रहैत तँ सभ असानीसँ होइत, मुदा रातिमे रस्ता चलब गरूगर अछि। अनेको रंगक विषैला जीव-जन्तु रस्ता पकड़ने रहैए...।

अन्तमे विचार भेल जे घरक ओछाइनकेँ अँगनाक तुलसी-चौरा लग दिऔन। सएह भेल। मुदा चौरा लग ओछाइन होइते नव लोक आ पुरान लोकक बीच कहाकही शुरू भेल। पुरान लोक सभ जगरनाथ बाबाकेँ अगुआ अपन विचार रखैले कहलकैन। सभ दिनक बुझल-गमल जगरनाथ बाबाकेँ रहबे करैन, धाँइ-दे बजला-

"तुलसी चौरा दिस सिरहौना करैत उत्तर मुहेँ पाड़ि दिऔन।"

गाम-घरमे होइतो तहिना छइ। अखन धरिक चलि अबैत बेवहारपर

जगरनाथ बाबाकेँ बिसवास छैन्हे। तँए बोलीमे किछु तीखपन छेलैन्हे। मुदा जगरनाथ बाबाक विचारकेँ नवतुरिया सभ मानैले तैयारे ने भेल। ओ सभ पशुपति भायकेँ अगुअबैत अपन विचार रखैले कहलक। बहरबैया पशुपति भाय, दुनियाँक रंग-रंगक हवा लगले रहैन, लगबो केना ने करितैन। पनरह बर्खक नोकरीमे सभ तरहक पन्थाइकेँ देखि नेने छला किने। संगे औझुका विज्ञानो बुझै छला। बुझै ई छला जे दुनियाँ गोल छइ। गोलमे पूब-पच्छिम उत्तर-दच्छिन बेराएब कठिन अछि...।

अपन विचार रखैत पशुपति भाय बाजल-

"कोन पुरना बेवहार धेने छी, जेम्हर मुहेँ बाबाकेँ सुगम गर धरैन तेम्हर मुहेँ पाड़ि दिऔन।"

पशुपति भाइक बात सुनि जगरनाथ बाबा पीनैक गेला। पीनकबो केना ने करितैथ, बाप-बेटामे जुति-भाँति-ले तँ झगड़ो होइए आ केसो-फौदारी होइए, ई तँ सहजे समाजक छी, गामक छी। बजला-

"ऐठाम जे ठाढ़ हेबहक तँ चारूकात, पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन देखबहक किने?"

पशुपतियो भायकेँ जेना जीहेपर रहैन, धाँइ-दे उत्तर बजला-

"ऐठामसँ उत्तर जे गाम अछि ओहो तँ केकरो दछिने अछि, तहिना दोसरोक अछिए।"

पशुपति भाइक बात सुनि जगरनाथ बाबा ठमकला, मुदा जनिजाति सभ बिच्चेमे तेते घोल करए लगली जे पशुपति भाय तहीमे जेना धकला गेला। मुदा धकलाइतो बजला-

"आइ, दुनियाँ परिवार जकाँ भऽ गेल तँए उत्तर-दच्छिन, पूब-पच्छिम सभ मेटा गेला। अहुना जँ उत्तर मुहेँ विदा हएब आ चलिते रहब तँ उत्तरे-उत्तरे दच्छिन होइत एतइ चलि आएब, तहिना दछिनो मुहेँ आ पूबो-पच्छिम मुहेँ चललासँ होइ छइ।"

बजैत-बजैत पशुपति भाय बाजि गेला मुदा जनानाक हल्लासँ

पछाड़ खा गेला। अपन विचारकेँ रोकि विचार केलैन जे समाजक जे कर्तव्य-धर्म अछि ओइमे संग पूरब नीक हएत...।

हो-हल्ला होइत भोर भऽ गेल। किरिणक लाली पूब दिस झलकए लगल। भाय, जखन मृत्युक लहाश देखलौं तखन बिना पार-घाट लगौने घरमुहोँ हएब उचित नहि। बेड-टी-तेड-टी कोन वस्तु भेल जे तइले प्राण छुटि जाएत। मुदा जनानो सभ तँ देखबे-छुबे केलैन, ओ तँ अँगने जेती।

काजो तँ काज छी। चाहे ओ जीवित हुअए आकि मृत्यु सिरपर सवार हेबे करत। जखने सिरपर सवार हएत तखने देहमे फनफनी आनि फुनफुनेबे करत। तहूमे जैठाम लोकक जमघट नै रहल तैठाम, मुदा जैठाम से रहत तैठामक रूतबा तँ आरो दोसरे भऽ जाइ छइ। जेते मुँह तेते जुति। बुढ़-पुरान सभ बैस विचार केलैन जे जगरनाथ बाबाक देख-रेखमे ऐगला काज हएत बाँकी सभ काज केनिहार भेलौं। जे जे जइ-जोकर छी से तेहने काजक भार उठाउ...।

काजक बाँट सुनिते पशुपति भाय बजला-

"हमरा तेज सवारी अछि, बजारक काज करए हम जाएब।"

पशुपति भायकेँ काजमे अगुआइते धाँइ-धाँइ कियो बाँस कटैक तँ कियो साबेक जौड़ बँटैक तँ कियो कुम्हार ऐठामक काज करैक भार उठा चारू दिस विदा भेला...।

समाजो तँ समाज छी जँ अनठौला तँ सुइयो-साँङ्गिपर उठाएब कठिन आ जँ सुढ़िएला तँ केहेन-केहेन बहैत धारक मुँह बान्हि, पानिकेँ रोकि अपन खेत पनिया लइ छैथ।

मोटर साइकिलपर चढ़िते पशुपति भाइक मनमे बाबाक मृत्यु नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे परिवारक बीच मृत्यु भेलासँ केते सुगमतासँ सभ काज भऽ रहल अछि। मुदा लगले मन मुड़ि गेलैन। मुड़ि ई गेलैन जे अनेरे नव वस्त्रेक कोन काज छै, अखनो तँ ओहन लोकक कमी नहियेँ अछि जेकरा जीता-जिनगी नव वस्त्रसँ भेँट नै होइ छइ। जखन बाबा मरि गेला तखन जे अपन ओढ़न-पहिरन वस्त्र छैन तहूसँ काज चलि सकैए।

तहूमे फेकलोहो वस्त्र जखन पहिरनिहार अछि तखन अनेरे जराएब केहेन हएत। गाम-घरक लोक कोनो बेजए कहै छै-

“जीतामे गुहाँ-भाता आ मुइलामे दुधा-भाता।”

समाज तँ समाजे छी तइसँ कि कम सरकारो अछि। दस टुकड़ी भेल ट्रेनक लोहाक पहियासँ कटल लहाशकेँ पोस्टमार्टममे लऽ जा बीस टुकड़ी कऽ आरो दुइर करिते अछि।

जाबे बजारसँ कपड़ा आएल ताबे तीनटा बाँस काटि सुतै जोग रंथी बनि तैयार भऽ गेल छल। आगि-कोहाक ओरियान सेहो भइये गेल छल। कपड़ा अबिते बाबाकेँ ओढ़ा चचरीपर चढ़ा जौड़सँ बान्हि देलकैन, आब चारि गोरे कन्हापर उठा गाछी लऽ जेतैन।

अखन धरि कोनो काज सिरपर नै आएल छल तँए बाबे लग बैस देखै छेलौं। अपन भागीदारी चाहै छेलौं मुदा केतौ गर नै लागल। आगूक काज नजैरपर पड़ल। पड़ल ई जे चारि गोरे कान्हपर उठा लऽ जेतैन तइमे संग भऽ जाएब। नमगर-छरगर छीहे। जखन उठबै बेर रंथीक भेल आकि पढ़ुआ काका हमर बाँहि पकैड़ लेलैन। बाँहि पकड़ैक कोनो अरथे ने लगल जे बाँहि किए पकैड़ लेलैन। अखन तँ गाछी जाइक बेर अछि। कहलयैन-

“काका, अखन तक कोनो काज बाबा नीविते नै केलौं हेन, तँए कान्हपर हमहूँ उठाएब।”

जहिना हम कहलयैन तहिना ओ बुझबैत बजला-

“बौआ, अखन तूँ दसमे किलासमे पढ़ै छह, ब्रहमचर्य आश्रमक भेलह, अखन जे काज उपस्थित अछि ओ गिरहताश्रमक काज छी तँए तोरा अधिकार नै बनै छह?”

कक्काक विचार सुनि गुम भऽ गेलौं। जानल-मानल काका छैथ। कहुना भेलौं तँ अखन माध्यमिके स्कूलक विद्यार्थी भेलौं। मुदा मनकेँ तेना बाबा पकैड़ नेने रहैथ जे मनसँ हटबे ने करैथ...।

बजलौं- “काका, अधिकार जेतए छै, तेतए छै, मुदा ऐठाम तँ बाबा-

पोताक सम्बन्ध अछि।”

अनका जकाँ काका तमसेला नहि। असथिरसँ बुझबैत बजला-

“बौआ, तोहर अधिकार अपवादमे रहत। ऐठाम समाजक संग छह, समाज संग छथुन। तोहर परिवार पीड़ित परिवार भेल, ऐ पीड़ाकेँ निमाहैक समाजक काज बनि गेल अछि। तँए ई काज समाजक छिऐन। बिना हुनका विचारे नै करक चाही।”

अपवादक कोनो अरथे ने लगल। पुछलयैन-

“काका, अपवाद की कहलिऐ?”

“अपवाद ई भेल जे एहनो समाज अछि जे रत्ती-बत्ती भऽ टुटि-फाटि गेल अछि। एते तक कि जे एहनो लोक भऽ गेल अछि जे माए-बाप परिवार दिस तकबो ने करैए, सेवा कहाँसँ करत। ओहन परिस्थिति बनब अपवाद भेल। शिष्ट समाज आ अशिष्ट समाजमे दुरी बनि जाइ छै, जइसँ कोनो रीति-नीति विघटित भऽ जाइ छइ।”

पढ़ुआ कक्काक संग गप-सप्प चलिते छल आकि बिच्चेमे छीतन भाय बजला-

“बाउ सिरिस, कोनो काज पहिआ कऽ करब बेसी नीक होइ छै, एना धड़फड़ाइ किए छह, बाबाक पाछू जे छैथ हुनकर काज ने हेतैन। स्कूलो-कौलेजमे नै देखै छहक जे प्रधानाचार्य नै रहने सहायक प्रधानाचार्यक ऊपर भार आबि जाइए। जे उचितो अछि।”

उचित सुनि टोकि देलयैन-

“केना उचित भेल?”

छीतन भाय बजला- “क्रमिक काज ई भेल जे बाबाक नीचाँ जे छैथ हुनकर अधिकार उचित भेल। तूँ ते तेसर सीढ़ीमे भेलह, बीचला दोसर सीढ़ीक काज जखन शुरू हएत तखन क्रमश: तोरो भाँज औतह। ओ भाँज निमाहब तोहर उचित भेल।”

छीतन भायसँ गप-सप्प करिते रही, आगि-कुश-कोहा लऽ आगू-

अगूआ चलैक प्रश्न उठल। मुदा जेना पिताजीकेँ बुझले रहैन तहिना हाथमे लऽ आगू विदा भेला। पाछूसँ चारि गोरे बाबाकेँ कान्हपर उठा विदा भेला। 'राम-नाम सत् है'क आवाज धरतीसँ अकास धरि गनगना गेल।

असमसान पहुँचते बाबाकेँ निच्चाँ उतारि, काजक जुति-भाँतिमे सभ लगि गेला। जगरनाथ बाबाकेँ जेना सभ काज अखिहासले छेलैन तहिना बजला-

"लहाशक बगलमे अछिआ खुनू, दोहरा कऽ लहाश नै उठत।"

सएह भेल। मनमे भेल जे जुआन-जहान छी, कोदरवाहीक काज ऐछे आगू बढ़ि एकटा कोदारि पकड़लौं। मुदा लगले जगरनाथ बाबा मनाही करैत बजला-

"बाउ सिरिस, तोरा बुते नै हेतह?"

पुछलयैन-

"किए?"

कहलैन-

"बेसी कारीगीरीक काज अछिआ खुनब छी, तूँ ने बुझहै छहक जे कोदारिसँ खाली माटि खुनब भेल मुदा से बात नै छै, केते गहींर, केते नमगर-चौड़गर हएत ओ बिना नाप-जोखसँ थोड़े होइ छइ। लहाश समापनक सभ प्रक्रियाक ठौर बनबए पड़ै छइ। तँए तोहूँ एते करह जे सभ कुछ आँखिसँ देखहक। एक तँ काजक प्रक्रिया छी, दोसर मनेक ने बात छी, जँ कहीं घुसुक-फुसुक गेल तँ काज गड़बड़ो भऽ सकैए। यएह सोझ-साझ करब भेल सनातनी पद्धैत।"

जगरनाथ बाबाक मुँहक बात 'सनातनी पद्धैत' सुनि जेना मनमे विद्रोहक विचार पनपल। पनपल ई जे मनुख अपन परिवारक काज अपने सम्हारि लेत तँ की ओ समाज छिड़ियाएले रहत? सभ परिवारकेँ अपन इतिहास छै, जेकरा भीतर जीवनक ऐना छइ। ओइ ऐनामे देखि ओकर विचार हेबा चाही। जैठाम जे गड़बड़ छै ओकरा बुझा-सुझा ने काज

सम्हारब नीक भेल...। मन कनी उफनिये गेल रहए। कुरहैरक काज करए आगू बढ़ि एकटा कुरहैर पकड़लौं। जहाँ कुरहैर पकड़लौं आकि जगरनाथ बाबा रोकैत बजला-

“बौआ, सिरहौना-पतौना नापियौँ-जोखि कऽ आ गरो अँटकारि कऽ बनबए पड़ै छइ। तोरा बुते नै हेतह।”

जँ सोझे मुहेँ कहने रहितैथ जे तोरा बुते नै हेतह, तखन किनौं नै बात मानितिऐन मुदा पाछूमे जे हनुमानी-पुछड़ी लगल अछि- ‘नापि-जोखि आ गर अँटकारि।’

नाप-जोख तँ हाथे-बाँहिक काज भेल, हाथ संगेमे अछि, मुदा गरक अँटकार केना करब, ई तँ नजैरक काज भेल। से कहाँ अछि..?

मन हरैद गेल। हारियो मानब ऐ स्थितिमे उचित नहि। खिसिया कऽ जगरनाथ बाबाकेँ कहलयैन-

“बाबा, हमरो कोनो काज देखा दिअ बैसलमे बाबा धिकारता जे जे बैस कऽ समय बितौत ओ बैसले रहि जाएत आ जे सुति कऽ समय बिताएत ओ सुतले रहि जाएत। तँए जे रातियोकेँ सुति कऽ नै जागि कऽ दिन जकाँ बना काज करत जिनगी ओकरे छिऐ।”

अपन बाबाक बात जखन जगरनाथ बाबा सुनलैन तखन जेना कियो समुद्रक ढोहिपर सँ नहा कऽ आएल होथि तहिना बजला-

“बौआ, तूँ बाबाक लहाशे लग बैस कऽ ओगरवाहि करह। जएह कौआ, गीध, जागलमे काते रहतह वएह आँखि मुनिते पहिने आँखियेपर लोल मारि फौड़ए चाहतह। तँए सचेत भऽ रहब जरूरी छह।”

जगरनाथ बाबाक विचार जेना मनकेँ सिर-सिरा देलक। बिनु किछु बजने-भुकने बाबाक पँजरा लग आबि बैस गेलौं।

ओना, जरबैले कठियारी बहुत लोक गेल रहैथ केतबो काज रहै तैयो किछु गोरे बिनु काजेक रहैथ। चारूकात छिड़िया कऽ बैसलो रहैथ। अजमा कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे एते-लोकक बीच कौआ-गीधकेँ केना

हिम्मत हेतै जे एतए आबि बाबाक आँखि फोड़ि देतैन? मुदा लगले मनमे उठल जे मेला-ठेला आकि हाट-बजारमे तँ लोकेक भीड़ रहै छै, तैबीच केना एते-चोरी, पॉकेटमारी होइए? मन ठमैक गेल। चुपचाप बैस ओगरवाहि करए लगलौं।

बाबा लग बैसलाक कनीकालक पछाइत जेना दुनियाँ अन्हार जकाँ बुझि पड़ल। ओना, आँखि तकिते रही मुदा आँखिक रोशनी विलीन भऽ गेल। जहिना कोनो देवालयक सुरता एने डोर लगि जाइत, जे जल्दी-सँ-जल्दी ओइठाम पहुँच दर्शन करी, तहिना मन भेल। होइते ओ बाबा नजैरक सोझ आबि गेला जे दरबज्जापर किछु-किछु पढ़ैओ-लिखैक बात कहै छला आ कोनो-कोनो काजो अढ़ा करबै छला। ओना, जिनगीक अन्तिमो समय धरि बाबाकेँ कहियो बिनु काजे बैसल नै देखै छेलिऐन। काजो तँ सभ रंग होइते अछि, किछु काज जहिना रौद-वसातमे होइए तहिना किछु काज एहनो ऐछे जे घरो-अँगनामे होइए। जखन जेहेन समय तखन तेहेन काज। जँ से नै हएत तँ वएह भेल प्रतिकूलता। प्रतिकुलता ई जे जँ जेठ मासक कड़कड़ाएल रौदमे कियो कोदारि पाड़ए आकि पाथरक टुकड़ा उघैक काज करए तँ ओ प्रतिकूलता भेल। ओना, सभ किसिमक काजक खगता सभकेँ ऐछे, तँए काजकेँ समयानुसार सुतिया कऽ पकड़ब सुतिहारक काज भेल। जँ से नै भेल तँ ओहीठाम लोक भुतिया जाइए। जखने भुतियाएल तखने केम्हर कोन मुहेँ केतए चलि जाएत तेकर ठेकान नै रहि पबैए। मोन पड़ल बाबाक ओ बात जे केता दिन कहने छला-

“बौआ सिरिस, अखन तूँ बच्चा छह, पढ़ै-लिखै छह। पढ़ला-लिखला पछाइत माने विद्यार्थी जीवनक पछाइत पारिवारिक जिनगी शुरू होइए जे जीवनक एकटा मोड़ छी।”

मने-मन पूजाक मंत्र जकाँ ओ मोड़ दोहरा-तेहरा उठल लगल। मुदा की मोड़ छी आ केना ऐ मोड़मे मुड़ी पैसाएब, से बुझिए ने पाबि रहल छी। मुड़ोक तँ केते रूप अछि, केतो राजमुकुटकेँ सुशोभित करैए तँ केतो लुल्हो-नाँगरक माथक शोभा बढ़बैए। केतौ जंगलमे नाच करैए तँ केतौ

लोके मोर-मोरनी बनि चौकी-तोर नाच करैए...।

मुदा ऐगला बात, जिनगीक मोड़क नै बुझि पेलौं। जे बाबा धरतीपर सँ अधडरेड़ गाछपर चढ़ैक बात कहलैन ओ अधडरेड़सँ फुनगियो धरिक कहि सकै छला, मुदा छुटि केतए गेल। की बाबा छोड़लैन आकि अपने छोड़लौं..? मनमे अबिते नजैर घूमल। घूमल ई जे अखन बाबा मृत्युसज्जापर सुतल छैथ, ओगरवाहक रूपमे बैसल छी, दुनू गोरेक बीचक बात, तेहल्लाक जरूरत नै अछि। अपन पनचैती अपने करैक अछि। जेना गाम-घरमे होइ छै जे मुहदुबरा बौहु सबहक भौजाइए भऽ जाइ छै, तेना जँ खनदानक पीढ़ीक बीच करब, ई अन्याय हएत। मोन पाड़ए लगलौं जे कहियो बाबाकेँ पुछबो केलिऐन जे 'बाबा, दू जिनगीक मोड़े ने संक्रमण छी। जेना एक मौसम दोसरमे गर धऽ-धऽ बदलैए तहिना ने जिनगियोक मोड़ एक जिनगीसँ दोसर जिनगीमे बदलैए..?'

मुदा लगले मन ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे मौसम बदलैक पाछू पैछला मौसमकेँ केते अनुकूलता भेटलै आ केते प्रतिकूलता यएह ने ओकर कारक भेल। जेना कोनो पहाड़ी बोनमे कियो भुतिया जाइए, जैठाम एक दिस बड़का-बड़का पहाड़ ठाढ़ रहै छै, तैबीच बाघ-सिंहक बोन होइ, चारूकात पहाड़पर सँ पानि झहरैत होइ, तहिना भेल। मोन पड़ल बाबाक ओ बात-

"बौआ, अखन तोहर मुख काज पढ़ब भेल। पढ़बक माने ई नै भेल जे सोझे किताब पढ़ै छी। पढ़बक माने भेल जे चतरल बर-पीपरक गाछ जकाँ जिनगियो चतरैत चलए।"

मोन पड़िते सौनक मेघ जकाँ आँखि ढबैक गेल। जहिना कोनो चीज लिखैकाल पेनक बोकारसँ कागजपर ढबकि जाइत, जे हल्लुक बोकरानमे तँ नै मुदा नमहर बोकरानमे तँ सभ लिखलाहा दुइरे कऽ दइत...। तहिना भेल।

मोन पाड़ए लगलौं जे एहेन प्रश्नक उत्तर छुटि केना गेल? नबे बर्खक जिनगीक भोगल-परखल अनुभवी बाबा छला। अनेको रंगक प्राकृतिक

प्रकेप- बाढ़ि, रौदी, अन्हर-बिहाड़ि, भुमकमसँ मुकाबला केने छला। पैछला भुमकममे घर कमजोर रहैन, खसि पड़लैन, हालक भुमकममे घर मजगूत छेलैन तँए नै खसलैन। भुमकम तँ ओतबे टा छल। यएह भेल प्रकृतिक बीच जिनगीक खेल...। ओह! अनेरे मन वौआ गेल, बाबार्कें आब नहबै-सोनबैक बेर भऽ गेल। मुदा अन्तिम क्षण जँ अपन सम्बन्ध-सम्बन्धीक पनचैती सोझमे नै कऽ लेब तखन तँ परोछक भोज जेहने होइए तेहने परोछक पनचैती हएत किने? मोन पड़ल बाबाक ओ बात जे कहने रहैथ-

“बौआ सिरिस, जहिना स्कूलमे पढ़ै छह तहिना घरोपर पढ़ह।”

‘घरोपर पढ़ह’ स्मरण होइते मन दरैक गेल। दरैक ई गेल जे जहिना स्कूलक शिक्षक पढ़ल-लिखल छैथ तहिना तँ बाबो छला, मुदा घर-पर नै पढ़ने छुटि गेला। यएह ने अपन गलती भेल। हाथ जोड़ि बाबार्कें कहि माफी मंगलयैन। मुदा केहेन माफी ओ देलैन से तँ जीवित रहितैथ तँ मुहसँ कहितैथ, मुदा...।

मनक बातक विसरजन भेबो ने कएल छल आकि जगरनाथ बाबा आबि बजला-

“बौआ सिरिस, नहाएब-धोब, अंग वस्त्र चढ़ाएब परिवारक काज भेल। जारैन तैयार भऽ गेल, अछिओ सजि रहल अछि, अपन अपन काजमे मुस्तैदीसँ लगि जाउ।”

देखिते-देखिते बाबा अछिआपर सजि गेला। संस्कार पड़ि गेल। देखिते-देखिते बाबा पञ्चतत्त्वमे विलीन भऽ गेला..!

❑

तिथि: 06 अगस्त 2014, शब्द संख्या: 3375

❑❑❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

रचना संसार

----------.

---

1. भैंटक लावा, 2. बिसाँढ़, 3. पीरारक फड़, 4. अनेरुआ बेटा, 5. दूटा पाइ, 6. बोनिहारिन मरनी, 7. हारि-जीत, 8. ठेलाबला, 9. जीविका, 10. रिक्साबला, 11. चुनवाली, 12. डीहक बटबारा, 13. भैयारी, 14. बहिन, 15. घरदेखिया, 16. पछताबा, 17. डाक्टर हेमन्त, 18. बाबी, 19. कामिनी, 20. मौलाइल गाछक फूल, 21. मिथिलाक बेटी, 22. जिनगीक जीत, 23. उत्थान-पतन, 24. जीवन-संघर्ष, 25. जीवन-मरण, 26. मन-मणि, 27. चल रे जीवन, 28. धोब घाट, 29. सासु-पुतोहु वार्ता, 30. बौड़ाएल बटोही, 31. अपनेपर हँसै छी, 32. धोबि पाट, 33. साँझ, 34. सात्त्विक भाव, 35. दिव्य शक्ति, 36. उड़ियाएल चिड़ै, 37. रणभूमि, 38. सान-धार-धारा, 39. पपीहाक गीत, 40. विषधरक बीख, 41. मिथिला केहेन, 42. मौसमक मुस्की, 43. आशा, 44. आँखि, 45. मधुरस, 46. बीआ, 47. महजाल, 48. बाट, 49. डभियाएल डगर, 50. लज्जैत, 51. गीत, 52. गंग स्नान, 53. फनकी, 54. सभ किछु छै जालेमे, 55. गंगा नहाइ, 56. गोधन पूजा, 57. माटिक फूल, 58. झगड़ा, 59. नजैर, 60. कमलाधार, 61. बाल कविता, 62. विभूत, 63. झूठ-साँच, 64. नव दुनियाँ, 65. पुरुषार्थ, 66. सरस्वती वन्दना, 67. भीड़-भार, 68. सरस्वती हमर, 69. अगहन, 70. केना मेटत गरीबी, 71. संघर्ष, 72. साँझ-भोर, 73. समय, 74. जिनगीक मोड़, 75. अकलबेड़ा, 76. धूप-छाँह, 77. माए, 78. साथी, 79. घरक लोटिया बुड़ले अछि, 80. जुग बदलल जमाना बदलल, 81. फँसरी, 82. गरीबी, 83. दबाइए रोग, 84. मुँहक झालि, 85. किछु सीखू किछु करू, 86. पत्नी, 87. चेतन चाचा, 88. पौरुष, 89. घोड़ मन- 1, 90. घोड़ मन- 2, 91. घोड़ मन-

3, 92. घोड़ मन- 4, 93. अलकक चान, 94. शिशवोनी, 95. फगुआ, 96. शील, 97. प्रिय, 98. अपनेपर, 99. डायरी, 100. गाछक रंग बदैल रहल छै, 101. मुँहक हँसी केहेन, 102. झोंक जुआनी झोंकए, 103. बैसले-बैसल नाचि, 104. गुमकीमे वौआए, 105. भूत बनि भुतियाएल, 106. सुखले मे सभ पिछैड़ रहल छै, 107. दीनक दिन केना, 108. कोढ़ पकैड़, 109. जाल समाज, 110. मीत यौ, देहक पानि, 111. आश प्रेम संग, 112. विषय दस, 113. धर्मक फूल, 114. किछु ने करै छी, 115. अपने पाछू, 116. उठी-बैसी, 117. गर-मुड़, 118. मनक बेथा, 119. रहल नै, 120. पकैड़ समय, 121. सतरंग ऐ, 122. दुनियाँक जेहने, 123. चढ़ि अन्हार, 124. एक विष, 125. पेटक ताप, 126. जेहेन मुँह, 127. धार संग नाह, 128. मन मशीन, 129. खट-मीठ, 130. झोंकमे, 131. पबिते पैग, 132. हेल-मेल जाधैर, 133. कौशल जखैन कोसल बनै छै, 134. उमकीमे उमैक, 135. जिनगीक कुंज, 136. सत-चित, 137. स्रष्टाक समग्र रचना, 138. प्रतिभा, 139. मर्म, 140. अधखरूआ, 141. समैयक बेरबादी, 142. पहिने तप तखनि ढलिहेँ, 143. खलीफा उमरक सिनेह, 144. जखने जागी तखने परात, 145. अस्तित्वक समाप्ति, 146. खजाना, 147. उग्रघारा, 148. बेवहारिक, 149. समर्पण, 150. उत्थान-पतन, 151. देवता, 152. पाप आ पुण्य, 153. परख, 154. आलसी, 155. प्रेम, 156. हैरियट स्टो, 157. बुझैक ढंग, 158. श्रमिकक इज्जत, 159. वंश, 160. तियाग, 161. सद्विचार, 162. साहस, 163. बरदास, 164. भूल, 165. धैर्य, 166. मनुखक मूल्य, 167. मदति नै चाही, 168. मेहनतिक दरद, 169. मैक्सिम गोर्की, 170. मूलधन, 171. कपटी मित, 172. भीख, 173. भगवान, 174. एकाग्रचित, 175. सीखैक जिज्ञासा, 176. अनुभव, 177. आसिरवादक विरोध, 178. धर्मक असल रूप, 179. सौन्दर्य, 180. स्तब्ध, 181. एकता, 182. विधवा बिआह, 183. देश सेवाक व्रत, 184. आत्मबल-1, 185. स्वाभिमान, 186. कलंक, 187. बुलकी, 188. भद्रपुरुष, 189. झूठ नै बाजब, 190. आर्दश माए, 191. नारी सम्मान, 192. अनुशासन, 193. सादा जिनगी, 194. विचारक उदय, 195. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत, 196. डर नै करी, 197. आसिरवाद उलैट गेल, 198. रत्न गमेवाक दुख, 199. निशाँ, 200. सामना, 201. शिष्टाचार, 202. ठक, 203. पत्नीक अधिकार, 204. शिनीची सिनेह, 205. सिखबैक उपय,

206. कर्तव्यपरायन सुगा, 207. तस्वीर, 208. मितक प्रयोजन, 209. स्वार्थपूर्ण विचार, 210. संगीक महत, 211. उपहास, 212. महादान, 213. भाग्यवाद, 214. सद्वृति, 215. आश्रम नहि सोभाव बदली, 216. पुरुषार्थ, 217. नैष्ठिक सुधन्वा, 218. सद्गृहस्त, 219. सद्भाव, 220. आलस्य वनाम पिशाच, 221. स्वर्ग आ नर्क, 222. यथार्थक बोध, 223. विद्वताक मद, 224. अनन्त, 225. हँसैत लहास, 226. अनगढ़ चेतना, 227. सत्य विद्या, 228. समता, 229. जेते चोट तेते सक्कत, 230. परिष्कार, 231. कथनी नै करनी, 232. शालीनता, 233. मजूरी, 234. जीवन यात्रा, 235. ज्योति, 236. पवनक विवेक, 237. आत्मबल-2, 238. खुदीराम बोस, 239. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो, 240. लौह पुरुष, 241. जंग लगल, 242. जीवकक परीछा, 243. तप, 244. उल्टा अर्थ, 245. जाति नहि पानि, 246. ऊँच-नीच, 247. पागलखाना, 248. केकरो फूल, 249. काज पसैर, 250. धार बीच, 251. फेरो हम, 252. रंगिते काजक, 253. चोरकट चालि, 254. डुमा-डुमी, 255. छाती चढ़ि, 256. ससुरामे जा कऽ धीया, 257. जिनगीक ताक, 258. गोर मुँह, 259. कतरा आम, 260. सुखल पोखरिक, 261. श्रोता कहि, 262. जड़ि जंजालक, 263. उगिते लाज, 264. ओन्हा चालि, 265. गिरैत घर, 266. अना गाहिंस, 267. सुखल पोखरिक, 268. लत्ती जेना, 269. पाटि, 270. गोहि बनि, 271. जेहेन जे, 272. चेत चेता, 273. अन्हर जाल, 274. डायरीक, 275. बरहबट्टू, 276. चोटी छुबए, 277. खेल-खेलाड़ी, 278. ककोड़बा, 279. सोर बनि, 280. सेज-सिंगार, 281. जएह लूरि, 282. जोति हर, 283. हर हलक, 284. कम्प्रोमाइज, 285. नै धाड़ैए, 286. झमेलिया बिआह, 287. बड़की बहिन, 288. रत्नाकर डकैत, 289. भादवक आठ अन्हार, 290. सधबा-विधबा, 291. स्वयंवर, 292. सतमाए, 293. कल्याणी, 294. समझौता, 295. तामक तमघैल, 296. बिरांगना, 297. दोहरी मारि, 298. केना जीब?, 299. नवान, 300. तिलासंक्रान्तिक लाइ, 301. भाइक सिनेह, 302. प्रेमी, 303. बपौती सम्पैत, 304. डंका, 305. संगी, 306. ठकहरबा, 307. अतहतह, 308. अर्द्धांगिनी, 309. ऑपरेशन, 310. धर्मनाथ, 311. सरोजनी, 312. सुभद्रा, 313. सोनमाकाका, 314. दोती बिआह, 315. पड़ाइन, 316. केतौ नै, 317. बिहरन, 318. मायराम, 319. गोहिक शिकार, 320. मातृभूमि, 321.

भबडाह, 322. परिवारक प्रतिष्ठा, 323. फॉगु, 324. लफ साग, 325. तिलकोरक तरुआ, 326. एकोटा ने, 327. धोतीक मान, 328. साझी, 329. सतभैंया पोखैर, 330. न्याय चाही, 331. पनियाहा दूध, 332. कर्ज, 333. परदेशी बेटी, 334. मान, 335. मनोरथ, 336. कियो ने, 337. सूदि भरना, 338. जन्मतिथि, 339. इमानदार घूसखोर, 340. पटियाबला, 341. सनेस, 342. उलबा चाउर, 343. बलजोर, 344. बेटी हम अपराधी छी, 345. बगबाइर, 346. मुइलो बिसेबैन, 347. सड़ल दारीम, 348. चुप्पा पाल, 349. परदेश जेतै, 350. ओज ओझरी, 351. पानि बीच, 352. बंसी धार, 353. जिनगी जखन, 354. राति-दिन, 355. तेहरौनी, 356. गेल उमरिया, 357. कर-करनाम, 358. मनुख कहाँ, 359. चान कौसिकीय, 360. घट-घट, 361. ओल ओड़ि, 362. निरजन वन, 363. हरबाह, 364. हर हलक, 365. सालक विदाइ, 366. मोनि मन, 367. सेड़ाइते, 368. आँखि मिचौनी, 369. अलकक चान, 370. समाज सजल, 371. सभ मिलि, 372. सोच सकार, 373. अबिते अगहन, 374. उपजल खेत, 375. धूल चरण, 376. उनटन, 377. जान विचार, 378. चालैन-सूप, 379. मरम देखि, 380. वेद-भेद, 381. भक-इजोतमे, 382. जेठुआ गरे, 383. निर्जन वन, 384. छगुन्तामे, 385. पड़ल छी, 386. सुआगत की लए, 387. सुआगत अपनेक, 388. वृद्ध केना, 389. समय केर, 390. भगवती गीत, 391. हाल-बेहाल, 392. शीला शील, 393. रंग सियाही, 394. दिन घटतै, 395. उठिते आगि, 396. छप्पर किए, 397. गामसँ किए, 398. बेढब रूप, 399. संग जिनगी, 400. सबहक जिनगी, 401. सुन मैया गे, 402. पकैड़ तान, 403. भोरे कनी जगा देब, 404. पकैड़ पग, 405. संच-मंच रहए कहाँ दइए, 406. ओस बनि, 407. बाढ़िमे सभ, 408. हेराएल-ढेराएल, 409. मीत यौ अहींकेँ कहै छी, 410. अजीब-अजीब, 411. अपने ताले, 412. पग-पग, 413. मीत यौ, 415. निरमोही बौआ, 416. अपना गतिये, 417. भजार यौ, 418. हे बहिनी, 419. हे बहिना, हे दीदी, 420. सुक्खक अतृप्त, 421. नढ़ड़ा हेल हेलै छी, 422. अहीं कहू, 423. चलू उचितपुर देश, 424. कानि कलैप, 425. बुधिये बाट, 426. जुग-जुग, 427. घात लगौने, 428. देहमे नमहर, 429. अपन बल, 430. जीवन धार, 431. लाजे मेटा गेल, 432. खढ़ पोस पानि, 433. परता माटि, 434. शिकारी, 435. जीवन, 436. जिनगीक बीच जिनगी, 437. दिन

रातिक खेल, 438. सतबेध, 439. किछु ने बुझै छी, 440. गुरुत्तर, 441. जिनगीक मोड़, 442. मरहन बाट, 443. कविता, 444. घाट-बाट, 445. चलैत पंखाक, 446. सुमति-कुमति, 447. हँसि हंस, 448. खचरमणि, 449. किसानक देश, 450. भारत, 451. जिनगीक संगीत, 452. सुगति, 453. संगीत, 454. ब्रह बाट, 455. रस्तेमे लसका गेलिऐ, 456. एक दस मंत्र छै, 457. वंचित धार, 458. पाइक मोल, 459. हे दुनियाँक केर भाग-विधाता, 460. कलेससँ कलैशते भैया, 461. चुनौती, 462. मानव गुण, 463. छुटि गेल, 464. मरल घाट, 465. हल्लुक काज, 466. बीघा भरि चास-बास, 467. पट्टा छीमी, 468. बदरीहन, 469. बालि वध, 470. अनेरुआ वन, 471. फँसरी, 472. विचलित मन, 473. गुड़ घाव, 474. एकटा बताह, 475. हुसि गेल, 476. अखड़ा जिनगी, 477. बिटगरहा, 478. बाल गीत, 479. गाछी भुताहि, 480. अंडीक छाहैर, 481. परदेशी, 482. अन्हराएल छी, 483. ओ दिन, 484. सती-वेश्या, 485. दूजा भाव, 486. जीबैले लड़ए पड़ै छै, 487. पगलखना, 488. बाढ़िक सनेस, 489. अगो-लोढ़ा, 490. हथियाक झटकी, 491. रहसा चौरी, 492. बेरोजगारी, 493. लीढ़ी पोखैर, 494. बकरी भेराड़ी, 495. महगी, 496. जरनबिछनी, 497. नव-फल, 498. पू-भर, 499. चौरीक, 500. धनकटनी, 501. किसान, 502. टुटैत जिनगी, 503. कविता, 504. बुड़िबकी, 505. गाछी भुताह, 506. वोनक आगि, 507. बीतल बर्खक विदाइ, 508. संगी, 509. बेथा, 510. धब्बा, 511. पितृपक्षक भोज, 512. ठनका, 513. झपासा, 514. शिवचरन, 515. चौरचनक छाँछी, 516. भरदुतिया, 517. फुसि, 518. चिक्कैन माटि, 519. झारू-बाढ़ैन, 520. मेवाक फल, 521. चपरासी भाय, 522. नोत, 523. लटुआ, 524. एकैसम, 525. सदीक देश, 526. मधुमाछी, 527. जुआनी, 528. तरंग, 529. ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं, 530. मइटुग्गर, 531. शम्भुदास, 532. फाँसी, 533. कचोट, 534. काँच सूत, 535. बुधनी दादी, 536. खिलतोड़, 537. मुँह-कान, 538. अनदिना, 539. अपन काज, 540. दूरी, 541. पुरनी भौजी, 542. छुटि गेल, 543. काल्हि दिन, 544. अप्पन हारि, 545. कनफुसकी, 546. मुँहक बात मुहेँमे, 547. कनीटा बात, 548. गति-गुद्दा, 549. बिसवास, 550. कचहरिया भाय, 551. गोहाइर, 552. शिवजीक डाक-बाक्, 553. सोग, 554. पनचैती, 555. कनमन, 556.

अजाति, 557. पटोर, 558. फुसियाह, 559. गति-मुक्ति, 560. चौकीदारी, 561. झगड़ाउ-झोटैला, 562. घबाह ट्यूशन, 563. दादी-माँ, 564. पटोटन, 565. मुसाइ पण्डित, 566. भरमे-सरम, 567. देखल दिन, 568. फज्झैत, 569. अकास दीप, 570. बुधि-बधिया, 571. पहाड़क बेथा, 572. उमकी, 573. बजन्ता-बुझन्ता, 574. चर्मरोग, 575. शंका, 576. ओसार, 577. छोटका काका, 578. सीमा-सरहद, 579. रमैत जोगी बोहैत पानि, 580. गंजन, 581. सजए, 582. घटक बाबा, 583. आने जकाँ, 584. दान-दछिना, 585. उड़हैड़, 586. मत्हानि, 587. मेकचो, 588. झुटका विदाइ, 589. मुँहक खतियान, 590. कोसलिया, 591. हूसि गेल, 592. पोखला कटहर, 593. सरही सौबजा, 594. तेरहो करम, 595. डुमैत जिनगी, 596. चोर-सिपाही, 597. दूधबला, 598. टाइपिस्ट, 599. समदाही, 600. बुढ़िया दादी, 601. एक धाप जमीन, 602. ओझरी, 603. मुसहैन, 604. केलवारी, 605. स्वरोजगार, 606. घूर, 607. कनियाँ-पुतरा, 608. वारंट, 609. गामक मुँह फेर देखब, 610. पेटगनाह, 611. जनक हाथे खेती, 612. मूसक घटक, 613. ग्लानि, 614. गरियबैक समय, 615. दोस्ती नै धाड़ैए, 616. कलंक, 617. भभटपन, 618. खाँटी तेल, 619. दोस्ती, 620. ओटघन पाबैन, 621. बौआ कक्काक ढौआ, 622. अठन्नी, 623. गुण, 624. गढ़ैनगर हाथ, 625. सासुरक गारि, 626. खिचड़ी मोछ, 627. पाइक मोल, 628. चोरूक्का झगड़ा, 629. अपसोच, 630. पतझाड़, 631. झीसीक मजा, 632. मति-गति, 633. रिजल्ट, 634. अपन सन मुँह, 635. सुमति, 636. फेर पुछबैन, 637. माघक घूर, 638. खर्च, 639. अखरा-दोखरा, 640. पेटगनाह, 641. बड़की माता, 642. धरती-अकास, 643. बकठाँइ, 644. चैन-बेचैन, 645. हथियाएल खुरपी, 646. अलपुरिया बरी, 647. नीक बोल, 648. सुआद, 649. गंगा नहेलौं, 650. भोँटक गहमी, 651. भँसैत नाह, 652. पान पराग, 653. सिरमा, 654. नौमीक हकार, 655. फोंक मकड़, 656. केते लग केते दूर, 657. अभिनव अनुभव, 658. खोंटकर्मा, 659. किछु ने, 660. झकास, 661. अप्पन-बीरान, 662. सजमनियाँ आम, 663. अर्जुन रोग, 664. गरदैन कट्टा बेटा, 665. नैहराक धाड़, 666. अवाक, 667. पोखैरक सैरात, 668. दनियाँ डाबा, 669. धरम काँट, 670. पल भरि, 671. किरदानी, 672. सगहा, 673. अकाल, 674. उझट बात, 675. कर्जखौक, 676. उनटन,

677. रेहना चाची, 678. बुधनी दादी, 679. अउतरित प्रश्न, 680. हारि, 681. सोनाक सुइत, 682. मरुभूमि, 683. असगरे, 684. पुरनी नानी, 685. कटा-कटी, 686. केते लग केते दूर, 687. गलती अपने भेल, 688. चोरक चोरबती, 689. घर तोड़ि देलिऐ, 690. सजल स्मृति, 691. सनेस, 692. सए कच्छे, 693. एक मुठी घास, 694. करिछौंह मुँह, 695. पुरस्कार, 696. गावीस मोइस, 697. मनकमना, 698. घरवास, 699. समधीन, 700. चापाकलक पाइप, 701. कलम हानि कऽ, 702. लतियाएल जिनगी, 703. गामक शकल-सूरत, 704. जितिया पाबैन, 705. सुखाएल सूरत, 706. भैयारी हक, 707. ठकुआएल भुसवा, 708. खुदियाएल, 709. खटहा आम, 710. ढकरपेँच, 711. असहाज, 712. समरथाइक भूत, 713. विदाइ, 714. खलओदार, 715. मनुखदेवा, 716. उमेद, 717. गलगर भैंस, 718. जाड़ फाटि गेल, 719. सुरता, 720. असुध मन, 721. धरमूदासक अखड़ाहा, 722. ठोररंगू, 723. लगबे ने कएल, 724. उकडू समय, 725. चास-बास दुनू गेल, 726. चौरचनक दही, 727. अपन मन अपन धन, 728. टुटली मरैया, 729. हकार, 730. दहेजुआ गाए, 731. मेटाइत जिनगी, 732. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!, 733. लेहाज, 734. विचार हेरा गेल, 735. ओ दिन, 736. उरीन, 737. नहरकन्हा, 738. बटखौक, 739. पसेनाक धरम, 740. जेठुआ गरदा, 741. हँसीएमे उड़ि गेलौं, 742. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक, 743. हमर बाइनिक विचार, 744. नोकरिहारा, 745. घसवाहि, 746. तेतर भाइक कविता, 747. छूआ, 748. दोसराइत, 749. लछनमान, 750. हमर कोन दोख, 751. मौसी, 752. नटकिया गति, 753. खाए चाहैए, 754. मधुमाछी, 755. दनगर घास, 756. सझिया खेती, 757. मुफतिया माल, 758. मथाहाथ, 759. पहपैट, 760. इजोरिया राति, 761. तीन जुगिया भाय, 762. अँगनेमे हेरा गेलौं, 763. डकरा हाल, 764. जेतए जे हौउ, 765. गठूलाक गारि, 766. कनी हमरो सुनू, 767. गामक बान्ह, 768. गुड़ा खुद्दीक रोटी, 769. सीरक गाछ, 770. हरदीक हरदा, 771. जाम, 772. गण्डा, 773. हाथी आ मूस, 774. मुसरी आ घोड़ा, 775. फलहार, 776. भोरक झगड़ा, 777. क्रियाशील, 778. आइ एम शॉरी, 779. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल, 780. मीनी भ्रष्टाचार, 781. गजपट खेती, 782. समुद्री विद्या, 783. राकशे रहि गेलौं, 784. निनिया देवीक आराधना, 785. बताहे बताह

बनौलक, 786. धोखा, 787. खसैत गाछ, 788. ठूठ गाछ, 789. वैष्णवी भगवती, 790. प्रीगर शत्रु, 791. एगच्छा आमक गाछ, 792. माघ नहाइले जाएब, 793. एक घोंट पानि, 794. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले, 795. माइक वचन, 796. पान, 797. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा, 798. शुभचिन्तक, 799. करिछौन लाली, 800. मोहरा, 801. अपन पुरखाक डीह, 802. जेना हाथी रही, 803. कठफल, 804. गामे उपैट गेल, 805. झूठे, 806. लाही, 807. परतीहा खढ़, 808. उजगी, 809. हाथक जिनगी, 810. गाछपर सँ खसला, 811. केतौ ने रहलौं, 812. अपने केलहा, 813. बत्तु, 814. कछमछी, 815. गैत-वीध, 816. दियरबा-भैंसुर, 817. एक दिन, 818. दुधियाएल बरखा, 819. गलफूलू, 820. बिटगरहा, 821. आब नइ आगि लगैए, 822. कटौज, 823. बाल बोध, 824. डभियाएल गाम, 825. एकबोलिया दादी, 826. मरियाएल मन, 827. त्राहि-कृष्ण, 828. कन्हा भँट्टा, 829. जिगेसा, 830. गुलेती दास, 831. भोलानाथ बाबा, 832. दुरकाल, 833. कलंक, 834. अड़िकट्टा चोर, 835. बगदल गाम, 836. बत्तीसोअना, 837. कचहरिया रोग, 838. दिन घटि गेल, 839. मुड़ियाएल घर, 840. गामक सुरता, 841. खतियाएल घर, 842. बात-कथा सुनौलक, 843. अनका बेर ओंघी, 844. देव उठान, 845. नमहर घरक चोरि, 846. भोरक सपना, 847. बालमण्डली, 848. धोखा केतए भेल, 849. माघक चाह, 850. भँसियाएल बाल-बोध, 851. माघक घूर, 852. पाही पट्टी, 853. बीरांगना, 854. स्मृति शेष, 855. मनकैँ फुसलबै छी, 856. चहकल विचार, 857. विदाइ-दैछना, 858. बीरांगना, 859. पकिया चेला, 860. कान फुटल कप, 861. वर्थ डे, 862. जानक मोल, 863. गामक कटान, 864. कर्ज, 865. बेटीक लिलसा, 866. अपन गारि अपन दुआरि, 867. बेटीक पैरुख, 868. बेटीक कुभेला, 869. अपन रोपल गाछी भुताहि, 870. बलधकेल कटौज, 871. जारैनक दुख मेटा गेल, 872. पढ़ल सुगा बौक, 873. हरवाहि, 874. क्रान्तियोग, 875. उचितवक्ता, 876. खेतक बँटवारा, 877. विघटन, 878. टुटल मनक जुटान, 879. बाबा बेलेश्वरनाथ, 880. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू, 881. मर्माहत, 882. गुणहीन, 883. समझौता, 884. जेकर चुन तेकर पुन, 885. त्रिकालदर्शी, 886. नमहर फेरा, 887. आशापर पानि पड़ल, 888. कोढ़िया सरधुआ, 889. बेटपन, 890. छातीक हार, 891.

उमेरक लेहाज, 892. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 893. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 894. पुरान साड़ी, 895. गाम बिसैर गेल, 896. ऐँठ साड़ी, 897. लहसन, 898. किछु ने फुरैए, महिरम, 899. बेर परहक भदवा, 900. सड़क-कातक खेत, 901. दोहरी हाक, 902. पाइक इज्जत, 903. सेहन्ता, 904. राक्षसक झड़, 905. बेरपर, 906. केकरा-ले केलौं, 907. स्वाभिमानी जिनगी, 908. बाबाक बाग-बगिया, 909. अब-तब, 910. अगिलह, 911. कुकुरपन, 912. हेराएल जिनगी, 913. आशापर पानि फेर गेल, 914. देखल दिन, 915. इज्जत उतैर गेल, 916. संकट, 917. एकतीस मार्च, 918. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी, 919. बापक चलैत, 920. बेटाक चलैत, 921. प्रवल इच्छा, 922. पंगु, 923. ठका गेलौं, 924. हारि-जीत, 925. पनचैती पनपना गेल, 926. कुघाटक मृत्यु, 927. एक तम्मा सिदहा, 928. कियो ने पुछैए, 929. केकरो कियो ने, 930. गपक पियाहुल लोक, 931. उदय-प्रलय, 932. हमरा नीक नहि लगैए, 933. भारीपन भार बनि गेल, 934. मानसरोवरक यात्रा, 935. करतब, 936. आमक गाछी, 937. अनचोकक अन्हार, 938. अपन बुधियारी अपने खेलक, 939. चटवाह, 940. भगैतिया, 941. अधमरू साँपक फुफकार, 942. यादास्त, 943. हमर मेला चोरि भऽ गेल, 944. गरदैन हलैल गेल, 945. दिवालीक दीप, 946. हारि केना मानब, 947. अप्पन गाम, 948. परिछन, 949. झूठ सपना, 950. जिनगीक अन्तिम फल, 951. चरणबाबूक टैक्सी, 952. पुस्तकालय, 953. विचारभेद, 954. एकरवा बानर, 955. फकीरबा स्थान, 956. रंगमे भंग, 957. खिलतोड़ भूमि, 958. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह, 959. मटरक अजोह दाना, 960. फुइसिक रग्गड़, 961. उखमज, 962. एकभग्गू बेटा, 963. अगुताइ भेल, 964. थैंक्यू पापा, 965. किसुनपुराक हाट, 966. धनखेतीक बैगन, 967. चितवनक शिकार, 968. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं, 969. धुआ साड़ी, 970. राजरोग, 971. संकल्प, 972. एकटा नमहर दुख मेटा गेल, 973. काजक मोल, 974. एतए बसव कठिन अछि, 975. स्वनिर्मित जिनगी, 976. कपटलालक मृत्यु, 977. गामक ढहल समाज, 978. लजगर लोक, 979. खरिहाँन उपैट गेल, 980. पगलपन, 981. छलाननक सराध, 982. छाती बज्जर केलौं, 983. नाँहकमे दोख, 984. सग्गा पिऔज, 985. गाछसँ नमहर फड़, 986. जिनगीमे जान आएल, 987.

जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै, 988. चौरस खेतक चौरस उपज, 989. सिकिया नेता, मजदूर दिवस, 990. मुँह खुजिते नाक कटि गेल, 991. जेकरे भर तेकरे डर, 992. ललियाएल चेहरा करियाएल मन, 993. पुरुखक भर, 994. भकमोड़मे पड़ि गेलौं, 995. अपन इमान मरि गेल, 996. गामक रूप बदैल देब, 997. कुभेला, 998. देखौंस, 999. समयसँ पहिने चेत किसान, 1000. काजक मेहपन, 1001. पनरह किलोक कदीमा, 1002. फेर नढ़रो बेल तर जेती, 1003. काजक धुनि, 1004. सोरहामे सुर्रा लगि गेल, 1005. अगराही, 1006. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा, 1007. भौक, 1008. मनतरक पावर, 1009. हाल-चाल, 1010. अधमरु साँपक डँस, 1011. के मानत?, 1012. दियादीक फेड़, 1013. वाह रे आदत, 1014. कटबी सुइद, 1015. तिलकौआ छत्ता, 1016. अपने जिनगी भार बनि गेल, 1017. कलेश, 1018. गामक आशा टुटि गेल, 1019. आब इज्जत नइ बँचत, 1020. अँगनाक बीरार, 1021. भेँट-घाँट, 1022. कोसा, 1023. दहेजक गाए, 1024. चलती, 1025. तीन बुड़िवान, 1026. एकाधिकारी जाति, 1027. अपन करखन्ना, 1028. लड़कपन, 1029. कुदृष्टि, 1030. हकार, 1031. दलखिच्चड़मे घी, 1032. दोहरी दहार, 1033. पसेनाक मोल, 1034. बुढ़ापा, 1035. पुरना घराड़ी, 1036. जगरनथिया भोज, 1037. कृषियोग, 1038. काजक रोप, 1039. खटसमाद, 1040. जीबठपन, 1041. गोटी लाल, 1042. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह, 1043. दहेज, 1044. जेहेन मति तेहेन गति, 1045. केते लग केते दूर, 1046. अपन कर्तव्य आकि उपकार, 1047. जिनगी भौर भेलह हेन, 1048. वसन्त पंचमी, 1049. चुटका सुतरल, 1050. हारल चेहरा जीतल रूप, 1051. अग्नि परीछा, 1052. आसीरवचन, 1053. दहिबरी, 1054. सघन बन, 1055. हुसैत लोक, 1056. हुसि गेलौं, 1057. झूठक झालि, 1058. दुष्टपन, 1059. रहै जोकर परिवार, 1060. परिपक्व निरलज, 1061. अप्पन काज अपने चिन्हू, 1062. लजाउ काज, 1063. कामधेनु, 1064. जिनगीक कुंज, 1065. सत-चित, 1066. पड़िते पएर पवन पोखैर, 1067. अहाँ किए रूसल छी, 1068. घट-घट घोंट, 1069. जहिना बारह दिन बजै छै, 1070. दुनियाँ घोड़ाएल छै निशाँमे, 1071. बहैल बहील बहिला कहै छै, 1072. हलचल जिनगी हलैस-कलैश, 1073. टकटक ताक, 1074.

भीख मांगि (नचारी) , 1075. बकरी खुट्टी, 1076. अमरा अँचार, 1077. घरे-घरे, 1078. बेटी किए, 1079. मनक भाव, 1080. सिरजन सिर, 1081. कलश पल्लव भरैत रहै छै, 1082. मारी-बेमारी, 1083. हिम-गिरि, 1084. भुवन भुचल, 1085. खुजिते आँखि, 1086. मुड़जन मनुहर, 1087. गोधुलि-बेल, 1088. दौड़ि-दौड़, 1089. चोट-चाट, 1090. चाइन चेन, 1091. दीनक दोख, 1092. सगर समनदर, 1093. चप-चप चपा गेलिऐ, 1094. संगे-संग, 1095. आभा मण्डल, 1096. संग जिनगी खेल होइत एलैए, 1097. नजैर कहाँ बदलल, 1098. देख टराटक पड़ल रहै छी, 1099. माइक माइपन, 1100. इच्छा- 01, 1101. इच्छा- 02, 1102. मन मथनी, 1103. केकरा कहब नवदिन सगुन?, 1104. अप्पन दिन कहिया औतै, 1105. बलकस चास, 1106. अपनेपर हँसै छी, 1107. केकरा कहब नव दिन सगुन, 1108. बन्ध-बन्धन, 1109. नँगरकट घोड़ा, 1110. गीत, 1111. फुलबतिया, 1112. करैलाक फूल, 1113. गिरहकट्टा, 1114. पैछला गणित, 1115. कॉमन सेन्स, 1116. चास-बास, 1117. ढहल गाम, 1118. सघन वन, 1119. मानब धारण धड़ैत एलैए, 1120. नजैर-नजैरमे तफरका भैया, 1121. अपने मन ठकैए, 1122. केकरो गारि सुगारि, 1123. साँझ-भोर, 1124. समाजक बान्ह छेक, 1125. दियादी, 1126. ओइ पोखरिक मानियेँ की?, 1127. नवका बास, 1128. जिनगीमे जे, 1129. हे बहिना केनाकऽ जेबै ओइ, 1130. घरिया, 1131. हे आशुतोष, 1132. मनक फूल, 1133. फूल मनक, 1134. बेकाल-काल, 1135. जेहेन जेकर, 1136. समय-साल, 1137. संग मान-समान, 1138. जेहने शक्तिक रंग रहै छै, 1139. खेल खेलौना, 1140. प्रेमी पिया, 1141. बिसैर गेल, 1142. आबो कनी विचारू, 1143. सुआगत अपनेक, 1144. वृद्ध केना, 1145. समय केर, 1146. भगवती गीत, 1147. आनक बोझ, 1148. अड़कन-मरकन, 1149. हाल-बेहाल, 1150. आजादीक उमंग, 1151. बुधिये भोतिया गेल, 1152. घर-घरा, 1153. जा बौआ, 1154. लत-लत लत्ती, 1155. पीड़ित रीति, 1156. अकार-सकार, 1157. टेनशन बीच पड़ल छी, 1158. आन्ही-अन्हर, 1159. सुफल काज, 1160. सुचिता, 1161. सीमावद्ध जीवन, 1162. कर्ताक रंग कर्मक संग, 1163. जिनगीक हिसाब, 1164. अपना जनैत, 1165. सुदृढ़ जिनगी, 1166. मुराम जगह, 1167. गामक सूरत बदैल

गेल, 1168. दोसर रस्ता नहि, 1169. विचारधाराक भथान, 1170. परिवार बिलैट गेल, 1171. अनचोकक इजोत, 1172. केलहा सभ पानिमे गेल, 1173. पएर तरक धरती डोलि गेल, 1174. जबुरिया कागज, 1175. बेटाक बिआह, 1176. जीवनमे जान आएल, 1177. पोसलाक फल, 1178. अन्तिम परीक्षा, 1179. गाम आब ओ गाम रहल!, 1180. जिनकर जीत तिनकर माला, 1181. नवका लोक, 1182. काजक उत्तर काज, 1183. घरक खर्च, 1184. समाजक भागे, 1185. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक, 1186. परिवारक विघटन, 1187. हारल विचार, 1188. मोड़पर, 1189. संकल्प, 1190. अन्तिम क्षण, 1191. परिवारे गजपटा गेल, 1192. समयक थपेड़मे, 1193. की सत्त की फुइस?, 1194. कुभाँज समयक भाँजमे, 1195. देखल गाम, 1196. अपना ले, 1197. तीन धक्का, 1198. अजीब खेल, 1199. नीक ठकान ठकेलौं, 1200. केकरो भरोस, 1201. बाड़ी भेल धनहर, 1202. कुण्ठा, 1203. सुदृढ़ जीवन, 1204. सागवानक बागवानी, 1205. बिनु खुट्टाक गाए, 1206. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 1207. घरैया मूस, 1208. टुटि कऽ खसि पड़लैन, 1209. अवतारवाद, 1210. संस्कार आ संस्कार गीत, 1211. वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष, 1212. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन गुवाहाटी, 1213. सगर राति दीप जरयक 100म कथागोष्ठीक मादे, 1214. वेब प्रोग्राम, 1215. महाकवि लालदास, 1216. भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा, 1217. मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा, 1218. उपन्यासमे ग्रामीण चित्रण, 1219. मनक बात हेरा गेल, 1220. नचैत मोन पड़ाइत गेल, 1221. मौसम बदैल गेल, 1222. दोहरा-दोहरा पुछबे करतै, 1223. भाव-अभाव कुभाव बनैत गेल, 1224. संग छोड़ि पड़ाइत गेल, 1225. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा, 1226. संचरण, 1227. जिनगीसँ प्रेम, 1228. परिवारे बगैद गेल, 1229. जिनगी पिछैड़ गेल, 1230. श्रमहीन, 1231. समुद्रलंघन, 1232. परिवारक भार, 1233. हीन-हीनाइत विवेक, 1234. चेहराक निखार, 1235. भरि मन काज, 1236. विचारे मरि गेल, 1237. मृत्युक भय मेटा गेल, 1238. घरक बात, 1239. अप्पन दलान, 1240. कंजूसपन, 1241. आएल आशा चलि गेल, 1242. अकारण, 1243. अछोप, 1244. अप्पन बेइमानी, 1245. उनटन, 1246. अर्द्धांगिनी, 1247. बहवाँइर, 1248. पाक

मास्टर, 1249. साइंस टीचर, 1250. इज्जत लऽ लेलक, 1251. निसगर पान, 1252. विरोध, 1253. जीवन दान, 1254. बाग-बगिया, 1255. विश्वास पात्र, 1256. विचारक टिटकारी, 1257. लत, 1258. जीवन खटाइमे पड़ि गेल, 1259. कर्ज, 1260. बहादुरी, 1261. हमरो खगता छै, 1242. सपना, 1263. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी, 1264. उवाणि, 1265. विचारक प्रबलता, 1266. अपन रचित रचना, 1267. थाहल संगी, 1268. आत्मबल, 1269. विश्वासहीन, 1270. बुलन्दी, 1271. अप्पन साती, 1272. खिच्चड़ि, 1273. भंगतराह कवि, 1274. भंगतराह कवि, 1275. कनियेँ-मनियेँ पूँजी, 1276. पुरुखढौह, 1277. सिमानक झगड़ा, 1278. जिनगी भार बनि गेल, 1279. परिवारक योग, 1280. मनुक्ख खौक, 1281. साहित्यकारक विवेक, 1282. भाषाक बेथा, 1283. बुझबे ने केलिऐ, 1284. जीवनक सम्बन्ध, 1285. गैंचाह लोक, 1286. जिनगीकेँ पटैक भगलौं, 1287. अन्तिम आशा, 1288. गजपट मारि, 1289. कन्हजोड़, 1290. अनहोनी, 1291. होनी, 1292. भवितव्य, 1293. ओसचट बीमारी, 1294. पुत्र परीक्षा, 1295. अप्पन मन बुझाएब, 1296. जड़ौर, 1297. अलोपित, 1298. कुमहरक बतिया, 1299. सिमानक आड़ि, 1300. नब बनक नब फल, 1301. सुमारक, 1302. अन्तिम भेँट, 1303. अनहरिया, 1304. निरन्तर, 1305. शॉर्टकट रास्ता, 1306. अपेछा टुटि गेल, 1307. सुनयना बेटी, 1308. आब नइ जीब, 1309. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल, 1310. धुरफन्ना लोक, 1311. घरदेखी, 1312. बासभूमि, 1313. इज्जतपर पड़ि गेल, 1314. अहीं जीतलौं, 1315. गामसँ गाए उपैट गेल, 1316. भारक बड़बड़िया, 1317. रूपैँ बदैल गेल, 1318. वंशक धर्म, 1319. उपराग, 1320. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ, 1321. खीरा लत्तीमे रोजगार, 1322. टकुआटान, 1323. पोस्टमार्टम, 1324. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल, 1325. सामंजस्य, 1326. महींसवारक गाम, 1327. दसअना छहअनाए, 1328. वाह रे हम, 1329. एक जूम तमाकुल, 1330. चपरासीक गाम- जारी...

Notes